खण्ड-383, अंक-7
सोमवार, 15 पौष, शक संवत् 1908
(5 जनवरी, 1988 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 383 में 7 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
1987

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
उपस्थित सदस्य	1
विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य, श्री योगेश्वर प्रसाद खड़ूड़ी, श्री भीखा लाल तथा श्री लक्ष्मी नारायण बन्सल के निधन पर शोकोद्गार	2–9
उत्तर प्रदेश विधान सभा सदस्यों (दल परिवर्तन के आधार पर निरर्हता) नियमावली, 1987 के अन्तर्गत सभी माननीय सदस्यों द्वारा सूचना दिए जाने का अनरोध	9
बुलन्दशहर के मूड़ चौराहे पर स्व० चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा लगाए जाने की अनुमति दिए जान की मांग	9–15
प्रदेश के बुनकरों की समस्या के सम्बन्ध में सदन का ध्यानाकर्षण ..	15–16
प्रदेश में सूखे की स्थिति पर चर्चा	16–60
स्व० चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा लगाए जाने के सम्बन्ध में लिए गए निर्णय की जानकारी की मांग विषयक व्यवस्था का प्रश्न	60–62
सदन को अनिश्चित काल के लिए स्थगित किए जाने का प्रस्ताव	62

(स्वीकृत)

विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मंगलवार, दिनांक 5 जनवरी, 1988

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में 11 बजे दिन में अध्यक्ष, श्री नियाज हसन की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे:—

अकबर अहमद (डम्पी), श्री	नैनीताल
अजी जुर्रहमान, श्री	बिजनौर
अमीर आलम खां, श्री	मुजफ्फरनगर
अवधेश प्रसाद, श्री	फैजाबाद
अशोक सेहरा, श्री	आगरा
उदयवीर सिंह, श्री	शाहजहांपुर
ओम प्रकाश रिछारिया, श्री	झांसी
कल्यान सिंह, श्री	अलीगढ़
काजी मोहिउद्दीन, श्री	सहारनपुर
गौरी शंकर भइया, श्री	बलिया
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री	गोरखपुर
दिवाकर विक्रम सिंह, श्री	बस्ती
दूधनाथ, श्री	जौनपुर
देवेन्द्र कुमार सिंह, श्री	ललितपुर
नरेन्द्र सिंह यादव, श्री	फर्रुखाबाद
नारायण हरि शर्मा श्री	अलीगढ़
निर्भय पाल शर्मा, श्री	सहारनपुर
पद्मा सेठ, श्रीमती	सीतापुर
प्रभु दयाल, प्रधान	मेरठ
प्रमीला बद्धवार मेहरा, श्रीमती	बदायूं
फरीद महफूज किदवई, श्री	बाराबंकी
फागू चौहान, श्री	आजमगढ़
फूल सिंह सौदाई, श्री	मुजफ्फरनगर
बलदेव सिंह कैप्टेन, श्री	अलीगढ़
बल्देव सिंह आर्य, श्री	उत्तरकाशी
भोला शंकर मौर्य, श्री	बदायूं
मंगल देव, श्री	गोण्डा
मनोहर लाल, श्री	उन्नाव
मलिक मोहम्मद कमाल यूसुफ, श्री	बस्ती
महावीर सिंह, श्री	सहारनपुर
माता प्रसाद पाण्डेय, श्री	बस्ती
मोहम्मद मसूद खां, श्री	आजमगढ़
रणजीत, श्री	देवरिया
राजपती देवी, श्रीमती	सुल्तानपुर
राजा मोहम्मद अमीर मोहम्मद खां, श्री	सीतापुर
राजेश कुमार खैरा, श्री	ललितपुर
राम नरेश यादव, श्री	मैनपुरी
राम पाल वर्मा, श्री	हरदोई
राम बदन एडवोकेट, श्री	आजमगढ़
लालता प्रसाद निषाद, चौधरी, श्री	गाजीपुर
वीरेन्द्र प्रताप शाही, श्री	गोरखपुर
शारदा देवी, श्रीमती	गोरखपुर
शिव बालक पासी, श्री	रायबरेली
संकठा प्रसाद शास्त्री, श्री	वाराणसी
संजय सिंह, डा0	सुल्तानपुर
सतीश अजमानी, श्री	खीरी
सुखपाल पाण्डे, श्री	बस्ती
सुरेन्द्र कपिल, श्री	सहारनपुर
सुरेन्द्र सिंह चौहान, श्री	अलीगढ़
स्वरूप कुमारी बख्शी, श्रीमती	लखनऊ
हर नारायण सिंह, श्री	रायबरेली
हरिश्चन्द्र, हरीश जी, श्री	बस्ती

विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य, श्री योगेश्वर प्रसाद खंडूड़ी, श्री भीखालाल तथा श्री लक्ष्मी नारायण बंसल के निधन पर शोकोद्‌गार

*मुख्य मंत्री (श्री वीर बहादुर सिंह)–

मान्यवर, बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि योगेश्वर प्रसाद खंडूड़ी, चमोली, श्री भीखालाल, उन्नाव तथा श्री लक्ष्मी नारायण बंसल, आगरा का निधन हो गया । इससे जो इस प्रदेश और देश को क्षति पहुंची है, उसको पूरा नहीं किया जा सकता है । श्री योगेश्वर प्रसाद खंडूड़ी का निधन 17-12-87 को हो गया । वह लगभग 75 वर्ष के थे । उनका जन्म चमोली के एक ग्राम में हुआ था । उन्होंने साहित्यरत्न की शिक्षा प्राप्त की थी । वे वर्ष 1962 में जिला चमोली से कांग्रेस के टिकट पर विजय प्राप्त कर उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे । वर्ष 1967 में पुनः कांग्रेस के टिकट पर कर्णप्रयाग, जिला चमोली से उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । श्री योगेश्वर प्रसाद खंडूड़ी मंडल कांग्रेस कमेटी एवं जिला कांग्रेस कमेटी, गढ़वाल के अध्यक्ष रहे और अनेक शिक्षा संस्थाओं से भी सम्बद्ध रहे । उनकी साहित्यिक अध्ययन में विशेष रुचि थी । मान्यवर, उनके निधन से उत्तराखण्ड ने एक कुशल राजनीतिज्ञ खो दिया । मान्यवर, मेरा अनुरोध है कि मेरी तथा मेरे दल की ओर से शोक संवेदना उनके शोक संतप्त परिवार को भेजने का कष्ट करें ।

श्री भीखालाल जी का निधन 1 जनवरी, 1988 को लम्बी बीमारी के उपरान्त लखनऊ के बलरामपुर अस्पताल में हो गया । वह लगभग 71 वर्ष के थे । श्री भीखालाल जी का जन्म दिनांक 2 अगस्त, 1916 को हुआ था । उन्होंने इन्टरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त की थी । सर्वप्रथम वर्ष 1957 में वह कम्युनिस्ट पार्टी के टिकट पर जिला उन्नाव से उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे । वर्ष 1962, 1967, 1974 एवं 1980 के निर्वाचनों में भी वह पुनः कम्युनिस्ट पार्टी से ही जिला उन्नाव से उ0 प्र0 विधान सभा के सदस्य निर्वाचित होते रहे । श्री भीखालाल जी ने कई वर्षों तक इस प्रदेश में उन्नाव में जनता के, किसानों के, मजदूरों के बीच काम किया । वर्ष 1956 में वह कम्युनिस्ट पार्टी में सम्मिलित हो गये । वह उत्तर प्रदेश खेत मजदूर सभा के प्रान्तीय अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश किसान सभा के प्रान्तीय उपाध्यक्ष, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सहायक मंत्री एवं प्रान्तीय मंत्री पदों पर अनेक वर्षों तक आसीन रहे । समाज के दलित एवं पीड़ित वर्ग के उत्थान के प्रति उनकी विशेष रुचि थी। अनेकों बार वह राजनीतिक बन्दी भी रहे । विधान सभा की कार्यमंत्रणा समिति, प्रतिनिहित विधायन समिति, प्राक्कलन समिति एवं लोक लेखा समिति के वह सदस्य भी रहे । उन्होंने कई देशों की यात्राएं भी कीं । उन्होंने भूमि सुधार पर एक पुस्तक भी लिखी । उनकी अध्ययन में भी रुचि थी । श्री भीखालाल के निधन से उन्नाव ही नहीं वरन् उत्तर प्रदेश ने एक अत्यंत अनुभवी एवं कुशल राजनीतिज्ञ खो दिया है । मान्यवर, श्री भीखालाल जी ने हम लोगों के साथ कई वर्ष साथ-साथ काम किया है । हमने देखा है कि जिस तरह से वे विधान सभा के सदस्य रहे, इस सदन में जो जनता की समस्याएं थीं, उनके अध्ययन में जिस तरह से रुचि रखते थे, गरीबों, मजदूरों, किसानों के बीच में काम करके जिस तरह से उनकी दिक्कतों, परेशानियों के लिये लड़ते रहे और आज उनके निधन से जो क्षति पहुंची है, उससे काफी बड़ा नुकसान पहुंचा है ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरी, मेरे दल की और इस सदन की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार को संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें ।

मान्यवर, श्री लक्ष्मी नारायण बंसल का निधन दिनांक 14-12-87 को हृदय गति रूक जाने से हो गया । वह लगभग 79 वर्ष के थे । श्री लक्ष्मी नारायण बंसल का जन्म 1908 में हुआ था । उन्होंने बी0 काम0 एवं एल-एल0 बी0 तक की शिक्षा प्राप्त की थी । वर्ष 1957 के सामान्य निर्वाचन में जिला आगरा से कांग्रेस के टिकट पर निर्वाचित होकर उन्होंने सर्वप्रथम इस सम्मानित सदन में पदार्पण किया था और 1962 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे । उन्होंने विभिन्न आंदोलनों में भाग लिया और जेल यात्रायें भी कीं । वह फौजदारी के अच्छे अधिवक्ता थे । वर्ष 1948 में उन्हें जिला सरकारी वकील के पद पर नियुक्त किया गया । आगरा विश्वविद्यालय सीनेट एवं आगरा कालेज की प्रबन्ध समिति के लगभग 20 वर्षों तक सदस्य रहे । वह आगरा सिविल बार के अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश बार काउन्सिल के सदस्य भी रहे । श्री लक्ष्मी नारायण बंसल जी के निधन से जनपद आगरा ने एक कुशल राजनीतिज्ञ खो दिया । मान्यवर, मेरा आप्से अनुरोध है कि उनके शोक संतप्त परिवार तक मेरी मेरे दल की और सदन की ओर से संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें ।

*नेता विरोधी दल (श्री सत्यपाल सिंह)–

मान्यवर, माननीय नेता सदन ने जो हमारे भूतपूर्व सदस्य श्री योगेश्वर प्रसाद खंडूड़ी के निधन की सूचना इस सदन को दी है, इससे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । श्री खंडूड़ी साहब सन् 1962 में निर्वाचन क्षेत्र बद्रीनाथ, जिला चमोली से चुनकर के इस सदन के सदस्य हुए थे । 1967में पुनः कर्णप्रयाग, जिला चमोली से निर्वाचित हुए थे । यद्यपि मुझे उनके साथ इस सदन में बैठने का अवसर नहीं मिला, लेकिन उनका जीवन परिचय देखने के बाद यह पता चलता है कि वे अनेक शिक्षा संस्थाओं से भी सम्बद्ध रहे, जिला चमोली में रहकर पूरे उत्तराखण्ड की जनता की सेवा करते रहे । वह गम्भीर व्यक्तित्व के थे । उनके निधन से सारे उत्तराखण्ड को धक्का लगा है । मान्यवर, मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरी, मेरे दल की संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

मान्यवर, श्री लक्ष्मी नारायण बंसल जी का निधन 14-12-87 को हृदय गति रूक जाने से हो गया । वर्ष 1957 के सामान्य निर्वाचन में जिला आगरा से निर्वाचित होकर इस प्रदेश की विधान सभा में आये और 1962 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे । माननीय बंसल साहब आगरा के निवासी थे । आगरा में वकालत करते थे । वर्ष 1948 में जिला सरकारी वकील के रूप में नियुक्त होकर उन्होंने अपने जनपद की सेवा की । मान्यवर, वह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी रहे। मान्यवर, बंसल साहब कुशल एडवोकेट के रूप में जाने जाते थे। बंसल साहब की एक अच्छे वकील के रूप में ख्याति, आगरा जिले में ही नहीं बल्कि कई और जिलों में भी विद्यमान थी । वे उस समय वकालत भी करते थे और जनता के कामों के सम्बन्ध में उदासीन भी नहीं रहते थे। सदैव जनता की कठिनाईयों के संबंध में विधान सभा के बाहर भी रहकर वह लड़ते रहे । मान्यवर, उनके निधन से आगरा मंडल से एक बहुत ही योग्य और मिलन सार व्यक्ति चला गया है और एक अपूर्णनीय क्षति हुई है । मेरा आपसे अनुरोध है कि

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मेरी मेरे दल की संवेदनाओं के यह शब्द उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

मान्यवर, जहां तक माननीय भीखालाल जी के निधन का प्रश्न है, पहली जनवरी को बलरामपुर अस्पताल में उनका निधन हो गया । सर्वप्रथम वर्ष 1957 में वह जिला उन्नाव से उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुये थे । वर्ष 1962, 1967, 1974 एवं 1980 के निर्वाचनों में भी वह जिला उन्नाव से इस विधान सभा के लिये निर्वाचित होते रहे । मान्यवर, मुझे भी उनके साथ इस सदन में बैठने का अवसर मिला था । माननीय भीखालाल जी गम्भीर व्यक्तित्व के थे । कम्युनिस्ट पार्टी के विभिन्न गरिमामय पदों पर रहकर उन्होंने अपने जनपद की सेवा की । उत्तर प्रदेश के हरिजनों, दलितों और शोषितों के प्रकरणों को हमेशा वह बड़ी गंभीरता के साथ इस सदन में उठाते रहे, उनके व्यक्तित्व में एक विशेषता थी,

मान्यवर, जब भी वह सदन में बोलने के लिये खड़े होते थे तो पत्रकार दीर्घा से लेकर माननीय सदन तथा सरकार के लोग उस समय बड़े गम्भीर होकर उनको सुनते थे, क्योंकि वह यह जानते थे कि माननीय भीखालाल जी कोई बड़ी गम्भीर बात उठाने जा रहे हैं और उनकी बात बहुत सारगर्भित हुआ करती थी । मान्यवर, उनका निधन बलरामपुर अस्पताल में हुआ । निधन से पहले वह ओ0 सी0 आर0 के एक कमरे में रहते थे, उसमें सी0 पी0 आई0 के एक सदस्य ने वह कमरा अपने कब्जे में ले रखा था, उसी कमरे में वह रहते थे । मेरी ऐसे वक्ता से कुछ कहने की हिम्मत न हो सकी, कि मैं उनसे वह कमरा खाली करने को कहता, कि यह कमरा मेरे नाम आवंटित हो चुका है । लेकिन उन्हें जब मालूम हुआ तो उन्होंने कहा कि आप फौरन चले आइये, मैं तुरन्त यह कमरा खाली करने को तैयार हूं। उनके इस व्यवहार को देख कर मेरी हिम्मत नहीं हुयी, और मैंने उस कमरे को लेना स्वीकार नहीं किया । श्री भीखालाल जी बड़े प्रखर और मुखर वक्ता थे । मैं उनसे इस कमरे को लेकर किसी प्रकार का विवाद नहीं करना चाहता था, यह उनका बड़प्पन था, अन्यथा लोग इतनी सी बात को लेकर 20 तरह की पेचीदगियां पैदा करने की कोशिश करते हैं । माननीय भीखालाल जी इस सदन में एक कुशल पार्लियामेन्टेरियन के रूप में बहुत चर्चित रहे। वह पूरे उत्तर प्रदेश के अंदर एक सुविख्यात राजनीतिज्ञ के रूप में लोकप्रिय थे । मान्यवर, उन्नाव जनपद में उनके क्षेत्र में अब ऐसा जान पड़ता है, जैसे वह क्षेत्र बिल्कुल नेतृत्व-विहीन हो गया है । ऐसे महान व्यक्ति जो केवल सी0 पी0 आई0 में ही नहीं रहे, बल्कि उन्होंने किसानों के हितों के लिये, उनकी तरक्की के लिये अपने जीवन-काल में एक पुस्तक भी लिखी थी और उस पुस्तक में उन्होंने भूमि सुधार के सुझाव भी दिये थे, जिस पर सरकार ने समय-समय पर अमल भी किया । ऐसे महान व्यक्ति भीखालाल जी के निधन के अवसर पर मैं अपने और अपने दल की तरफ से शोक संतप्त परिवार को अपनी संवेदनायें प्रस्तुत करते हुये अनुरोध करता हूं कि उनके परिवार तक मेरी संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री मुलायम सिंह यादव–

मान्यवर, इस सदन में आज तीन भूतपूर्व सदस्यों के निधन की सूचना दी गई ।। वह ऐसे महान भूतपूर्व सदस्य हैं, जिनका सामाजिक और राजनैतिक जीवन से गहरा सम्बन्ध रहा है और वह लोग जीवन भर समाज और देश की सेवा में लगे रहे। उनमें सर्व-प्रथम है श्री योगेश्वर प्रसाद जी, जो जिला चमोली के थे । मैं उनके प्रति संवेदनायें

व्यक्त करना चाहता हूं । मेरा उनसे कोई निजी सम्पर्क नहीं रहा है, लेकिन फिर भी जैसा मुझे बताया गया और मैंने सुना है, उसको देखते हुए उन्होंने जीवन पर्यन्त शिक्षा से संबंधित तथा सामाजिक और प्रदेश की सेवा की है। उनके प्रति, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारी संवेदनायें उनके परिवार और उनके शुभचिन्तकों तक पहुंचाने की कृपा करें ।

स्वर्गीय भीखालाल जी इस सदन के वरिष्ठ सदस्य ही नहीं थे, बल्कि उत्तर प्रदेश के महान नेताओं में से थे । वह केवल कम्युनिस्ट पार्टी के नेता होने के नाते केवल कम्युनिस्ट पार्टी में ही प्रचलित नहीं थे, बल्कि इस प्रदेश के गरीबों, हरिजनों और शोषित पीड़ित जितने भी लोग थे, उनके वह नेता थे । मान्यवर, जब-जब गरीबों की लड़ाई का मौका आया, तब-तब भीखालाल जी ने अपनी जान को जोखिम में डालकर उन्होंने देश सेवा की । मान्यवर, जैसी परिस्थितियां उन्नाव की रही है, उन परिस्थितियों के विपरीत ही उन्होंने काम किया है और मुझे उनके साथ बैठने का और मशविरा करने का मौका मिला है । उनकी रुचि संयम, धीरज से कार्य करना और नि:स्वार्थ सेवा करने में रहती थी। आज उनके निधन से हम सब लोग दुखी हैं, आज हम सब लोग दुखी है इस वरिष्ठ नेता के हमारे बीच से उठ जाने से । मान्यवर, हमारा आपसे अनुरोध है कि हमारे ये संवेदना के भाव उनके संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

मान्यवर, स्वर्गीय श्री लक्ष्मी नारायण बंसल आगरा के निवासी थे । उनसे मेरा सम्पर्क नहीं था, लेकिन जिस दिन उनका निधन हुआ था, उस दिन मैं आगरा में ही था । मैं शोक संवेदना व्यक्त करने के लिए उनके घर तक गया था । वह महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी थे और आगरा जनपद के सम्मानित नागरिकों में से थे और नेताओं में से थे, इसलिए नहीं कि वह विधायक रह चुके हैं । उनकी प्रतिष्ठा और सम्मान सारे आगरा के लोग महसूस करते थे । ऐसे नेता के उठ जाने से हमारे सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में गिरावट आ रही है । आज हमारे बीच से ऐसे पुराने लोग उठते चले जा रहे हैं। ऐसे लोगों के चले जाने से हमें वेदना होती है । अतएव मान्यवर, आपसे प्रार्थना है कि मेरे और मेरे दल की ओर से इन संवेदना के भावों को उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री मैनेजर सिंह–

माननीय अध्यक्ष जी, हमारे सदन के 3 माननीय भूतपूर्व सदस्यों के निधन के संबंध में जो भावना माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल और नेता लोकदल (ब) ने प्रस्तुत किये हैं, उससे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, ये तीनों सदस्य अपने-अपने स्थान पर विशेष कोटि के रहे थे । श्री योगेश्वर प्रसाद खंडूड़ी बहुत ही सरल व सादगी की प्रतिमूर्ति थे । उनके निधन से न केवल पहाड़ी क्षेत्र ही बल्कि हमारा राजनैतिक व सामाजिक जीवन शून्य हो गया है बल्कि उत्तर प्रदेश ने अपना एक सच्चा सेवक खो दिया है । हमारे स्वर्गीय श्री लक्ष्मी नारायण बंसल जी आगरा के एक कुशल अधिवक्ता थे और एक गम्भीर व विद्वान सदस्य थे । कई शिक्षण संस्थाओं और सामाजिक संगठनों से उनका संबंध रहा है । केवल आगरा में ही नहीं अपितु आस-पड़ोस के क्षेत्रों में भी उनके सेवा के कार्य थे । उनके निधन से हम सब लोगों को दुख होना स्वाभाविक है । स्वर्गीय श्री भीखा लाल जी इस

सदन में बहुत अर्से तक सदस्य रहे । उनके साथ मिलकर काम करने का सुअवसर काफी दिनों तक मिला । स्वर्गीय श्री भीखा लाल जी गम्भीर, सत्य दृढ़ निश्चय के नेता थे और यदि यह कहा जाय कि वह गरीबों के मसीहा थे तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । काश, उनके जुझारू व्यक्तित्व और गरीबों के लिए रात दिन तक काम करने वाले व्यक्तित्व से हम प्रेरणा लेते । बिना वेल पर आये और बिना नारेबाजी किए वह हमेशा तर्क के साथ अपनी बात को यहां पर मजबूती के साथ कहते थे और गरीबों के सवालों को मजबूती से उठाते थे । उनके निधन से हमारा प्रदेश शून्य हो गया है और गरीबों का एक मसीहा चला गया है । ये तीनों विशिष्ट सदस्य आज हमारे बीच से चले गए हैं । उनकी याद हमको सताती रहेगी । इसलिए मान्यवर, हम आपसे निवेदन करना चाहते हैं कि हमारा और हमारे दल की ये संवेदना के भाव उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त—

माननीय अध्यक्ष जी, अभी माननीय स्वर्गीय श्री भीखा लाल जी, योगेश्वर प्रसाद जी तथा माननीय बंसल जी के सम्बन्ध में जो शोकोद्गार माननीय नेता, सदन, नेता, विरोधी दल, मा0 मुलायम सिंह जी, माननीय मैनेजर सिंह जी द्वारा व्यक्त किये गये हैं, मैं स्वयं को उनसे सम्बद्ध करता हूं ।

माननीय भीखा लाल जी से वैचारिक मतभेद अपनी जगह पर हों, लेकिन उनके न रहने से एक कुशल, अनुभवी और समाज के निर्बल वर्ग की अगुवाई करने वाला नेता हमारे बीच से चला गया है। उनके न रहने से एक रिक्तता पैदा हुई है। वह कम्युनिस्ट आन्दोलन के प्रमुख स्तम्भ थे। वह पांच बार विधान सभा के सदस्य चुने गये, इसी से उनकी लोकप्रियता प्रगट होती है। वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे तथा उन्होंने विदेश यात्रायें भी की थीं। उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखी थीं। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे प्रार्थना करूंगा कि मेरी और मेरे दल की भावनायें उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

बंसल जी 57 से 62 तक इस आदरणीय सदन के सदस्य रहे। राजनीति में ही प्रमुख हस्ती के रूप में न रहकर उन्होंने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर समाज की सेवा की। आजादी की लड़ाई में उन्होंने अनेक बार जेल यात्रा की। शिक्षा के क्षेत्र में जीवन भर उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय और आगरा कालेज की प्रबन्ध समिति के साथ जुड़े रह-रह कर सेवा की । वह एक कुशल वकील थे और बार एसोसियेशन के अध्यक्ष भी रहे ।

श्री खंडूड़ी जी पर्वतीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे। उनका सौम्य स्वभाव, आदर्शवादी जीवन और समाज सेवा में उनका जो योगदान रहा है, वह सदैव याद किया जायगा। उनके व्यवहार और त्यागपूर्ण जीवन से सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी।

मैं इन तीनों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करूंगा कि हमारी संवेदना के स्वर उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री रामचन्द्र बख्श सिंह–

मान्यवर, श्री योगेश्वर प्रसाद जी, श्री भीखा लाल जी तथा श्री बंसल जी ने निधन पर जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

इन लोगों के निधन से मुझे और मेरे दल के लोगों को हार्दिक दुख है। ये सभी लोग इस प्रदेश के विशिष्ट व्यक्तियों में से थे। श्री भीखा लाल जी हमारे दल के भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रदेश के वरिष्ठतम नेताओं में से थे ; उनका स्वभाव अत्यन्त सरल था। हम लोगों को उनके साथ सदन के अंदर भी और बाहर भी वर्षों तक काम करने का अवसर मिला। उनका जीवन सादा जीवन था उनके अन्तिम संस्कार में जब मैं उनके गांव गया तो मैंने देखा कि गांव में उनका कोई मकान नहीं था। अभी एक कमरा उन्होंने बनवाया था जो कि बन भी नहीं पाया था। यह प्रतीक है कि किस ईमानदारी के साथ उन्होंने अपना राजनीतिक जीवन निभाया । उनका जीवन इस प्रदेश की मेहनत कश जनता को समर्पित जीवन था। सदन के अंदर और बाहर वह इन लोगों की समस्याओं के लिये निरंतर संघर्ष करते रहे। उनके निधन से प्रदेश की मेहनतकश जनता के आन्दोलन को अपूर्णनीय क्षति हुई है। इन सभी के निधन से दुख है और आपसे अनुरोध है कि इनके शोक संतप्त परिवारों तक हमारा संवेदना संदेश भिजवाने की कृपा करें ।

*श्री कौशिक रमाशंकर—

मान्यवर, श्री योगेश्वर प्रसाद जी, श्री भीखा लाल जी तथा श्री बंसल जी के निधन पर जो भावनायें और संवेदनायें माननीय नेता सदन, नेता, विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने व्यक्त की हैं, मैं उनसे अपने को तथा अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि उनके शोक सन्तप्त परिवार तक हमारी संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, ये तीनों जन हमारे प्रदेश के वरिष्ठ राजनीतिक और सामाजिक नेताओं में से थे । योगेश्वर प्रसाद खंडूड़ी जी उत्तराखड के बहुत ही सम्मानित नेताओं में से थे । स्वर्गीय भीखा लाल जी के चले जाने से हमारे प्रदेश के शोषित और पीड़ितों को बहुत क्षति हुई है, वे इन सबके मसीहा थे । भीखा लाल जी के चले जाने से उनका मसीहा चला गया है । मान्यवर, भीखा लाल जी का जीवन बहुत ही सादगी भरा, फक्कड़ों जैसा उनका जीवन था । वे सदैव शोषित और पीड़ितों की सेवा करते रहे । उनके चले जाने से उत्तर प्रदेश को बड़ी हानि हुई है । स्वर्गीय बंसल जी के चले जाने से विशेष कर शिक्षा जगत को बहुत हानि हुई है ।

मैं फिर इन तीनों व्यक्तियों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि इन तीनों व्यक्तियों के शोक संतप्त परिवारों तक हमारी व हमारे दल की भावनाओं को पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री राज किशोर सिंह–

मान्यवर, इस सदन के भू0 पू0 सदस्य, श्री योगेश्वर प्रसाद खंडूड़ी, श्री भीखा लाल तथा श्री लक्ष्मी नारायण बंसल के निधन के संबंध में नेता सदन, नेता विरोधी दल, मुलायम सिंह यादव, मैनेजर सिंह जी, तथा कौशिक रमाशंकर व रामचन्द्र बख्श सिंह ने

*वक्ता ने भाषण का पुनवीक्षण नहीं किया ।

जो भावनायें व्यक्त की हैं मैं उससे अपने को और अपनी पार्टी को सम्बद्ध करता हूं ।

मान्यवर, इन लोगों के निधन से हमारे प्रदेश में राजनीतिक शून्यता उत्पन्न हो गयी है । इन लोगों के निधन से हमें और हमारी पार्टी को हार्दिक दुःख पहुंचा है । ये लोग अपने-अपने क्षेत्रों में लोकप्रिय थे और उस क्षेत्र की जनता से इन सबका गहरा संबंध था ।

मान्यवर, भीखा लाल जी से हमारा करीब-करीब 15 वर्षों का साथ रहा । हमें एक साथ रहकर और एक पार्टी में काम करने का मौका मिला । हम उन्हें बहुत करीब से जानते थे । पार्टी के विभाजन के पहले हम एक दूसरे के बहुत करीब थे । मान्यवर, भीखा लाल जी एक गरीब परिवार से संबंध रखते थे, वे हरिजन परिवार में पैदा हुए थे और तहसीलदार के पद पर रहते हुए भी उन्हें अपने पद का का बहुत ज्यादा घमण्ड नहीं था । उन्होंने जब देखा कि देश में, प्रदेश में शोषित व पीड़ित जनता बहुत दुखी है, उनके ऊपर अत्याचार हो रहा है तो उनसे रहा नहीं गया और तहसीलदार का पद छोड़कर वे कम्यूनिस्ट नेताओं के करीब आ गये । और उस पार्टी के साथ मिल कर उन्होंने शोषित और पीड़ित जनता की सेवा की और उनकी रहनुमा बने रहे, वे सतत उनकी सेवा करते रहते थे । वह ऐसे व्यक्ति थे जिनमें अहंकार नाम की चीज नहीं थी । उनमें शालीनता कूट-कूट कर भरी हुई थी । उनके निधन से जो रिक्तता हुई है, उसकी पूर्ति होना जल्दी सम्भव नहीं है । उत्तर प्रदेश में कम्यूनिस्ट आन्दोलन, जनवादी आन्दोलन को उनके चले जाने से बहुत क्षति पहुंची है जिसको कि बयान करना सम्भव नहीं है । उनके निधन से सचमुच हम लोग बहुत दुखी हैं । इन्हीं शब्दों के साथ मैं उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि मेरे व मेरे दल की भावनायें आप उनके शोक संतप्त परिवारों तक भिजवाने की कृपा करें और इन्हीं शब्दों के साथ मैं फिर तीनों दिवंगत आत्माओं को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

*श्री फजलुल बारी–

माननीय अध्यक्ष जी, तीन भूतपूर्व सदस्य, श्री योगेश्वर प्रसाद खंडूड़ी, श्री भीखा लाल तथा श्री लक्ष्मी नारायण बंसल के निधन के संबंध में जो भावनायें मा0 नेता सदन, मा0 नेता विरोधी दल, तथा अन्य नेताओं ने व्यक्त की हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करते हुए मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि माननीय भीखा लाल के इन्तकाल से इस प्रदेश की 80 फीसदी जनता को सख्त तकलीफ और धक्का पहुंचा है । भीखा लाल जी का इन्तकाल ही नहीं, बल्कि सरमायेदारों के खिलाफ लड़ने वाला एक सिपाही नहीं रहा। ऐसे समय में ऐसे ही सिपाही की जरूरत थी, लेकिन अफसोस है कि जुझारू व्यक्ति उठते जा रहे हैं । खेतों की मेड़ों पर उनकी कमी सदैव महसूस की जायेगी । जो सर्दी और गर्मी में खून और पसीना एक कर रहे हैं, उनका मसीहा नहीं रहा । इन अलफाजों के साथ मैं चाहता हूं कि हमारी भावना उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय योगेश्वर प्रसाद खंडूड़ी, माननीय भीखा लाल और माननीय लक्ष्मी नारायण बंसल हमारे बीच में नहीं रहे । माननीय खंडूड़ी जी का निधन 17-12-1987 को हुआ था । वह 75 वर्ष के थे । वह 1962, व 1967 में कांग्रेस के टिकट पर जिला चमोली से विधायक रहे । भीखा लाल जी बड़े सुलझे हुये सदस्यों में से थे । जब कोई भी मुद्दा सदन में उठाते थे, तो बड़े अच्छे ढंग से उठाते थे और उनको सुनना पड़ता था । एक

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

जनवरी, 1988 को उनका निधन हो गया । वह 71 वर्ष के थे । वह 1957, 1962, 1967, 1974 और 1980 में कम्यूनिस्ट पार्टी के टिकट पर उन्नाव जिले से सदस्य निर्वाचित हुये थे । श्री लक्ष्मी नारायण बंसल जी का निधन 14-12-1987 को हो गया । वह 79 वर्ष के थे । वह 1957 में और 1962 में कांग्रेस के टिकट पर सदस्य निर्वाचित हुये थे । वह फौजदारी के वकीलों में बहुत चोटी के वकीलों में से थ । जो विचार आपने व्यक्त किया है, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं और आपकी सम्वेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचा दी जायेंगी । अब दो मिनट मौन खड़े होकर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करें ।

(सभी सदस्य अपनी-अपनी जगह पर दो मिनट के लिये मौन खड़े हुए।)

उत्तर प्रदेश विधान सभा सदस्यों (दल परिवर्तन के आधार पर निरर्हता) नियमावली, 1987 के अन्तर्गत सभी माननीय सदस्यों द्वारा सूचना दिये जाने का अनुरोध

श्री अध्यक्ष–

मुझे कुछ घोषणा करनी है । उत्तर प्रदेश विधान सभा सदस्यों (दल परिवर्तन के आधार पर निरर्हता) नियमावली, 1987, जिसे एन्टी डिफेक्शन नियमावली भी कहते हैं, के तहत सभी सदस्यों से और दलों के नेताओं से कतिपय सूचनायें मांगी गयी थीं, अभी तक केवल 208 सदस्यों ने सूचनायें दी हैं और जिन माननीय सदस्यों ने अभी तक उपरोक्त सूचनायें नहीं दी हैं, वह कृपया 31-1-1988 तक मांगी गयी सूचनायें विधान सभा सचिवालय को अवश्य उपलब्ध करा दें ।

(व्यवधान)

बुलन्दशहर के मूड़ चौराहे पर स्व0 चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा लगाये जाने की अनुमति दिये जाने की मांग

*श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त–

मान्यवर, कल जिस समय आदरणीय सदन में संयोगवश आप नहीं थे, अधिष्ठाता पद पर माननीय कौशल जी विराजमान थे, तो एक बड़ा गम्भीर मामला उठा था और मामला चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा को लगाने के सम्बन्ध में था । मामला बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन मान्यवर, आज सूखे पर चर्चा लगी हुई है। यह सत्र सूखे की चर्चा के लिये बुलाया गया है । मैं समझता हूं कि वह बहुत ही महत्वपूर्ण है । चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा लगाने के सम्बन्ध में शासन का फैसला हो जाना चाहिये । मेरा सुझाव है कि नेता सदन बैठे हैं, संसदीय कार्य मंत्री बैठे हैं, आप स्वयं अध्यक्ष पीठ पर विराजमान हैं, सभी लोग आपस में परामर्श करके भोजनावकाश के उपरान्त उस मामले में अपना निर्णय घोषित करें । इस समय तत्काल सूखे पर चर्चा प्रारम्भ कर दी जाय । क्योंकि सूखे पर अभी केवल एक दिन ही चर्चा हुई है । क्षेत्र की समस्यायें माननीय सदस्यों को रखनी है । वे प्रदेश की समस्याओं के बारे में अपने-अपने सुझाव देना चाहते हैं । इसलिये मेरी प्रार्थना है कि तत्काल सूखे पर चर्चा प्रारम्भ कर दी जाय ।

(श्री किरनपाल सिंह के खड़े होकर कुछ कहने पर)

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय किरन पाल सिंह जी, राजेन्द्र गुप्त जी बोल रहे हैं । इस बीच आपका कुछ बोलना मुनासिब नहीं है।

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त–

मान्यवर, सूखे पर तत्काल चर्चा प्रारम्भ करवा दी जाय । बहुत से सदस्य अपने सुझाव देना चाहते हैं । क्योंकि सूखे पर पूरी तरह से राहत देने में यह सरकार विफल रही है और हम उन विफलताओं को उजागर करना चाहते हैं । चौधरी चरण सिंह जी का मामला भी बहुत अहम है लेकिन भोजनावकाश के उपरान्त आप उसके बारे में बैठकर निश्चय कर लें . . . .

*श्री शतरुद्र प्रकाश–

मान्यवर, नियम 56 में जब कोई सूचना दी जाती है तो उसके बारे में आपकी तरफ से यह व्यवस्था दी जाती है कि फलां स्वीकृत हुई और फलां अस्वीकृत हुई या उसके लिये आप सरकार से वक्तव्य दिला देते हैं । कल यहां पर जब नियम 56 में माननीय किरन पाल सिंह जी और हम लोगों ने एक प्रश्न उठाया था कि जनपद बुलन्द-शहर में भूड़ चौराहे पर चौधरी चरण सिंह की मूर्ति लगाई जाय । उस चौराहे को किसान चौराहा का नाम भी दिया गया है । उसके लिये वहां पर एक नामपट भी लगा दिया गया था किन्तु कुछ लोगों ने उसे उखाड़ दिया है । उस पर विवाद होने के बाद भी अभी तक कोई फैसला नहीं हुआ है । वह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न था और कार्य-स्थगन का प्रश्न था । मान्यवर, जब वह प्रश्न उठाया गया था तो उस पर हमें व्यवस्था मिलनी चाहिए । किन्तु ऐसा लग रहा है कि सरकार जानबूझकर उनकी मूर्ति वहां पर नहीं लगाना चाहती है। वहां पर नाम पट भी लगा हुआ है। उसे उखाड़कर फेंक दिया गया है । मान्यवर, हम जानते हैं कि चौधरी चरण सिंह देश के प्रधान मंत्री भी रहे हैं और इस प्रदेश के मुख्य मंत्री भी रहे हैं . . . (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

यह बात तो कल आ चुकी है । आपकी क्या व्यवस्था है ?

श्री शतरुद्र प्रकाश–

मान्यवर, आपकी पीठ से निर्देश हुये थे . . . (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

कृपया बैठ जाय । मैं खड़ा हूं । यह तय हुआ था कि आज सूखे पर चर्चा होगी । लिहाजा सूखे पर चर्चा प्रारम्भ की जाती है इस विषय पर हम लोग बैठकर निर्णय लेंगे . . (व्यवधान) । सूखे पर चर्चा जारी रहेगी । मेरे कक्ष में हम लोग बैठकर नेता सदन, नेता विरोधी दल और कुछ लोग बैठकर इस पर फैसला करेंगे और इस पर कुछ न कुछ हल निकल आयेगा । . . . . . (व्यवधान)

(श्री सत्य पालसिंह) नेता विरोधी दल–

मान्यवर, आपने सूखे की चर्चा के विषय में कहा । मैं समझता हूं कि इस समय उत्तर प्रदेश के करोड़ों किसान सूखे से प्रभावित हैं । हम सब लोग चाहते हैं कि सूखे पर चर्चा हो . . . .

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री अध्यक्ष–

इसमें क्या हर्ज है कि सूखे पर चर्चा जारी रहे और उस विषय पर हम लोग बैठकर कोई चीज तय कर लें ।

श्री सत्यपाल सिंह—

हमारा कहना है कि किसानों के मसीहा चौधरी चरणसिंह जिसको सत्ता पक्ष के राजस्व मंत्री ने भी स्वीकार किया है । स्वर्गीय इंदिरा गांधी का एक महान व्यक्तित्व रहा है, उसी प्रकार चौधरी चरण सिंह यहां पर किसानों के मसीहा रहे हैं। जिस प्रकार से उनका अपमान किया गया है, इस सरकार के प्रशासनिक अधिकारियों/पुलिस और पी0 ए0 सी0 द्वारा जो उनका अपमान किया गया है, उससे ज्यादा शर्मनाक और कोई बात नहीं हो सकती है । जब तक इस पर निर्णय नहीं हो जाता है तब तक हम किसानों के हित की बात नहीं कर सकते हैं । मैं यह बात साफ तौर पर कहना चाहता हूं । . . . . (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता विरोधी दल, बैठ जांय ।

श्री सन्यपाल सिंह—

आप इस पर पहले निर्णय कर लें।

श्री अध्यक्ष–

यह नहीं होगा । सूखे पर चर्चा शुरू हो । श्री शैलेन्द्र कुमार बोल रहे थे, वह बोलें ।

(व्यवधान)

श्री सत्यपाल सिंह–

मान्यवर, मैं खड़ा हूं (व्यवधान) यह नहीं हो पायेगा पहले इसे तय कर लें ।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता सदन खड़े हैं उन्हें सुनें ।

मुख्य मंत्री (श्री वीर बहादुर सिंह)–

मान्यवर, दोनों पक्ष के माननीय सदस्यों के अनुरोध पर आज के दिन के लिये सूखे पर चर्चा रखी गयी । सभी लोगों ने यह मांग की थी कि सूखे पर चर्चा करना बड़ा आवश्यक है । सूखे पर चर्चा के लिये पिछले कई दिन रखे गये थे लेकिन चर्चा नहीं हो पाई । आज का पूरा दिन उसके लिये है अगर आज का दिन भी किसी और काम में लगा दिया तो इतने महत्वपूर्ण विषय पर, जिस पर बहस होना है, तो यह समझा जायगा कि बहस नही करना चाहते हैं।

श्री सत्यपाल सिंह–

मान्यवर, चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा का जो मामला है यह 31 ता0 को भी रखा गया था, उससे पहले 30 ता0 को नियम 56 में माननीय किरन पाल सिंह जी ने रखा था (व्यवधान) आज माननीय मुख्य मंत्री हम पर आरोप लगा रहे हैं कि सूखे पर चर्चा नहीं कराना चाहते हैं । यह उचित नहीं है कि इस तरह से चौधरी साहब का अपमान कर रहे हैं अगर इनके नेता श्रीमती इंदिरा गांधी का अपमान किया होता तो क्या यह उसे सहन करते ? सूखे पर चर्चा हम चाहते हैं कि हो (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता विरोधी दल सूखे पर चर्चा शुरू होने दें (व्यवधान) इसमें आपको आपत्ति नहीं होनी चाहिये, सूखे पर चर्चा होती रहे। उस विषय को हम बैठकर तय कर लें (व्यवधान) आप यह नहीं चाहते हैं कि सूखे पर चर्चा बिल्कुल न हो। आपसे अनुरोध कर रहा हूं कि सूखे पर चर्चा शुरू होने दीजिये, हम आपस में बैठ कर उस मसले को हल करने की कोशिश करें। अब आप चाहते हैं कि सूखे पर चर्चा न हो (व्यवधान) आप खुद इसके लिये उस दिन कह रहे थे कि सूखे पर चर्चा हो। (व्यवधान)

श्री शतरुद्र प्रकाश–

मेरा व्यवस्था का प्रश्न है ।

श्री अध्यक्ष–

नहीं, अब सूखे पर चर्चा होगी, श्री ईश्वर शरण विद्यार्थी शुरू करें ।

श्री ईश्वर शरण विद्यार्थी–

मान्यवर, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे सूखे की चर्चा पर बोलने का अवसर प्रदान किया। मैं साथ ही माननीय मुख्य मंत्री जी का भी आभारी हूं (व्यवधान) जहां पुरे प्रदेश में इतना बड़ा सूखा पड़ा हुआ है इस अवसर पर उन्होंने सूखे पर चर्चा करने के लिए अवसर दिया और उसके लिए आज का दिन और प्रदान किया । (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

शांत रहें, मैंने विद्यार्थी जी को सूखे पर चर्चा के लिये बुलाया है ।

(घोर व्यवधान)

श्री ईश्वर शरण विद्यार्थी–

माननीय राजेन्द्र कुमार गुप्ता जी ने जो सुझाव रखा है, वह उचित है । सूखे की चर्चा पर भाग लेने का अवसर मिलना चाहिये ।

(व्यवधान)

श्री किरनपाल सिंह–

मान्यवर, यह नहीं होगा । पहले तय करें । (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

मैं एक घंटे के लिए सदन को स्थगित करता हूं ।

(इस समय 11 बजकर 42 मिनट पर श्री अध्यक्ष ने सदन की कार्यवाही एक घंटे के लिए स्थगित कर दी ।

तदुपरांत सदन की कार्यवाही 12 बजकर 42 मिनट पर श्री अध्यक्ष के सभापतित्व में पुनः आरम्भ हुई।)

श्री सत्यपाल सिंह–

माननीय अध्यक्ष जी, हमारे सदन के सभी सदस्यगण, जो इस समय प्रदेश में भयंकर सूखा व्याप्त है, उस पर चर्चा होनी चाहिए। हम नहीं चाहते हैं कि इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा न हो और माननीय सदस्य सूखे पर चर्चा से वंचित हो जांय । लेकिन वहीं पर यह भी कहना चाहता हूं कि सरकार हठवादिता का परिचय न देकर, माननीय चौधरी चरण सिंह, जो किसानों के नेता माने गये, धरती के पुत्र माने गये, देश के प्रधान मंत्री रहे और आठ बार इस विधान सभा में चुनकर आये, जिनका सबसे ज्यादा कार्यकाल रहा

है, इसके पहले पं0 जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री इस देश के प्रधान मंत्री रहे, इन्दिरा गांधी प्रधान मंत्री रहीं और सभी की स्टेच्यू लगायी गयीं और हम विपक्ष के लोगों द्वारा कहीं कोई एतराज नहीं किया गया, मान्यवर, संजय गांधी के नाम पर पी0 जी0 आई0 इंस्टीट्यूट खोला गया और एतराज नहीं किया, जगह-जगह मूर्तियां लगायी गयीं, एतराज नहीं किया तो जो चौधरी चरण सिंह देश के महान नेता रहे, उनको सम्मान हिन्दुस्तान देता है, उनकी मूर्ति लगाने पर सरकार जिद का रवैया अख्तियार न करे और जनता की भावना को देखते हुए देहात की जनता उनके प्रति प्यार रखती है, वह क्षेत्र देहात में और जो मूर्ति उनकी लगाई गयी उसकी अनुमति वहां के अधिकारियों ने दी थी, इसलिए सरकार इसको स्वीकार कर ले, जिससे सूखे पर चर्चा सदन में प्रारम्भ हो जिसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त–

मान्यवर, मैंने जब सदन प्रारम्भ हुआ था उस समय भी निवेदन किया था कि श्री चौधरी चरण सिंह जी हमारे राष्ट्र के राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख नेताओं में हैं, उनकी प्रतिमा लगाने के मामले में कोई विवाद खड़ा हो तो इससे दुर्भाग्य की दूसरी बात नहीं होगी। सड़क पर कहीं प्रतिमा लगी दिखाई देती है, यदि किसी एक दल ने निजी प्रयासों से प्रतिमा वहां लगाई जिसकी जिले के अधिकारी ने अनुमति दे दी थी, फिर इन्दिरा गांधी की उसी स्थान पर प्रतिमा लगाई गयी, तो यह महान पुरुषों के प्रति विवाद शोभा नहीं देता। इसलिये सरकार को किसी हठवादी रवैय्ये को अख्तियार नही करना चाहिए और अनुमति दे देनी चाहिए कि चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा वहीं लगा दी जाये और यदि कोई होड़ लगी हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। इन्दिरा गांधी की प्रतिमा लगा दें लेकिन चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा न लगे और लोगों द्वारा अभद्र व्यवहार किया जाये तो इसकी भर्त्सना जितनी की जाये, वह कम नहीं है।

मान्यवर, इन शब्दों के साथ मैं पुनः नेता विरोधी दल ने जो कहा है, उससे सहमति व्यक्त करते हुए सरकार से अनुरोध करूंगा कि चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा लगाने की अनुमति दे देनी चाहिए और सूखे पर चर्चा प्रारम्भ करायें। मान्यवर, 4 बजे से पहले, भोजनावकाश के बाद यहां सदन में घोषणा होनी चाहिए कि श्री चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा उसी स्थान पर जो निर्धारित किया गया है वहां लगे, और राष्ट्रीय सम्मान के साथ लगे फिर मेरी शासन से प्रार्थना है कि प्रतिमा लगाई जाए और उनकी प्रतिमा लगाने की घोषणा आज ही शासन यहां पर करें और उसके बाद सदन में सूखे पर चर्चा हो, जिससे फिर सूखा की चर्चा में कोई बाधा न उत्पन्न हो।

*श्री रामशरण दास–

मान्यवर, यह विवाद चलना ही नहीं चाहिए था। चौधरी साहब के नाम पर भी कोई एतराज करे, इस सदन में और खास तौर से मैं सत्ता पक्ष के लोगों की तरफ इशारा करके कह रहा हूं, यह बहुत ही अच्छी बात नहीं है, बड़ी दुखद बात यह है। इन्दिरा गांधी जी की तमाम मूर्तियां पूरे देश में जगह-जगह लगी हुई हैं। मुझे कोई एतराज नहीं है आप और लगा दें। मेरे गांव में आप लगा दें मुझे कोई एतराज नहीं है। लेकिन चौधरी साहब की यह पहली ही मूर्ति लगने जा रही थी, उसमें भी विवाद खड़ा कर दिया। तो वहां पर चौधरी साहब की मूर्ति लगाई जाए और उस मूड़ चौराहे, जो कुछ

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

अजीब नाम है, का नाम बदल कर उनकी याद में "किसान-चौकी" रख दिया जाय और उसमें चौधरी साहब की मूर्ति की स्थापना हो। जैसा अभी सरदार सिंह जी कह रहे थे, हमारे चौधरी चरण सिंह लखनऊ में बहुत रहे हैं। सन् 37 में यहां पहली बार जीतकर आए हैं और तब से सन् 77 तक वह बराबर लखनऊ में रहे हैं, इसलिए लखनऊ में जो माल एवन्यू है, उसका नाम चौधरी चरण सिंह मार्ग कर दिया जाए । साथ ही जिस मकान में अपने आखिरी दौर में चौधरी साहब रहे हैं, उसको उनका स्मारक घोषित किया जाए और उसमें उनके बारे में कोई शोध कार्य किया जाए, जिसमें लड़के शोध करें अपने पी0 एच-डी0 आदि के लिए । अगर इसमें किसी का कोई धन खर्च हो रहा हो तो हम लोग कान्ट्रीब्यूट करेंगे । तो उनके उस बिल्डिंग का नाम और मोहल्ले का नाम चौधरी चरण सिंह के नाम से घोषित कर दिया जाए।

श्री मैनेजर सिंह–

माननीय अध्यक्ष जी, इस सदन का सम्पूर्ण विपक्ष चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा लगाने का पक्षधर है। हम सब अनुरोध करते हैं कि शासन उनकी प्रतिमा बुलन्दशहर के उस चौराहे पर लगा दें । हमारी सबकी भावनाएं समान हैं। मैं अपने कांग्रेस के मित्रों से कहना चाहता हूं कि इन लोगों को तो अवश्य लगाना चाहिए, इनको अपने नेताओं से मार्ग-दर्शन लेना चाहिए था चौधरी चरण सिंह जी के स्वर्गवास के बाद "किसान घाट" दिल्ली में कायम हुआ, क्योंकि इनके नेतागण उनके ऋण से उऋण होना चाहते थे । दिल्ली में तो लगा ही दिया है । बुलन्दशहर और लखनऊ में भी मूर्ति लगाइये, तभी आप उनके ऋण से उऋण होंगे । क्योंकि चौधरी चरण सिंह ने ही आप लोगों को पुनर्जन्म कराया था ।

*श्री कौशिक रमाशंकर–

मान्यवर, चौधरी चरण सिंह जी की मूर्ति बुलन्दशहर में लगाने के सम्बन्ध में यह बहुत ही दुखद प्रकरण उठा, जो नहीं उठना चाहिए था। मान्यवर, चौधरी चरण सिंह जी की मूर्ति लगे, यह हमारे प्रदेश का कौन ऐसा राजनीति करने वाला व्यक्ति होगा या सामाजिक कार्यकर्ता होगा जो इसको नापसन्द करे । पता नहीं कैसे चन्द कांग्रेस के लोगों के कारण यह विवाद बुलन्दशहर में उठ गया, जिसके कारण किरनपाल सिंह जैसे साथी को आन्दोलन करना पड़ा और जेल भी जाना पड़ा । मैं सरकार से अनुरोध करूंगा कि चौधरी चरण सिंह प्रदेश के ही नहीं, देश के नेता थे, गरीबों और किसानों के नेता थे और स्वतन्त्रता संग्राम की लड़ाई में उनका अद्भुत योगदान रहा है। जहां तक मेरठ, मुजफ्फरनगर, बुलन्दशहर, सहारनपुर और अलीगढ़ आदि जिलों का सम्बन्ध है, उनसे उनका बड़ा ही रागात्मक सम्बन्ध रहा है। इसलिए उनकी मूर्ति के लिए जो स्थान प्रस्तावित किया गया है, मैं इस सरकार की सद्भावनाओं को जगाते हुए अनुरोध करूंगा कि इस सुझाव को स्वीकार करते हुए आप इस बात का ऐलान कर दें और जैसा माननीय संसदीय कार्य मंत्री ने कहा है चार बजे इस बात की घोषणा हो जाए कि मूर्ति वहां लगेगी और सरकार उससे सहमत है ।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री अम्मार रिजवी)–

माननीय अध्यक्ष महोदय, जहां तक स्वर्गीय चरण सिंह जी के व्यक्तित्व और महानता का प्रश्न है, मैं समझता हूं कि इसमें किसी को भी इन्कार नहीं है। हम सब इसमें

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

एक ही तरह से सोचते हैं। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि ऐसी स्थिति पैदा हुई। मैंने सबेरे भी निवेदन किया था कि सब लोग एक साथ बैठकर बात कर लें और इसका हल निकाल लें। मैं इस बात से पूर्ण रूप से सहमत हूं कि 3-4 बजे के बीच बैठक कर ली जाए और इस मसले का हल निकाल लिया जाए।

श्री अध्यक्ष–

अब सूखे पर चर्चा शुरू करते हैं।

प्रदेश के बुनकरों की समस्या के संबंध में सदन का ध्यानाकर्षण

*श्री फजलुल बारी–

मान्यवर, सूखे का मसला बहुत अहम है इस पर तो चर्चा होनी ही है। मान्यवर, एक और बहुत बड़ा मसला है जो इस प्रदेश के 50 हजार बुनकरों से मुतल्लिक है। 50 हजार बुनकर दस्तकारी का कार्य करते हैं, जैसा कि आप जानते हैं कि दस्तकारी की चीजें बाहर के देशों में भी काफी लोकप्रिय रही हैं, लेकिन आज इस सरकार की निष्क्रियता के कारण बुनकर रोटी-रोटी के लिए मोहताज हो रहे हैं। सूत के दाम इस वर्ष दोगुने से ज्यादा बढ़े हैं। (शोरगुल)

मान्यवर, यह लोग इस मसले पर इसलिए नहीं बोलने देना चाहते हैं कि कताई मिल जो सरकार के नियंत्रण में है, वहां ऐसे अफसर बैठाल दिये गये हैं जो खुद कमाते हैं और डीलर्स भी कमाते हैं जो इनसे मिले हैं (शोर) तो सूखे पर चर्चा हो लेकिन बुनकरों का पेट भी भरना चाहिए। आठ दिन का मान्यवर, हाउस गुजर गया, लेकिन कोई सरकार की तरफ से घोषणा नहीं हुई कोई सरकार की तरफ से ऐलान नहीं हुआ।

श्री अध्यक्ष–

आप बैठें।

श्री फजलुल बारी–

आप बात नहीं सुनेंगे तो सरकार को निर्देश कैसे देंगे।

श्री अध्यक्ष–

आप कृपया बैठने की कृपा करें।

श्री फजलुल बारी–

मान्यवर, मैं नियमों के तहत बोल रहा हूं।

श्री अध्यक्ष–

आप अपनी बात कह चुके हैं सदन आपकी भावनाओं से अवगत हो गया है।

श्री फजलुल बारी–

मान्यवर, आप सुन तो लें मैं क्या कहना चाहता हूं और उसका समाधान क्या होगा ?

श्री अध्यक्ष–

आप कृपा करके बैठ जाएं।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री अम्मार रिजवी)—

मान्यवर, जहां तक इस समस्या का प्रश्न है मैं बारी साहब की भावनाओं से पूरी तरह से सहमत हूं और पूरा प्रयास उत्तर प्रदेश सरकार कर रही है कि बुनकरों की समस्या का समाधान हो और सूत और रेशम सस्ते दाम पर मिल सके । मान्यवर, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य को बताना चाहूंगा कि परसों एक मीटिंग मुख्य मंत्री के कक्ष में इसी सम्बन्ध में हुई थी वह मीटिंग रात के दो बजे तक चली । पूरे प्रदेश के नेतागण इस मीटिंग में आए थे। मैं बारी साहब को अवगत करना चाहता हूं कि राज्य मंत्री निसार साहब इस मामले को देख रहे हैं इस संबंध में बारी साहब को बुलाकर इनसे भी बात कर ली जाएगी । जो यह कहना चाहेंगे यह कह देंगे ।

श्री फजलुल बारी–

मान्यवर, आप तारीख बता दें किस तारीख को बुलायेंगे ।

श्री अम्मार रिजवी–

सदन के बाद आज आ जाएं ।

मान्यवर कल रवीन्द्र नाथ तिवारी जी के प्रश्न पर आपने आदेश दिया था कि अवध विश्वविद्यालय की रिपोर्ट रख दी जाए, तो मान्यवर, आज एजेन्डे में यह विषय नहीं आया है, लेकिन यह सदन में भेज दी गई है आपकी आज्ञा का पालन हो गया है।

नेता, विरोधी दल (श्री सत्यपाल सिंह)–

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से केवल एक बात कहना चाहता हूं । मैं संसदीय कार्य मंत्री जी की बात से सहमत हूं उन्होंने कहा है कि मा0 फजलुल बारी से बात की जायगी । मेरा निवेदन है कि विरोध पक्ष को बुलाया जाय, माननीय नेतागण भी उसमें हिस्सा लें क्योंकि बुनकरों के साथ सारे प्रदेश में अन्याय हो रहा है ।

प्रदेश में सूखे की स्थिति पर चर्चा

(श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त का नाम पुकारे जाने पर ।)

श्री राम शरण दास–

मान्यवर, एक व्यवस्था का प्रश्न है । मेरा प्रश्न यह है कि उस दिन माता प्रसाद पाण्डेय के बोलने के बाद बहस स्थगित हुयी थी और उधर से आपने विद्यार्थी जी के नाम को पुकारा था । चर्चा उधर से शुरू होगी फिर इधर का नम्बर आयेगा । चर्चा को बिगाड़िये मत ।

श्री मुलायम सिंह यादव–

मान्यवर, आपने तय कर लिया है कि हम खड़े होंगे तो नहीं पुकारेंगे ।

श्री अध्यक्ष–

नहीं ऐसा नहीं है ।

श्री मुलायम सिंह यादव–

मैं तीन दिन से खड़ा हो रहा हूं । आप मेरे संयम और धीरज का [x x x] उठाने की कोशिश कर रहे हैं यह मेरा आरोप है ।

श्री अध्यक्ष–

नहीं ऐसी बात नहीं है ।

नोट–[x x x] यह अंश श्री अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया ।

*श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त—

मान्यवर, प्रदेश में इस शताब्दी का एक भयंकरतम सूखा पड़ा जो दैवी प्रकोप था लेकिन मान्यवर, सबसे चिंताजनक बात यह है कि सरकार की ओर से इस सूखे का सामना करने के लिये जिस तरह से प्रभावशाली कदम उठाये जाने चाहिये थे वैसे नहीं उठाये गये और यह सरकार निकम्मी साबित हुयी है । घोषणायें तो बहुत होती रहीं रेडियो पर टेलीविजन पर और अखबारों के माध्यम से कि सरकार बहुत कुछ कर रही है लेकिन जो आंकड़े हैं वह और स्थिति को बताते हैं कि सरकार ने सूखा राहत के बारे में कुछ नहीं किया है। यहां पर सप्लीमेंटरी बजट आया था उस पर चर्चा नहीं हो सकी लेकिन मैंने गौर के साथ देखा कि सूखे के बारे में धन आबंटित किया गया होगा और सूखे के नाम पर विशेष योजनायें चालू की गयीं होंगी लेकिन मुझे देखकर आश्चर्य हुआ कि पूरे बजट में सूखे के नाम पर एक लाइन है जिसमें यह है कि सूखे का सामना करने के लिये श्री राजीव गांधी की कांस्टटीटूयेंसी में 200 नलकूप विशेष रूप से लगाये जायेंगे। मैं जानना चाहता हूं कि क्या दूसरे लोक सभा निर्वाचन क्षेत्रों में सूखा नहीं पड़ा है। बहुत सी जगहों पर सूखा पड़ा है लेकिन सरकार उधर ध्यान न देकर एक स्थान विशेष पर पैसा खर्च करने की कोशिश कर रही है। सरकार को जो धन मिला वह एक क्षेत्र विशेष को ध्यान में रखते (इस समय 12 बजकर 58 मिनट पर अधिष्ठाता कुंवर रेवती रमण सिंह पीठासीन हुए) हुये, चुनाव को ध्यान में रखते हुये, पार्टी के निहित स्वार्थों को ध्यान में रखते हुये, चुनाव कोष इकट्ठा करने की नीयत से उस धन का अपव्यय किया गया है।

मान्धवर, मैं राजस्व मंत्री जी से इस बात का स्पष्टीकरण मांगना चाहता हूं कि केन्द्र सरकार से 1 अरब, 41 करोड़ 53 लाख रुपया मिला लेकिन सरकार ने उस पैसे का कोई सम्यक उपयोग नहीं किया। आंकड़े कहते हैं कि केन्द्र सरकार से जो धन मिला उसमें से केवल 13 परसेंट, 17 करोड़ 71 लाख रुपया खर्च किया गया है। यह इस बात का द्योतक है कि सरकार ने पैसे का उपयोग नहीं किया। कृषि विभाग जो सबसे महत्वपूर्ण विभाग है उसको सब्सिडी के रूप में 20 करोड़ रुपये दिये गये लेकिन आंकड़े कहते हैं कि केवल 5 प्रतिशत, 1 करोड़ 2 लाख रुपया खर्च हुआ है । इसी तरह से शहरी क्षेत्रों में पेयजल के लिये 4 करोड़ 84 लाख रुपये की व्यवस्था की गयी थी लेकिन उसका केवल 5 प्रतिशत , 23 लाख रुपया ही खर्च हुआ है । यह सारी चीजें सरकार के निकम्मेपन की परिचायक हैं। केन्द्र सरकार से अन्य राज्यों के मुकाबले पैसा कम मिला लेकिन जितना मिला उसका भी उपयोग नहीं किया जा सका है। ग्रामीण पेयजल के बारे में अम्मार साहब ने आंकड़े दिया कि 24 दिसम्बर तक 10 हजार, 15 गांवों में 32 हजार 5 सौ हैंडपम्प लगाये गये हैं । यह आंकड़े बताते हैं कि केन्द्रीय सरकार से जो धन मिला है, उसका 13 प्रतिशत उपयोग हुआ है। मैं एक बार चुनौती देकर कहता हूं, मैं सीतापुर से निर्वाचित होकर आया हूं और अम्मार साहब का भी संबंध सीतापुर से है। अभी आप पता लगा लें कि चयनित स्थान जल निगम के पास है। अधिशासी अभियंता की ओर से उत्तर दिया जाता है कि हमारे पास एक नया

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

पैसा भी नहीं है। मेरे आरोप की सत्यता प्रमाणित हो जायगी, अभी जब अम्मार साहब उत्तर देंगे। अभी आने से पहले मैं पता लगा कर आया था कि एक नया पैसा सीतापुर के लिए नहीं दिया गया है। ग्राम्य विकास रोजगार योजना के अन्तर्गत पौष्टिक आहार पर 3 करोड़ 40 लाख रु0 आपने आबंटित करने की घोषणा की है, लेकिन सरकार के आंकड़े के आधार पर एक नया पैसा भी नहीं खर्च किया गया है। जो राज्य सरकार से आंकड़े दिये जा रहे हैं, वही आंकड़े वार्षिक बजट में दिये गये थे। मैं चाहूंगा माननीय मंत्री जी बतावें कि वार्षिक बजट से भिन्न कौन सा रुपया है, जिसको आपने घोषित किया है।

अब मान्यवर, सरकार की शिथिलता के बारे में उदाहरण देना चाहता हूं। सरकार कहती है कि सिंचाई की व्यवस्था नहीं हो सकी, अगर सिंचाई की समुचित व्यवस्था हो गयी होती, तो सूखे का सामना करने में सफल हो जाते। निजी नलकूपों के विद्युतीकरण के लिए आपने घोषणा की कि 175 नलकूपों का विद्युतीकरण किया जायगा। सूखे के कारण आवश्यकता इस बात की थी कि 175 से बढ़ा कर 300,400,500 कर दिया जाता, लेकिन 175 से घटा कर 100 कर दिया गया है। मैंने अपने क्षेत्र के लोगों को परसुयेड किया कि अपना निजी नलकूप बनवा लीजिए, लेकिन वे विद्युत के लिए जाते हैं, तो अधिशासी अभियंता कहते हैं कि 175 से घटा कर 100 का कोटा हो गया है। अभी गन्ना पर चर्चा हुई थी। आज आवश्यकता इस बात की है कि काश्तकार की जो भी फसल बरबाद हुई, उसमें से जो भी पैसा उसको मिल जाय, उसको राहत हो जायेगी। मैं अपने जिले की बात कहता हूं। हमारे यहां पर लिखित रूप से परिपत्र जारी किया गया है कि अगर कोई काश्तकार एडिशनल बांडिंग चाहता है, तो वह परिवार नियोजन के दो केसेज देगा, तभी उसको एडिशनल बांडिंग की सुविधा दी जायगी, उसको रोस्टर के हिसाब से 5 पर्चियां अगली दे दी जायंगी। मान्यवर, जहां पर व्यवस्था करने की जरूरत थी, वहां पर इस तरह का शोषण सरकार की ओर से जारी है। मैं माननीय गन्ना मंत्री जी से मिला था। मैंने स्वतः इनको जानकारी दी भी कि जो पैसा वापस दो साल के बाद होना चाहिए था, वह पैसा खाद खरीदने के लिए अनिवार्य रूप से किया जाता रहा है और वह खाद ज्यादा दाम पर लेने के लिए किसानों को मजबूर किया जा रहा है। इस संबंध में इससे पहले अनेक बार इस सदन में आरोप लगाये जा चुके हैं।

मान्यवर, मार्गों पर रोजगार सृजन के नाम पर जो मिट्टी का कार्य कराया जा रहा है, जो सड़क बनायी जा रही है उनका बजाय मस्टर रोल पर पेमेन्ट करने के बड़े पैमाने पर ठेकेदारों के द्वारा किसानों का शोषण किया जा रहा है और मजदूरी नहीं दी जा रही है। मेरा आरोप है कि इधर के माननीय सदस्य तो जानते ही है और उधर के माननीय सदस्य लोग भी इस बात को समझते हैं कि वह ठेकेदार कौन है, वह सड़कों पर काम कराने वाले लोग मोटर साइकिल पर तिरंगा झंडा लगाकर चलते हैं और काश्तकारों को मिलने वाली पगार को खाकर धोखा देने का काम किया जा रहा है। ग्राम्य विकास मंत्री जी कहते हैं कि एक प्रमाण भी दे कोई, मान्यवर, किसी सड़क पर चले जाइये उस पर मानीटरिंग करा लें, कहीं भी मस्टररोल पर पेमेन्ट नहीं हो रहा है। आप पूरे जिले की निगरानी करवा लें कहीं पर भी अगर मस्टररोल के आधार पर पेमेन्ट हुआ हो।

मान्यवर, जिस समय सूखा पड़ा हमारे नेता श्री अटल बिहारी बाजपेयी यहां लखनऊ आये थे उन्होंने घोषणा की थी कि यह सूखा राष्ट्रीय संकट है इस सूखे का सामना करने के लिए हमें दलगत स्तर से ऊपर उठकर विचार करना चाहिये, हमको इस बात का अवसर दें और प्रदेश के राज्यपाल की अध्यक्षता में एक सर्वदलीय कमेटी बनायी जाय, जिले में सर्वदलीय कमेटी बनाई जाय उसके आधार पर निगरानी करें । लेकिन मान्यवर, मुझे खेद हुआ और आश्चर्य होता है और मैं सरकार की इस नीयत की भर्त्सना करता हूं कि इस राष्ट्रीय संकट का सामना करने के लिये सत्तारूढ़ दल ने जो कुछ किया वह अपने दलीय आधार पर करने की चेष्टा की है । निगरानी समितियां बना दीं, कहां बनाई गयी है, पंचायत स्तर पर बनायी गयी इन समितियों में पार्टी की ओर से कार्यकर्ताओं को भरा गया है । क्या प्रतिपक्ष के लोग आज इस राष्ट्रिय संकट के काम में सामने नहीं आये, वह आना चाहते हैं और आगे आये लेकिन आप उनका सहारा नहीं लेना चाहते हैं इसलिए नहीं लेना चाहते हैं कि उसके आधार पर जो पैसे की कमाई हो रही है, जो गरीबों तक पैसा नहीं पहुंच रहा है, उसकी वसूली में बाधा पहुंच जायेगी । इसलिए मैं कुछ मांग रखना चाहता हूं । आज आवश्यकता है कि सूखा राहत के बारे में आप श्वेत पत्र जारी करें ।

मान्यवर, जिस समय माननीय राजस्व मंत्री जी ने भाषण देना प्रारम्भ किया था, उस समय भी हम लोग जानना चाहते थे लेकिन आंकड़ा हमारे सामने आ गया कि किस में कितना पैसा दिया गया है, लेकिन राजस्व मंत्री जी के भाषण में उसकी जानकारी कहीं नहीं मिली इसलिए मैं चाहूंगा कि सूखा राहत के बारे में श्वेतपत्र जारी करें, पूरी जानकारी दें और राज्यपाल जी की अध्यक्षता में एक सर्वदलीय कमेटी बनाई जाय, वह सर्वदलीय कमेटी जो राहत के मामले में घपले हुए हैं, भ्रष्टाचार हुआ है उसकी जांच करें । यह कमेटी विधान मंडल के सदस्यों की हो और वह प्रदेश का दौरा करे और सही स्थिति सरकार को देने की कृपा करे ।

मान्यवर, जो सबसे महत्वपूर्ण बात है वह यह है कि अगर फसल की बीमा योजना हमारे प्रदेश में लागू हो गयी होती तो यह दुर्दिन देखने को न मिलता । मैं सीतापुर जिले के एक दो मामले रखकर अपनी बात की पुष्टि करना चाहता हूं, मान्यवर, हैण्डपम्प के लिए हमारे सीतापुर जिले में 8.6 लाख रुपये का आवंटन हुआ मुख्य मंत्री जी की ओर से यह कागज भी हमारे पास पहुंच गया लेकिन आज तक विभाग की ओर से हमारे पास एक पैसे की स्वीकृति सरकार की जिले में नहीं पहुंची है । इसी तरह से पेयजल के लिए 10 लाख 48 हजार का आवंटन हुआ लेकिन इसके बारे में अभी तक प्रदेश स्तर पर स्वीकृति नहीं हुई ।

मान्यवर, जितनी इस तरह की घोषणाएं की गयी हैं, उनकी वित्तीय स्वीकृति नहीं पहुंची है, जहां पहुंची है देर से पहुंची है । मान्यवर, मैं सरकार के ऊपर आरोप लगाना चाहता हूं कि सरकार ने सूखा राहत के बारे में जो दिलचस्पी दिखानी चाहिए, वह नहीं दिखाई गयी है और दलीय आधार पर पैसे का काफी गबन किया क्या है इसकी जांच के लिए जो मैंने सुझाव रखे है उसके आधार पर कार्यवाही की जाय ।

*श्री ईश्वर शरण विद्यार्थी–

मा0 अधिष्ठाता महोदय, आपने मुझे सूखे पर चर्चा करने के लिये समय दिया क्योंकि बीच में व्यवधान उत्पन्न हो गया था, हमारे मा0 विपक्ष के सदस्य गैलरी में आ गये थे, खैर देर आये दुरुस्त आए । यह अच्छा हुआ, भले ही देर से सद्बुद्धि आयी, जो सूखे पर चर्चा थी, हमारी सरकार का संकल्प था और मा0 मुख्य मंत्री जी चाहते थे कि इस पर चर्चा हो । मा0 अधिष्ठाता महोदय, जिस नाम को लेकर हमारे मा0 विपक्ष के लोग स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह का नाम लेकर सदन का समय नष्ट किये और यह कहकर कि इंदिराजी के बारे में, मैं तो कहता हूं उनके नेता के लिये भी कांग्रेस सरकार और हमारे राजीव गांधी संवेदनशील हैं, क्योंकि चौधरी चरण सिंह के लिये भी और इंदिराजी, जिन्होंने देश के लिये बलिदान किया, उसके लिये पूरा देश प्रयत्नशील है । मैं बताना चाहता हूं कि हमारी सरकार की और राजीव गांधी की जितनी चिंता चौधरी चरण सिंह के लिये है, उतनी विपक्ष को नहीं है । उनके जिन्दा रहते हुए भी विपक्ष उनके आदर्शों पर न रहकर टुकड़े-टुकड़े में बंट गया ।

श्री विजय सिंह राणा–

मान्यवर, माननीय सदस्य सूखे पर नहीं बोल रहे हैं

श्री अधिष्ठाता–

मा0 सदस्य सूखे पर ही बोलें ।

श्री ईश्वर शरण विद्यार्थी–

मान्यवर, ये सही बात नहीं सुन सकते । ये हमारी बात सुनें, हम इनकी बात सुनते हैं । मा0 अधिष्ठाता महोदय, इस प्रदेश में ही नहीं पूरे देश में सूखे का प्रकोप है ।उस स्थिति में हमारे प्रदेश की सरकार ने सारा काम रोककर सूखे पर चर्चा करनी चाही है । हमारी सरकार ने, मा0 मुख्य मंत्री जी ने प्रदेश का सारा काम रोक कर निर्देशित किया है कि सूखे के ऊपर कार्यवाही होनी चाहिये ।सारे अधिकारियों को निर्देशित किया कि सारा काम रोक कर केवल सूखे का काम किया जय । उन्होंने सारे अधिकारियों को लिखा कि इस प्रदेश का अधिक से अधिक

(इस समय 1 बजकर 15 मिनट पर अधिष्ठाता श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त पीठासीन हुए ।)

धन सूखे पर खर्च होना चाहिये । यहीं नहीं, मा0 मुख्य मंत्री जी ने पूरे प्रदेश में मण्डलीय बैठकों के माध्यम से सारे विधायकों को और विरोधी दल के विधायकों को भी अवसर दिया कि वे वहां पर अपनी बात रख सकें कि सूखे के सम्बन्ध में किस प्रकार की कमियां हैं, यह बतावें ।

श्री राम शरण दास–

मान्यवर, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है, मा0 सदस्य मुख्य मंत्री जी के बारे में बार-बार कह रहे हैं सो उनकी स्टेचू जगह-जगह लगवा दी जाय ।

श्री ईश्वर शरण विद्यार्थी–

मा0 अधिष्ठाता महोदय, सही बात हमारे विपक्ष के नेता कहने नहीं दे रहे हैं । मान्यवर, हमारा समय नष्ट हो रहा है । बार-बार समय नष्ट करेंगे तो हमारा जितना समय नष्ट होगा, मैं बाद में लूंगा ।

श्री अधिष्ठाता–

मेरा निवेदन है कि सूखे के विषय पर चर्चा हो रही है, कृपया शांत रहें ।

---

*–वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री ईश्वर शरण विद्यार्थी–

मान्यवर, मैं कह रहा था कि हमारे प्रदेश में. . .

श्री शारदा प्रताप–

मान्यवर, ये बार-बार कह रहे हैं कि मुख्य मंत्री जी सूखे पर चर्चा कराना चाहते हैं और विपक्ष के लोग चर्चा नहीं होने दे रहे हैं, तो देश में इतना सूखा पड़ा है और प्रधान मंत्री लक्ष्यद्वीप में जाकर [xxx] कर रहे हैं।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री अम्मार रिजवी)–

मान्यवर, इन्होंने किसी सम्मानित व्यक्ति के लिये कहा है कि अय्याशी कर रहे हैं, तो अय्याशी शब्द को कार्यवाही से निकाल दिया जाय।

श्री अधिष्ठाता–

हम कार्यवाही को देख लेंगे।

श्री ईश्वर शरण विद्यार्थी–

मान्यवर, सूखे में गरीबों के लिये फिकर हमारी सरकार को है। मान्यवर, मेरा निर्वाचन क्षेत्र मंजनपुर (इलाहाबाद) में राहत के नाम पर कुछ नहीं हो रहा है। परगनाधिकारी मंजनपुर कुछ नहीं कर रहे हैं, मैं चाहता हूं कि वहां पर सूखे की राहत का कोई काम नहीं हो रहा है, इसकी जांच कराई जाय और पूरे काम को देखा जाय।

श्री अधिष्ठाता–

अब आप कृपा करके बैठें।

*श्री मुलायम सिंह यादव–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, इस शताब्दी के सबसे बड़े सूखे के सम्बन्ध में, इस सदन में चर्चा का दूसरा दिन है। माननीय राजस्व मंत्री जी ने जो भाषण दिया था, उसके सम्बन्ध में आखिर में मैं दो तीन बातें कहूंगा, उससे पहले मैं आपके सामने दो बातें रखना चाहता हूं कि दैवीय आपदा से मुकाबला करने के लिये सरकार के पास कोई नीति है? माननीय राजस्व मंत्री जी के जहां तक भाषण की बात है, अखबारों के माध्यम से हमने जो देखा और पढ़ा है, चाहे सूखा हो या बाढ़ हो, दैवीय आपदाओं से मुकाबला करने की इनकी कोई दीर्घकालीन नीति नहीं है अभी तक। मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि जब तक इनकी दैवीय आपदाओं से मुकाबला करने के लिये कोई दीर्घकालीन नीति नहीं बनेगी, उसके लिये कोई काम नहीं किया जायेगा, तब तक न यह सूखे का मुकाबला कर सकते हैं और न बाढ़ का मुकाबला कर सकते हैं।

मान्यवर, आप जानते हैं कि यह दुर्भाग्य है हमारे देश का प्रदेश का कि प्रत्येक वर्ष इसके बहुत बड़े हिस्से में सूखे का प्रकोप रहता है, दूसरे हिस्से में बाढ़ का प्रकोप रहता है। मान्यवर, आपने इस बार भी देखा कि प्रदेश में भयंकरतम सूखा बहुत बड़े हिस्से में रहा और दूसरी और पूरब के कुछ हिस्सों में बाढ़ का प्रकोप रहा। मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि दो उपाय है इसका मुकाबला करने के लिए एक, दीर्घ-कालीन और दूसरा तात्कालिक। मान्यवर, इस पर समीक्षा करेंगे, इसकी कसौटी

नोट:–[x x x] यह अंश श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

पर जाएंगे, तो पायेंगे कि यह सरकार पूरी तरह से असफल है सूखे से मुकाबला करने के लिये ।

मान्यवर, सरकार के जो आंकड़े हैं, जो सरकार की रिपोर्ट है, उसी के अनुसार हम सिद्ध करना चाहते हैं कि इस सरकार ने न तो अब तक कोई दीर्घकालीन नीति बनायी है और न कोई तात्कालिक सहायता की है । मान्यवर, जहां तक उपायों की बात है, इसके लिये जरूरी है कि दीर्घकालीन उपाय हों । मान्यवर, चार मुख्य प्रयास है, जिनका कि मैं उल्लेख करना चाहूंगा । पहला, सिंचन क्षमता और उसका उपयोग, दूसरा, अतिरिक्त सिंचन क्षमता का सृजन, तीसरा बिजली किसानों के बजाय उद्योगों को दी जा रही है, गांव वालों को ज्यादा बिजली दी जाय । चौथा, गैर विकास व्यय जो ज्यादा हो रहे हैं, उनके बजाय विकास पर ज्यादा खर्च किया जाय ।

मान्यवर, इन चार उपायों के सम्बन्ध में हम सरकार के ही आंकड़े प्रस्तुत कर रहे हैं इन आंकड़ों से हम सिद्ध कर देंगे कि सरकार ने पूरी उदासीनता दिखायी है और यह सरकार पूरी तरह से असफल है । मान्यवर, जो हमारी सिंचाई की क्षमता है, उस क्षमता का हम कितना उपयोग कर रहे हैं, अन्य प्रदेश कितना कर रहे हैं, उसकी तुलनात्मक अध्ययन से यह साबित हो जायेगा कि यह सरकार कहां पर है । मान्यवर, 1981-82 में उत्तर प्रदेश की जो सिंचन क्षमता थी वह 165 लाख हेक्टेयर थी, उसका उपयोग किया गया 140 लाख हेक्टेयर । आप उपयोग देखें कितना हुआ, इससे ज्यादा इस सरकार का निकम्मापन और क्या हो सकता है, इससे ज्यादा उदासीनता और क्या हो सकती है ? 1982-83 व यह हाल था कि सिंचन क्षमता थी 173 लाख हेक्टेयर, उत्तर प्रदेश के जो भी साधन थे, उपयोग किया गया 146 लाख हेक्टेयर।

मान्यवर, उत्तर प्रदेश में सन् 1983-84 में सिंचन क्षमता 188 लाख थी, जिसमें उपयोग केवल 153 लाख हेक्टेयर का हुआ । इसी प्रकार सन् 1984-85 में सिंचन क्षमता का लक्ष्य 197 लाख हेक्टेयर था, जिसमें से केवल 160 लाख हेक्टेयर का उपयोग किया गया । इस प्रकार मान्यवर, आप देखें कि 25 लाख हेक्टेयर सिंचन क्षमता का उपयोग नहीं किया गया और फिर 84-85 में वह सिंचन क्षमता बढ़कर करीब 37 लाख हेक्टेयर हो गई, जिसका उपयोग नहीं हुआ । इससे ज्यादा बड़ा सबूत इस सरकार की विफलता का क्या हो सकता है ? यह आकड़े हमारी विपक्षी-पार्टियों के दफ्तर के नहीं हैं, बल्कि यह आकंड़े हैं माननीय संसदीय कार्य मंत्री, माननीय मुख्य मंत्री, और माननीय राजस्व मंत्री की सरकार के । इन्हीं को मैं आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं । इसके बावजूद माननीय मंत्री जी बड़ी बेशर्मी के साथ यह कह देते हैं कि हमनें युद्धस्तर पर सूखे का मुकाबला किया है और कर रहे हैं, इसी तरह से मान्यवर, दूसरी तरफ आप देखें कि दूसरे जो प्रमुख राज्य हैं, वह अपनी सिंचन क्षमता में वृद्धि कर रहे हैं, लेकिन उत्तर प्रदेश में वृद्धि नहीं हो पा रही है । इससे जाहिर होता है कि यह सरकार सबसे निकम्मी साबित हो रही है, पूरे देश में । आन्ध्र प्रदेश ने 4 लाख 50 हजार हेक्टेयर सिंचन क्षमता हासिल की है । इसी प्रकार बिहार ने 5 लाख 80 हजार हेक्टेयर, कर्नाटक ने 6 लाख 40 हजार हेक्टेयर, महाराष्ट्र ने 6 लाख 50 हजार हेक्टेयर, राजस्थान ने 5 लाख 60 हजार हेक्टेयर, मध्यप्रदेश ने 4 लाख 80 हजार हेक्टेयर और हरियाना

ने 3 लाख 50 हजार हेक्टेयर सिंचन क्षमता हासिल की है, जबकि इसके बावजूद उत्तर प्रदेश में यह सिंचन क्षमता केवल 3 लाख हेक्टेयर ही है ।

मान्यवर, हरियाना सबसे छोटा सूबा इस देश का है और उत्तर प्रदेश उसकी भी बराबरी नहीं कर पा रहा है । यह माननीय मंत्री जी, माननीय मुख्य मंत्री जी, माननीय राजस्व मंत्री जी अपने जवाब में यह बतायें कि कैसे यह सूखे का मुकाबला कर रहे हैं ? आगे मैं कुछ और आंकड़े आपके सामने रखना चाहता हूं कि किस तरह से इन लोगों ने उत्तर प्रदेश को चौपट किया है । मान्यवर, दूसरा उपाय था दीर्घ-कालीन सिंचन क्षमता को बढ़ाना । उसमें भी सरकारी आकंड़ों के अनुसार आप देखें कि यह सरकार पूरी तरह से विफल ही साबित हुई है । क्या यह झूठे आकंड़े प्रस्तुत करके सूखे का मुकाबला करेंगे ? दूसरी महत्वपूर्ण बात जो है, वह है बिजली की । इसका भी हाल आप देख लीजिये । यह भारत सरकार द्वारा जारी आर्थिक समीक्षा है, उसी के अनुसार वर्ष 86-87 के कुछ आकंड़े मैं इस सदन के सम्मुख रखना चाहता हूं । देश के जो प्रमुख सूबें हैं, उनका प्लान्ट लोड फैक्टर बिजली का यह है । इसमें डेसू का 70 सैकड़ा प्लान्ट लोड फैक्टर है । आन्ध प्रदेश का 67.3, तामिलनाडु का 64.9, पंजाब का 64.4, गुजरात का 52.8, मध्य प्रदेश का 51.1, महाराष्ट्र का 50, राजस्थान का 46.3, केरल का 43.3 और उत्तर प्रदेश का केवल 37.9 की प्लान्ट लोड फैक्टर है । अगर हम इसको 40 सैकड़ा भी मान लेते है, तब भी उसमें से कितनी बिजली चोरी चली जाती है, तो मान्यवर, आप बतायें कि बचा कितना केवल 24 परसेन्ट 70 परसेन्ट उद्योगपतियों व कारखाने वालों को दे दिया, इस प्रकार केवल 5 सैकड़ा गांववालों को बिजली दी जा रही है । इस तरीके से यह सूखे का मुकाबला करना चाहते हैं । अब यह कार्य कैसे किया जा रहा है, इसके बारे में मैं बताना चाहता हूं । बड़े-बड़े उद्योगपति, इनके विभाग के बड़े-बड़े इन्जीनियर्स और बिजली मंत्री यह सब मिलकर करोड़ों रुपए रिश्वत में ले रहे हैं, यह मेरा आरोप है । हम इसे सिद्ध भी करना चाहते हैं । जिस तरह से चोरी हो रही है, इस संबंध में मैं आपको मेरठ का उदाहरण देना चाहता हूं। इनके विभाग का वहां पर जो चीफ इन्जीनियर तैनात किया गया है, उसके नाक के नीचे सबसे बड़े पैमाने पर आज उत्तर प्रदेश में बिजली की चोरी हो रही है । जहां पर चोरी हुई हैं, उन फर्मों के नाम मैं बताना चाहता हूं, जब राजस्व मंत्री जी उत्तर देने के लिए खड़े हों तो वह इनका भी जवाब दें । इन फर्मों के नाम हैं, अग्रवाल पेपर मिल, मुजफ्फरनगर, सरस्वती स्टील लिमिटेड, मुजफ्फरनगर, गरेवाल पैपर मिल, नोएडा, गाजियाबाद, संदीप पेपर मिल, नोएडा, गाजियाबाद, ज्वालाप्ली पेपर मिल, दसना, गाजियाबाद, और श्री गंगाधर पेपर मिल गाजियाबाद, इस सभी संस्थाओं ने पिछले 3 वर्षों से कई करोड़ रुपए की बिजली चोरी की है । पकड़े भी गये हैं, लेकिन उनके विरुद्ध आज तक कोई कार्यवाही नहीं की गई । क्यों कार्य-वाही नहीं की गई, इसे भी माननीय राजस्व मंत्री जी अपने जवाब में बताने की कृपा करें । इसका सिर्फ एक ही कारण है कि आपके अधिकारी, चीफ इन्जीनियर व बिजली मंत्री करोड़ों रुपए रिश्वत में उनसे ले रहे हैं । दूसरा प्रमाण मैं देना चाहता हूं । यदि कोई अच्छा इन्जीनियर है और वह कहीं कोई चोरी पकड़ता है और ज्यादा राजस्व हासिल करता है, पहले तो ऐसे इन्जीनियर की पोस्टिंग ही नहीं

होगी और यदि हो भी गई तो उसका तुरन्त वहां से ट्रान्सफर कर दिया जायेगा । इसका कारण यह है कि इनके बड़े इन्जीनियरों व मंत्री जी को रिश्वत नहीं मिल पायेगी । एक नगर में एक इन्जीनियर ने 4 करोड़ रुपए का राजस्व वसूल कर शासन को दिया, लेकिन उसे आफिस अटैच कर दिया गया । मैं नाम लेना नहीं चाहता हूं, क्योंकि आप उसके खिलाफ कार्यवाही कर देंगे । लेकिन हमको यह सूचना है । किसान विरोधी यह सरकार किस प्रकार कितना असत्य बोल रही है । 5-6 सैकड़ा बिजली गांव वालों को दी जा रही है, आपके ही आकंड़े यह बताते हैं । मैंने एक शिकायती पत्र 24 अप्रैल, 1987 को माननीय मुख्य मंत्री को दिया था एक इन्जीनियर के खिलाफ उस पत्र में गम्भीर आरोप लगाये गये थे । परन्तु उस इन्जीनियर की तरक्की कर दी गई, सजा की जगह ।

श्री बाबू राम यादव–

मान्यवर, एक व्यवस्था का प्रश्न है । इतने गम्भीर विषय पर चर्चा हो रही है लेकिन आज न तो ग्राम्य विकास मंत्री जी यहां पर हैं और न ऊर्जा मंत्री जी है । इतने महत्वपूर्ण सुझाव दिये जा रहे हैं, लेकिन बड़े हल्के ढंग से लिया जा रहा है । इस पर आप अपनी व्यवस्था दें ।

श्री शतरुद्र प्रकाश–

मान्यवर, मंत्रि परिषद् के आधे से ज्यादा सदस्य यहां पर नहीं हैं । सूखे पर चर्चा चल रही है, बिजली विभाग के मंत्री यहां पर नहीं हैं जबकि चर्चा के वक्त उस विभाग के सचिव भी राज्यपाल दीर्घा में रहते हैं । आज सम्बन्धित विभागों का कोई अधिकारी भी नहीं है और न मंत्री हैं । इससे पता चलता है कि शासन को सूखे में कोई दिलचस्पी नही है ।

श्री लोकेन्द्र दत्त सकलानी–

मान्यवर, हमारे जो मंत्रीगण हैं, उनके जो दफ्तर हैं, सब जगह माइक लगे हैं । अगर कोई माननीय सदस्य बोलता है, तो उनको सब जानकारी होती है । इसके अतिरिक्त कार्यवाही लिखी भी जाती है । अतः यह कहना उचित नहीं है कि सरकार की इस मामले में कोई रुचि नहीं है ।

(श्री काशी सिंह ऐरी के खड़े होने से व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

आप बैठ जायं ।

अभी जिन माननीय सदस्यों ने व्यवस्था का प्रश्न उठाया, बात अपनी जगह गम्भीर है लेकिन यह हमारी परिपाटी रही है कि "लांबीज" को नहीं देखते हैं कि कौन बैठा है कौन नहीं बैठा है । जहां तक दूसरी बात है जो माननीय शतरुद्र प्रकाश जी ने कही है, जिन मंत्रियों से सम्बन्धित विभागों पर चर्चा हो रही है, वे होते तो बहुत अच्छा होता, लेकिन जहां तक तकनीकी सवाल है मंत्रिपरिषद् का संयुक्त उत्तर-दायित्व है । मेरा निर्देश है कि यदि माननीय मंत्रीगण लखनऊ में हों तो दूसरे कामों के मुकाबले इस काम को प्राथमिकता देनी चाहिए और उनके विभाग से सम्बन्धित जो सुझाव हैं, उनको नोट करना चाहिए ।

श्री मुलायम सिंह यादव–

तो मान्यवर, मैं बता रहा था कि किसानों को बिजली नहीं दी जा रही है और बिजली चोरी जा रही है। इन्होंने अभी तक कोई नीति नहीं बनायी है। जो ईमानदार अफसर हैं, उनको पोस्ट नहीं करते हैं। पश्चिमी जिले के एक नगर से ही 4 करोड़ रु0 के घोटाले का मामला मैंने अभी बताया। उस इन्जीनियर को आफिस में एटेच कर दिया । दूसरा उदाहरण दूंगा कि किस तरह से लूट हो रही और बिजली मंत्री करोड़ों रुपया ले रहे हैं । मैंने एक शिकायती पत्र दिया 24 अप्रैल को एक इन्जीनियर के खिलाफ मुख्यमंत्री जी को प्रमाणित अनियमितताओं और भ्रष्टाचार के संबंध में, विजिलेंस की जांच शुरू हो गयी और इससे पहले कि जांच रिपोर्ट आये, जल्दी-जल्दी उस व्यक्ति का प्रोमोशन कर दिया गया । प्रोमोशन जो किया गया तो निश्चित जानकारी है कि ज्वाइंट सेक्रेटरी और बिजली मंत्री ने मिलकर रिश्वत ली है, जिसमें लाखों रुपये का घोटाला है।

दूसरा जो सबसे महत्वपूर्ण है कि बिजली कैसे पैदा करें, नहरों में पानी कैसे बढ़ायें, इसके लिए चाहिए कि गैर विकास के कामों पर खर्चा न हो, विकास के कामों पर खर्चा किया जाय । सारे खर्चे गैर विकास के कार्यों पर हो रहे हैं, उसके आंकड़े बाद में दूंगा। जो तात्कालिक मदद होनी चाहिए थी, नहरों में पानी बढ़ाना चाहिये था, ट्यूबवैल ठीक होने चाहिए थे, दूसरा सबसे महत्वपूर्ण था कि ढाई करोड़ से तीन करोड़ ऐसे छोटे किसान हैं जिनके घरों में एक भी अन्न का दाना नहीं है । सरकार की तरफ से मस्टर रोल पर काम होना चाहिए था ।

मेरी इस बात की चुनौती है राजस्व मंत्री जी को कि जहां से आप चुनाव लड़ते रहे हैं और हार गये हैं वहां के केवल 10 गांव आप अपनी मर्जी से छांट लीजिये और दीखिये कि वहां राहत कार्य पहुंचा है या नहीं ? आप वहां राहत कार्य से सन्तुष्ट हैं या नहीं । यदि आप उससे सन्तुष्ट हैं तो हम विपक्ष के लोगों की आलोचना करने की आवश्यकता नहीं है वरना आपको इस्तीफा दे देना चाहिये अपने मंत्री के पद से । मैं कहता हूं कि इसी तरह से आप मुख्य मंत्री के चुनाव क्षेत्र के भी 10 गांव अपनी मर्जी से छांट लें हम विपक्ष के लोग आपके साथ चलेंगे, आप अपनी मर्जी से महमूदाबाद और गोरखपुर के दस-दस गांव छांट लो, हम सब चल कर देखेंगे कि वहां राहत की स्थिति क्या है और क्या आप उससे सन्तुष्ट हैं ?

दूसरी तरफ सूखा राहत के लिये स्वीकृत धन के संबंध में पता चला है कि सूखा के नाम पर आबंटित धन में बहत्तरी 10 प्रतिशत भी नहीं हुई जबकि मुख्य मंत्री और जिला अधिकारियों ने कमीशन का लगभग 25 प्रतिशत ले लिया। कोई भी तात्कालिक सहायता नहीं है, सारे लोग भूखे मर रहे हैं। जो ये कहते हैं कि हमारे पास गल्ला भरा हुआ है तो यह जो गरीबी की रेखा से नीचे के लोग हैं उनमें से कितनों को आपने काम दिया है ? मस्टर रोल पर ऐसे लोगों के नाम चढ़े हैं जो लोग मर गये हैं ।

इनके निकम्मेपन के कारण, इनकी अक्षमता के कारण केन्द्रीय सरकार भी इनको मदद नहीं दे रही है जबकि अन्य सूबों को मदद मिल रही है। केन्द्रीय सरकार जानती है कि उत्तर प्रदेश की सरकार में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार हो रहा है और सबसे बड़ी बात यह है कि मदद का सरकार उपयोग नहीं कर रही है। सबसे कम सूखे की सहायता

केन्द्र सरकार से उत्तर प्रदेश को मिली है जबकि गुजरात को 182 करोड़ रुपया, राजस्थान को 150 करोड़ रुपया, महाराष्ट्र को 108 करोड़ रुपया, आन्ध्र प्रदेश को 88 करोड़ रुपया, कर्नाटक को 40 करोड़ रुपया, मध्य प्रदेश को 29 करोड़ रुपया तथा उत्तर प्रदेश को केवल 11 करोड़ रुपया केन्द्र सरकार से मिला है।

इसी तरह से उत्तर प्रदेश में गैर विकास व्यय अधिक है और विकास व्यय कम है । जबकि फिजूलखर्ची में उत्तर प्रदेश सब सूबों से आगे है । भारतीय रिजर्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार 1985-86 के बाद 1986-87 में गत वर्ष की अपेक्षा राज्यों के गैर विकास व्यय का प्रतिशत इस प्रकार था कि कर्नाटक 6 प्रतिशत, हरियाणा 13.0 प्रतिशत, आन्ध्र 14.1 प्रतिशत, असम 16.5 प्रतिशत, बिहार 16.5 प्रतिशत, उड़ीसा 18.3 प्रतिशत, राजस्थान 19.7 प्रतिशत और उत्तर प्रदेश 19.7 प्रतिशत। सबसे ज्यादा खर्च हो रहा है गैर विकास कार्यों में उत्तर प्रदेश में और इसमें कोई रोक भी नहीं लगायी जा रही है जबकि लोग सूखे से मर रहे हैं।

अब आप विकास व्यय की प्रतिशत वृद्धि को भी देख लीजिये कि 1986-87 में गत वर्ष की अपेक्षा यह रही असम में 10.8 प्रतिशत, गुजरात में 10.2 प्रतिशत, उड़ीसा में 10.1 प्रतिशत, आंध्रा में 10.0 प्रतिशत, मध्य प्रदेश में 9.4 प्रतिशत, कर्नाटक में 7.7 प्रतिशत तथा उत्तर प्रदेश में 1.1 प्रतिशत । यह रिजर्व बैंक की समीक्षा है और उसी की यह रिपोर्ट है। तो आप एक ओर उत्तर प्रदेश को देखें और दूसरी ओर आसाम को देखें, तो आपको अन्तर अपने आप ही मालूम हो जायेगा। इनको शर्म होती तो डूब मरते, लेकिन यह बेशर्म सरकार है । दूसरी ओर आप देखें । सूखे के सम्बन्ध में 3 करोड़ रुपया खर्च होता है, लेकिन जो सूखे के कार्य हुये हैं, उनसे आपको अन्दाजा हो जायेगा। मैं बताना चाहता हूं कि आगरा में प्रधान मंत्री आने वाले थे, हांलाकि वह जा नहीं पाये और 15 से 20 लाख रुपया खर्च हो गया और दूसरी ओर लोग एक-एक रोटी के लिये भूखों मरते हैं। बाढ़ को आप देख लें, उस पर मैं चर्चा नहीं करता । लेकिन मैं एक बात बताना चाहता हूं कि जो हमारे मुख्यमंत्री जी हैं, (लाल बत्ती होने पर) मैं अपनी बात बहुत ही जल्दी समाप्त करता हूं।

श्री लोकेन्द्र दत्त सकलानी—

मान्यवर, आप एक स्पष्टीकरण दिला दें ।

श्री अधिष्ठाता—

नियमों में यह व्यवस्था है कि अगर कोई सदस्य इन्टरप्ट करना चाहता है और वह सदस्य अपने स्थान पर बैठ नहीं जाता है, तो उसे अनुमति नहीं दी जा सकती है।

श्री मुलायम सिंह यादव—

मान्यवर, एक बात कहकर समाप्त करता हूं। माननीय मुख्य मंत्री जी जिस जिले में जाते हैं, उसमें घोषणा कर आते हैं, आगरा में गये और राहत कार्यों के लिए धन देने की घोषणा कर आये और कह दिया कि जितना मांगेंगे उससे दो गुना मिलेगा। जहां जाते हैं, वहीं इस तरह की घोषणा कर आते हैं । मान्यवर, सूखे का काम हुआ है एक मुख्य मंत्री जी के मुंह पर दूसरे आकाशवाणी पर और तीसरे टेलीविजन पर और कहीं पर भी सूखे का काम नहीं हुआ है। पिछले साल मुख्य मंत्री जी इटावा गये और कांग्रेसी विधायिका, माननीय श्रीमती सुखदा मिश्र ने एक करोड़ रुपया इटावा के विकास

के लिए मुख्य मंत्री जी से मांगा, मुख्य मंत्री जी ने कहा कि एक करोड़ नहीं एक करोड़ 25 लाख रुपया दिया जायेगा, लेकिन आज तक एक भी पैसा नहीं पहुंचा है। यह पिछले दिसम्बर की बात है । इस संबंध में मान्यवर, एक कहानी याद आती है और उसके बाद समाप्त कर दूंगा । एक शंकर का भक्त था और उसने शंकर की तपस्या किया, तो शंकर जी प्रकट हुये और बोले क्या है। भक्त ने कहा कि बहुत गरीबी है और हमारा किसी प्रकार से उद्धार किया जाये । शंकर जी ने कहा कि मैं यह शंखिनी दे रहा हूं और इससे जो कुछ तुम मांगोगे वह देगी। उस व्यक्ति ने एक तोला सोना मांगा और उस शंखिनी ने एक तोला सोना दे दिया । शंकर जी फिर प्रकट हुये और कहा कि ठीक है ? तो उसने कहा कि एक तोला सोने से काम नहीं चलेगा तो शंकर जी ने उसे एक शंख दे दिया। उस शंख से जितना मांगा जाता था, उसका दुगुना वह देने के लिये कहता था। अगर एक करोड़ मांगा गया तो दो करोड़ देने के लिये कहता था, दो करोड़ मांगे तो 4 करोड़ देने को कहता था और जब उससे उतना रुपया देने के लिये कहा गया तो उसने कहा कि हम तो ढगोर शंख हैं, जो मांगते हैं उससे दो गुना बोलता हूं। परन्तु देता नहीं हूं। इसलिए उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री [xx] है।

श्री अधिष्ठाता—

(इस समय सदन की कार्यवाही 1 बजकर 47 मिनट पर भोजनावकाश के लिए स्थगित हुई।)

भोजनावकाश के उपरान्त 2 बजकर 45 मिनट पर सदन की कार्यवाही श्री उपाध्यक्ष के सभापतित्व में पुनः आरम्भ हुई।)

***श्री अरविन्द तिवारी–**

श्रीमन्, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे इस सूखे की महत्वपूर्ण चर्चा पर बोलने का अवसर दिया।

श्री शतरुद्र प्रकाश—

नाम लेते ही आ गये।

श्री उपाध्यक्ष —

यह तो आपका नाम लेते ही आ जाते हैं।

श्री अरविन्द तिवारी—

मान्यवर, इस वर्ष वर्षा का औसत हर वर्ष से आधा हुआ है सिर्फ 346.3 मि0 लीटर वर्षा हुई है तो इससे हमारे सामने बहुत बड़ा संकट पैदा हो गया। हमें खुशी है कि सरकार ने रोजगार के तमाम नये साधन मुहैय्या कराये और जैसा हदीश में लिखा हुआ है कि मजदूर की मजदूरी उसका पसीना खुश्क होने से पहले अदा कर दी जाय तो यह सबसे बड़ी उपलब्धि है। आज उत्तर प्रदेश में कहीं से भी इस प्रकार की शिकायत नहीं आई कि समय पर उसका पैसा अदा नहीं किया जा रहा है। सब को समय पर मजदूरी अदा की जा रही है।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

नोटः–[xx]यह अंश श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्रीमन्, उत्तर प्रदेश के पड़ोसी राज्य मध्य प्रदेश में भी इस वर्ष सूखा पड़ा है। आज यह सदन एक सर्वोच्च मानेटरिंग कमेटी की हैसियत से समीक्षा कर रहा है जैसा हमारे संसदीय कार्य एवं राजस्व मंत्री जी ने कहा। मध्य प्रदेश में मैं कह रहा था कि वहां सूखा राहत के लिये जिला सूखा राहत समितियां बनाई हैं जिसमें वहां के संसद सदस्य अध्यक्ष बनाये गये हैं और जिला अधिकारी उसके सचिव बनाये गये हैं। तो श्रीमन् हम भी उस व्यवस्था का परीक्षण करायें इससे जिले में ही जनप्रतिनिधियों के माध्यम से हम प्रभावी ढंग से सहायता पहुंचा सकते हैं और उसमें मुसीबतजदा गरीबों के आंसू पोंछ सकते हैं।

मान्यवर, आज प्रदेश के गरीब बच्चों के सामने विषम समस्या पैदा हो गई है। मां-बाप मजदूरी के लिये सुबह ही निकल जाते हैं उनके घर में दिन में खाना बनाने को कोई नहीं रहता है और एक वक्त ही वह खाना खा पाते हैं। इसलिये मैं चाहूंगा कि सरकार इस बात का परीक्षण कराये कि जो हमारे ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय हैं, वहां पर गरीब तबके के बच्चों को दोपहर का खाना मुफ्त मुहैय्या हो। इससे अभिभावकों को अपने बच्चों को स्कूल भेजने में प्रोत्साहन मिलेगा और लोगों को भोजन भी मिल सकेगा। श्रीमन्, सन् 1940 में जब बंगाल में अकाल पड़ा था तो 40 हजार लोगों की मौत हुई थी।

आज हमारी जनप्रिय सरकार ने जो व्यवस्था की उसमें मौत की बात तो जाने दीजिये कोई व्यक्ति भूखा नहीं सो रहा है। तो यह इस सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि है। हमारे इलाहाबाद के माननीय सदस्य शनिवार को बड़ा रोना रो रहे थे तो मैं कहना चाहता हूं कि इलाहाबाद इस प्रदेश का भाग्यशाली जिला है जहां से एक नहीं दो-दो मुख्य मंत्री हुये जो हमारी पार्टी में रहे लेकिन अफसोस है कि इन्होंने वहां का विकास नहीं किया और अंततोगत्वा पार्टी छोड़कर चले गये। तो मैं चाहूंगा जैसा हमारे माननीय भोला सिंह जी ने स्वयं स्वीकार किया कि माननीय वीर बहादुर सिंह जी ने 100 ट्यूबवेल एक बार और 50 ट्यूबवेल बाद में दिये तो यह इस बात का द्योतक है कि हमारी सरकार कोई भेदभाव नहीं करती है, चाहे वह पिछड़े हुये जिले कोई हों चाहे बुन्देलखण्ड हो या पूर्वान्चल हो कोई और जिला हो या सुखाग्रस्त आगरा जिला हो, सब को सरकार ने रोजगार के समान साधन दिये हैं। मैं कहना चाहता हूं कि इरिगेशन डिपार्टमेंट ने अपना शत-प्रतिशत लक्ष्य नवम्बर में ही पूरा कर लिया जब हमने 3 लाख हैक्टेयर से अधिक जमीन पर सिंचाई मुहैय्या करा दी तो हमारे किसानों को भरोसा हो गया उसी की परिणाम है कि आज इस रबी के मौके पर कोई ऐसा खेत नहीं जिसकी सोइंग न हुई हो, जिसकी बुआई न हुई हो। तो यह सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि है। इस प्रदेश की जनता सौभाग्यशाली है जिनको यह शासन मिला है अगर कहीं यह सूखा आज से 10 वर्ष पूर्व सन् 1977 में पड़ा होता तो हम लोग और इस प्रदेश की जनता नर्क में चली गयी होती।

मैं अम्मार साहब ने जो तथ्य परक आंकड़े दिये हैं उनका सम्मान करता हूं उन्होंने हैण्डपम्प के बारे में कहा तो मैं निहायत अदब के साथ सुझाव देना चाहता हूं। मैं साहस नहीं करूंगा उनके आंकड़ों को कोई चुनौती दूं। मान्यवर, 1,55,412 हैण्डपम्प में 1,51,966 हैन्डपम्प कार्यरत हैं। इनके कारणों की जांच की जाय कि इन इंडिया मार्क-2 हैण्डपम्प में मैन्युफैक्चरिंग डिफेक्टस होते हैं या इंस्टालेशन में खराबी होती है या

हैंडिलिंग में खराबी है चूंकि यह अहम मुद्दा है चूंकि ग्रामीण जनता पानी के लिये तरसती है, जिनको शहरों से नफरत हो रही है, उनका यह सवाल है, इसलिये मैं चाहूंगा इसकी जांच होनी चाहिये । इन शब्दों के साथ जिन माननीय सदस्यों ने इस चर्चा में भाग लिया उनके प्रति मैं एक शेर अर्ज करना चाहता हूं –

"पामाल न कर जालिम, ठोकर से मजारों को,
इस शहरे खामोशां को, मरमर के बसाया है।"

इन शब्दों के साथ मैं मान्यवर, आपके प्रति शुक्रिया अदा करता हूं।

*श्री नरेन्द्र देव–

मान्यवर, व्यवस्था का प्रश्न है कि यह सूखा की चर्चा लगभग समाप्ति की ओर है और बहुत से ऐसे सदस्य जिन्हें विभिन्न विवादों के कारण बोलने का मौका नहीं मिला है। सभी को अपने निर्वाचन क्षेत्रों के प्रति जिम्मेदारियां हैं, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि जो हमारे सम्मानित विपक्षी नेता कुछ अधिक समय लेते हैं और इधर के माननीय सदस्यों को कम समय दिया जाता है, तो कोई ऐसी व्यवस्था करें कि अधिक से अधिक लोग अपनी बात इस सूखे की चर्चा में रख सकें।

*कुंवर रेवती रमण सिंह—

मान्यवर, अभी हमारे नवजवान दोस्त कह रहे थे कि अभी सभी को मौका नहीं मिला है । इसलिये मैं यह कहना चाहूंगा कि सत्ता पक्ष के लोग तैयार हों तो 15 दिन के लिये सदन की कार्यवाही और बढ़ा दी जाये जिससे सभी को बोलने का मौका मिल जाये, हम लोग पूर्णतः इससे सहमत हैं ।

श्री उपाध्यक्ष—

आप अपनी बात कहें।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, यह कांग्रेस के भाई जो बंधुआ मजदूर हैं, कहने के लिये बोलते हैं कि विपक्ष के लोग जो कह रहे हैं उनमें सच्चाई नहीं है लेकिन अन्त में कह देते हैं कि हमारे क्षेत्र में यह-यह कमी है, कार्य संतोषजनक नहीं चल रहा है । तो यह कहते हमारी ही बात को है लेकिन घुमा फिरा कर कहते हैं । मान्यवर, इस सरकार की छवि पूर्ण रूप से धूमिल हो चुकी है और यह सरकार अब कुछ दिनों की मेहमान है और इसीलिये यह चिल्लाते हैं कि सदी का सबसे बड़ा सूखा पड़ा है लेकिन सदी का सबसे बड़ा घोटाला इस सरकार के कार्यकाल में हुआ है। इतना बड़ा घोटाला बाढ़ या सूखा से नहीं जितना इस सरकार की तरफ से किया जा रहा है।

मान्यवर, यह श्री नेकचन्द्र पाण्डेय, कानपुर से चुनकर आये हैं, उनको सूखा नहीं दिखाई दे रहा है और चारों ओर उनको हरियाली दिखाई दे रही है। मान्यवर, प्रदेश में स्थिति आज इतनी भयानक है कि इस सूखा में जैसे हर मोर्चे पर सरकार विफल रही है वैसे सूखा के सामने तो पूरी तरह विफल होकर यह सरकार रह गयी है और राहत कार्य देहातों में नहीं चल रहे हैं। यह बात विपक्ष के लोग ही नहीं कह रहे हैं बल्कि लोक सभा में 21 अगस्त को इनके कृषि मंत्री, श्री गुरुदयाल सिंह

---

*वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

ढिल्लों ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा था कि केन्द्रीय निगरानी दल द्वारा जांच के दौरान उत्तर प्रदेश, केरल में बहुत बड़ी संख्या में आवंटित राशि का दुरुपयोग और अनियमितताओं का पता चला है। यह बात मैं कह रहा होता तो आपको एतराज हो सकता था लेकिन यह आपके केन्द्रीय कृषि मंत्री का कहना है कि उत्तर प्रदेश में बड़ी अनियमितताएं हैं। जो अभी सेन्ट्रल आडिट कराया गया है, उसने जो रिपोर्ट दी है, उसके अनुसार 20 करोड़ रुपये का घोटाला उसने प्रदेश में पकड़ा है। उसने पाया है कि उत्तर प्रदेश में 20 करोड़ का घपला हुआ है। इन जिलों के जितने अधिकारी हैं, किसी जिले के किसी कार्यालय में आप चले जाएं, आप पायेंगे कि एक साल पहले वह किस स्थिति में थे और आज वह किस स्थिति में हैं। वहां पर एअर कंडीशनिंग और फ्लोरिंग आदि की सब चीज की सुन्दर व्यवस्था होगी और रंग रोशन करके इस सूखे ने उसे ऐसा कर दिया गया है कि लगता ही नहीं है कि इनके जिले में सूखा पड़ा है। इतनी गम्भीर सेन्ट्रल आडिट रिपोर्ट के बाद भी किसी भी जिलाधिकारी या बड़े अधिकारी के खिलाफ कोई कार्यवाही न कर सके हैं और न कदाचित कर सकेंगे। शायद कर भी नहीं पायेंगे। क्योंकि इनके अन्दर दम-खम नहीं है और इसका नतीजा यह है कि 20 सूत्री कार्यक्रमों की मीटिंगों में यह जाते हैं और सर्किट हाउस में ही मीटिंग करके लौट आते हैं और कभी किसी गांव में नहीं जाते हैं कि बीस सूत्री कार्यक्रम में–सूखे में कहां क्या काम हो रहा है। खाली सर्किट हाउस में मीटिंग करके रिपोर्ट एढ़कर चले आते हैं। उसी का नतीजा यह है कि 3 अरब रुपया मांगा था और उसके विपरीत इन्हें 1 अरब 41 लाख रुपया ही केवल मिला है।

माननीय राजस्व मंत्री जी अच्छा होता कि आप अपनी रिपोर्ट इस सदन में सर्कुलेट कर दिये होते कि कितना आपको मिला और उसे कहां-कहां, किन-किन मदों में आपने खर्च किया। लेकिन आपने यह नहीं किया, और इस पैसे का जो पूरे प्रदेश में आपने बंटवारा किया है वह भी सूखे से प्रभावित जिले के हिसाब से किया होता तो बेहतर होता, किन्तु आपने यह भी नहीं किया। राजनीतिक प्रेरणावश किसी जिले में जितना देना चाहिए था, उससे बहुत ज्यादा दे दिया और किसी में ज्यादा देना चाहिए था, उससे बहुत कम दिया है। सुल्तानपुर को आर0 एल0 जी0 ई0 पी0 में ज्यादा पैसा यानी 6 करोड़ रुपया दे दिया है, इसलिए दे दिया कि वह प्रधान मंत्री का क्षेत्र है और इलाहाबाद के जिलाधिकारी ने 6 करोड़ रुपया मांगा था किन्तु आपने केवल 70 लाख रुपया दिया है। इसके अलावा आपने सूखा राहत समय पर नहीं दी है। सूखा पड़ा है मई, जून में और राहत कार्य शुरू कराया है नवम्बर–दिसम्बर में। यानी एक तुगलक था दिल्ली की गद्दी पर और यह सरकार भी तुगलकी तरीके से अपना कारोबार चला रही है। बजाए जून, जुलाई, अगस्त में इमदाद भेजने के, इन्होंने नवम्बर-दिसम्बर में मदद भेजी है और वह भी इतनी कि किसी को 50 लाख, तो किसी को 70 लाख। अब आप फैसला करें कि इतने रुपये में से एक या दो ब्लाक में 1 या 2 और ज्यादा से ज्यादा तीन ही सड़क तो बन सकती हैं। तो आप देखें कि किसी भी जिले में तीन सड़कों से ज्यादा पर काम नहीं हो रहा है। मैं इनको याद दिलाना चाहूंगा कि जनता पार्टी के शासन में काम के बदले अनाज योजना में हर गांव में करीब-करीब सड़कें बनी

थीं। आप इसे सदी का सबसे बड़ा सूखा कहते हैं और इतना ढिंढोरा पीटते हैं और दुनिया के तमाम मुल्कों से भीख मांगते हैं देश की प्रतिष्ठा को धक्का पहुंचाकर और उसके बाद भी इनका राहत कार्य देख लिया जाए, वह शून्य है। दो-तीन सड़कों में कितने आदमी काम करेंगे । इतने कम धन का आप बंटवारा कर दें तो एक गांव के हिस्से में 1 हजार रुपया आता है और एक हजार रुपये में कैसे किसी गांव में काम होगा ? राजस्व मंत्री जी का अपने विभाग में नियंत्रण नहीं है । मुख्य मंत्री जी तो सदन में आते ही नहीं हैं। चार दिन का सदन है और शताब्दी का सबसे बड़ा सूखा है, लेकिन मुख्य मंत्री जी के पास समय नहीं है। बिजली मंत्री जी भी, जैसे उनकी बिजली चली जाती है इस तरह से वह भी गायब हो जाते हैं उनको भी समय नहीं है।

मान्यवर, विभिन्न राज्यों में जो केन्द्रीय सरकार ने धन आवंटित किया है उसका बयान राज्य मंत्री जी मकवाना ने, जो लोक सभा में दिया है वह राजस्थान को 21 करोड़ रुपये, गुजरात को 11 करोड़ रुपये, मध्य प्रदेश को 6 करोड़ रुपये और उत्तर प्रदेश को पांच करोड़ रुपये पेयजल में दिया है जबकि हमारा प्रदेश देश का सबसे बड़ा प्रदेश है। यह कहते हैं कि दिल्ली से बहुत धन ला रहे हैं, मान्यवर, जो धन यह लाये हैं वह पेयजल के लिए लाए हैं । सूखे से जो सबसे ज्यादा प्रभावित प्रदेश हैं उसको केवल पांच करोड़ मिला है जबकि गुजरात और राजस्थान जो कि इतने छोटे हैं उन्हें 11 करोड़ और 21 करोड़ मिला है । इसमें से भी जो माननीय ग्राम्य विकास मंत्री जी का विभाग है जो हैण्ड पम्प लगा रहा है उसमें भी बहुत कमीशनबाजी हुई है । किसी हरिजन किसी भी गरीब आदमी के यहां हैण्ड पम्प नहीं लगा है । जो मान्यवर, सीमान्त लोग हैं जो धनी लोग हैं उन्होंने अपने दरवाजे या आंगन में हैण्ड पम्प लगवाए हैं और मान्यवर, जो हैण्ड पम्प हैं उनमें भी किसी हैण्ड पम्प में 60 फिट से ज्यादा बोरिंग नहीं की गई है जबकि 120 फिट बोरिंग होनी चाहिए। मान्यवर एक-दो महीने बाद जैसे-जैसे जल स्तर नीचे जाता है वह हैण्ड पाइप बेकार हो रहे हैं। तो इस तरह से पैसे का दुरुपयोग करने से क्या फायदा? किसी भी कमेटी से, किसी भी विशेषज्ञ से मान्यवर, आप जांच करा लें 60 फिट से ज्यादा हैण्ड पाइप पम्प की बोरिंग नहीं की गई है । किसी भी निर्बल वर्ग, किसी भी पिछड़े वर्ग, किसी भी हरिजन वर्ग के यहां हैण्ड पम्प नहीं लगाया गया है ।

मान्यवर, इलाहाबाद के जिलाधिकारी ने 6 करोड़ रुपया मांगा था, लेकिन इन्होंने 70 लाख रुपया दिया है और वह भी अब नवम्बर के आखिरी में दिया है । 6 करोड़ के बदले 70 लाख में क्या होने वाला है और अब फसल तैयार हो गई है तो भेजा है । फसल तैयार हो जाएगी तो आप पैसा भेजेंगे, तो क्या होगा । वह पैसा 31 मार्च, में कमीशन के रूप में चला जाएगा, तो ऐसा कार्य क्यों करते हैं कि आपका पैसा भी जाए और गरीब आदमी को लाभ भी न मिले ? इसी तरह से मैं मान्यवर, आपके माध्यम से कहना चाहूंगा केन्द्रीय सेवादल ने, बुन्देलखण्ड में अप्रैल में खरीफ की बुआई मान्यवर, होती है, तो मान्यवर यह 567 हेक्टेयर में बुआई हुई, 385 हेक्टेयर में बुआई नहीं हो सकी। दो तिहाई से ज्यादा फसल बोई नहीं जा सकी। मान्यवर, जैसा अभी मुलायम सिंह जी ने कहा कि मुख्य मंत्री जी जाते हैं और वह घोषणा कर देते हैं और घोषणा का क्रियान्वयन नहीं होता है । बांदा में 1.5 करोड़ रुपया सूखे में देने को कहा, लेकिन मान्यवर, वह

नहीं पहुंचा है । बलिया में कहा कि 50 लाख रुपया सूखे के लिए और सीवर के लिए दौते हैं, लेकिन आज तक वह पैसा बलिया में नहीं पहुंचा है । इस तरह से विभिन्न अंचलों में प्रदेश में जहां-जहां यह जाते हैं घोषणा कर देते हैं लेकिन कहीं भी मान्यवर, वह रुपया नहीं पहुंचता है । प्रदेश के और मंत्रिमण्डल के सदस्यों को मालूम नहीं चलता कि कहां मुख्य मंत्री जी ने घोषणा की, कहां धन पहुंचना चाहिए और कब पहुंचेगा ।

मान्यवर, इतनी विसंगति है मैं कहना चाहूंगा कि आप लोग बैठकर कैबिनेट में फैसला कर लें कि कितना रुपया देना है और कहां देना है । मुख्य मंत्री जी एलान भी करते हैं और रुपया पहुंचता भी नहीं है । मान्यवर, इसके साथ-साथ इस समय प्रदेश में सूखे से करीब 8 करोड़ लोग प्रभावित हैं । 12 करोड़ जनता में से 8 करोड़ लोग सूखे से प्रभावित हैं । यह लोग कहां जायेंगे, आप यह बता दें । स्थिति आपको पता नहीं है, विधायकों को आप 4 हजार रुपये तनख्वाह दे रहे हैं लेकिन गरीब आदमी को आज 13 रुपये किलो दाल और 32 रुपये किलो कड़ुआ तेल मिल रहा है, 36 रुपये किलो डालडा बिक रहा है और 3 रुपये किलो आटा बिक रहा है, 4 रुपये में मोटा चावल बिक रहा है । लेकिन आप कह रहे हैं कि किसी आदमी को मरने नहीं देंगे । अगर पानी बरस गया तो सरकार वाहवाही लूट लेती है लेकिन अगर पानी नहीं बरसता है तो सरकार कहती है कि इन्द्र भगवान नाराज हैं हम क्या करें । मान्यवर, यह महंगाई आज हमारे प्रदेश में 13 प्रतिशत है जो हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा है । रिटेल में, फुटकर में देखा जाय तो यह महंगाई 25 से लेकर 100 प्रतिशत है और हर चीज की कीमत बढ़ी है ।

श्री उपाध्यक्ष–

अब आप समाप्त करें ।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, अब मैं कुछ सुझाव देना चाहता हूं । मेरा निवेदन है कि इन सुझावों पर अमल किया जाय । मेरा निवेदन है कि जो राहत कार्य चल रहे हैं वह रेवेन्यू-विभाग से न कराकर किसी और एजेंसी से करवाये जायें क्योंकि रेवेन्यू-विभाग के लोगों के पास समय नहीं रहता है उनके पास और बहुत सा काम होता है । दूसरी बात यह है कि जो दैनिक मजदूरी है उसको 11, 13 रुपये से बढ़ाकर 18, 20 रुपये कर दिया जाय । आप जो एस0 डी0 एम0 से जांच करवाते हैं उसको सर्टीफाई करने के लिये किहीं-किन्हीं ब्लाकों में विधायकों से भी जांच करवायें । जो बड़े जिले हैं उनको आबादी के अनुसार पैसों का आवंटन किया जाय । प्रदेश में जो गांव हैं और उन गांवों में जो पुरवे हैं तो 250 से ज्यादा आबादी के पुरवों में हैण्ड पम्प लगाये जायं ।

श्री उपाध्यक्ष–

अब आप समाप्त करें ।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, जो प्राइमरी स्कूल हैं और जो जूनियर हाई स्कूल हैं उनमें हैण्ड पम्प लगवाये जायं । मान्यवर, इसके साथ ही साथ मैं एक बात और कहना चाहता हूं । मैं यह गेहूं आपके पास भेज रहा हूं ।

(माननीय सदस्य ने एक गेहूं भरा पैकेट सदन में दिखाया।) यह गेहूं आप सरकार के पास भेज दीजिये । मैं अभी बलिया के दौरे पर गया था । वहां पर सरकारी दूकानों से यह सड़ा हुआ गेहूं जनता को वितरित किया जा रहा है । यह गेहूं ऐसा है जिसको पशु भी नहीं खायेंगे । यह मैं आपके पास भेज रहा हूं कृपया इसको आप सरकार के पास भेज दें । दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि सूखे की समस्या को हल करने में जो सरकार ने जनता के साथ नाइंसाफी की है, उसकी प्रदेश की जनता माफ नहीं करेगी । आगे आने वाले समय में इनको यह पता चल जायेगा । आपने जो जनता के साथ धोखाधड़ी की है उसका बदला आने वाले चुनाव में आपको मिल जायेगा ।

*श्रीमती शशि शर्मा–

मान्यवर, हमारी सरकार इस विषय पर सूखे की स्थिति का जिस युद्धस्तर पर सामना कर रही है यह सर्वविदित है। माननीय रेवती रमण सिंह इलाहाबाद जनपद के हैं। जब उनसे अलग से बात होती है तो वह यह कहते हैं कि हमारी कांस्टीट्यूएंसी में बहुत काम हो रहे हैं और वह बधाई देते हैं । उनको तो हमारी तरफ से बोलना चाहिये क्योंकि उनके यहां जितने ट्यूबवेल और सड़कें बनी हैं वह मैं आपको बताना चाहती हूं । उनके यहां हर गांव इलेक्ट्रीफाइड है और जो पुरवे हैं वह भी इलेक्ट्रीफाइड हो रहे हैं इसलिये मंत्री जी को हमारे इन कामों की प्रशंसा करनी चाहिये ।

मान्यवर, एक बात मैं और कहना चाहती हूं । हमारी सरकार जिस तरह से काम कर रही है, उसकी नियत पर मैं शक नहीं करती हूं । मंशा यह है कि हम राहत पहुंचा सकें । लेकिन जो मानीटरिंग होनी चाहिए, वह हम अच्छी तरह से नहीं कर पा रहे हैं । मैं मान्यवर, आपके माध्यम से सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहती हूं कि मानीटरिंग अच्छी तरह से की जाय । अगर हमारे प्रदेश को पैसा कम मिला है, तो यह बहुत बड़े चैलेंज की बात है, पक्ष और विपक्ष के सभी लोग फाइनेंशियल इक्सपोज बैठ करके रिसोर्सेज बढ़ाने की ओर ध्यान दें ।

इसमें माननीय मुख्य मंत्री और पक्ष-विपक्ष के सभी लोग बैठें और संसाधनों को जुटाने के लिए बांड फ्लोट करायें, जैसे सेंटर में पोस्ट्स एण्ड टेलीग्राफ विभाग ने किया है । इसका जो पैसा है, वह विकास के काम में खर्च किया जाय, लेकिन शर्त यह है कि जनता का पैसा समय से वापस कर दिया जाय । इस तरह से अगर हम अपने फाइनेंसेज को, रिसोर्सेज को बढ़ायेंगे, तो कोई वजह नहीं है कि हम इस परिस्थिति का सामना न कर पायें और प्रदेश के विकास के काम में कोई रुकावट न आये ।

मैं माननीय मुख्य मंत्री जी और शासन का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहती हूं । जो किसानों ने अपनी फसल इस समय बोई है, उनको खाद की व्यवस्था कराई जाय । किसानों को खाद में अधिक से अधिक छूट दी जाय, ताकि अच्छी फसल हो सके । इसके साथ ही साथ मैं यह भी कहना चाहती हूं कि जो माननीय नेता विरोधी दल ने एडिशनल बांडिंग की बात कही है, उसका मैं समर्थन करती हूं । अगर हमारी सरकार 30 प्रतिशत गन्ने की व्यवस्था करती है, तो भी 70 प्रतिशत गन्ना किसानों का शोषण हो रहा है । मैं इसकी तरफ सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं । अगर वे दूसरे प्रदेशों को गन्ना भेजवाना चाहें, तो उसके लिए भी

वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया।

व्यवस्था होनी चाहिए, क्योंकि राजस्थान और मध्य प्रदेश में फाडर की बहुत कमी है और वे हमारे गन्ने को यूटिलाइज कर रहे हैं ।

हमारे जो कोआपरेटिव्स के गोदाम हैं, उनमें खाद समय से नहीं पहुंच पा रही है, पी0 सी0 एस0 के आफिस में समितियों के चेक्स 25-25 दिनों तक पड़े रहते हैं, जिसकी वजह से खाद नहीं मिल पाती है । मेरा दूसरा सुझाव यह है कि फ्री बोरिंग की स्कीम इस समय नहीं चल रही है, अगर इसे जनवरी और फरवरी में भी चालू रखें, तो यह समस्या हल हो सकती है । तीसरी बात मैं यह कहना चाहती हूं कि सरकार को अपने वित्तीय संसाधनों से कैश क्राप्स को बढ़ावा देना चाहिए । हमारे क्षेत्रों को मसाला बेल्ट घोषित किया जाय । अभी हल्दी के और लहसुन के दाम अधिक बढ़े हैं। जो चीज जहां पर पैदा हो, उसकी खपत वहां पर हो। गांधी जी का उद्देश्य रहा है कि जो चीज जहां पर पैदा हो, वहीं पर उसकी मार्केटिंग भी हो । हमारी सरकार इस सूखे के समय में, सूखे की स्थिति का जिस तरह से शुद्ध-स्तर पर सामना किया है, मैं उसके लिए सरकार को बधाई देती हूं । अन्त में मैं फिर से यह कहना चाहती हूं कि इसकी मानीटरिंग सही तरीके से की जाय ।

श्री शतरुद्र प्रकाश–

मान्यवर, अभी माननीय शशि शर्मा जी सदन में फर्मा रही थीं ।

श्री विजय सिंह राणा–

मान्यवर, यह रिश्तेदारी चल रही है पहले शशि शर्मा जी बोलीं अब शतरुद्र जी बोल रहे हैं ।

श्री उपाध्यक्ष–

जमाना ही ऐसा है ।

*श्री शतरुद्र प्रकाश–

मान्यवर, मैं कह रहा था कि शशि शर्मा जी फर्मा रही थीं कि रेवती रमण जी के यहां बहुत काम हो रहा है तो वह इसलिए हो रहा है कि वहां पर इनकी ससुराल है, इसलिए सरकार ज्यादा काम कर रही है । लेकिन मेरा कहना यह है कि इस समय प्रदेश में जो सूखे की स्थिति है वह बहुत ज्यादा खराब है विरोध पक्ष के लोग जो आलोचना कर रहे हैं, सत्तापक्ष के लोग उससे सहमत भले ही न हो लेकिन यहां पर राजस्व मंत्री जी नहीं हैं जो सरकार के और मंत्री हैं । मैं उनका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी जी ने 11 दिसम्बर, 1987 को लोक सभा में सूखे के बारे में जो प्रदेशों की सरकार काम कर रही है, जो बयान दिया है शायद वह बयान इस प्रदेश की सरकार के लिए प्रमाण पत्र हो । मैं आपकी अनुमति से उसे पढ़कर सुनाना चाहूंगा, जो उन्होंने बयान दिया है उसका तर्जुमा भी कर दूंगा ।

मान्यवर, श्री राजीव गांधी, प्रधान मंत्री जी ने लोक सभा में जो बयान दिया है, वह यह है कि-गो स्टेट गवर्नमेन्ट इक्सेप्ट राजस्थान एण्ड गुजरात हैड स्टार्टेड एनी ड्राट रिलीफ प्रोग्राम, वी इनीशियेटेड इट फ्राम दि सेन्टर। मान्यवर, इसका अनुवाद यह है कि गुजरात और राजस्थान को छोड़कर किसी भी प्रान्त में, किसी भी राज्य में, किसी भी

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

सरकार ने तब तक कोई सूखा की सहायता राहत कार्य शुरू नहीं किया जब तक केन्द्र की सरकार ने दिल्ली से इसकी शुरुआत नहीं की है । केवल राजस्थान और गुजरात दो स्टेट है जहां पर राहत कार्य किया गया, यह प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी फरमा रहे है लोक सभा में । मान्यवर, यह प्रधानमंत्री जी की बात थी इसके आगे सुनाना चाहता हूं–इवेन आफटर दैट वी गान देम एबाउट ए मन्थ टू मन्थ्स बीफोर आई विजिटेड दि स्टेट्स इवेन दैन देयर आर ओनली लिपापोती आर प्रोग्राम आन दि ग्राउन्ड । मान्यवर, इसमें कहा साफ है कि "इसके बावजूद भी हमने उनको एक महीने या 2 महीने का समय दिया और एक महीने, 2 महीने के समय के बावजूद भी गुजरात और राजस्थान को छोड़कर वहां पर केवल लीपापोती की गयी है और सतही तौर पर कार्य किया गया है" यह मैं नहीं कह रहा हू, यह विरोधपक्ष के किसी नेता का कथन नहीं है, जो सरकार इस सूबे में श्री वीर बहादुर सिंह जी चला रहे है उस पार्टी की सरकार के प्रधान मंत्री, श्री राजीव गांधी ने दिल्ली में लोक सभा में बयान दिया है। मान्यवर, राजस्व मंत्री मौजूद नहीं, अगर चाहें तो कार्यवाही निकाल कर देख सकते है।

मान्यवर, जब इस देश के प्रधानमंत्री का यह कहना है कि राजस्थान और गुजरात को छोड़कर कहीं काम नहीं हो रहा है और मान्यवर, हम कह रहे है तो उसका बुरा मान रहे है और मान्यवर, इतना ही नहीं है अभी बयान दिया है 30 या 31 तारीख को अम्मार रिजवी साहब ने और एक चार्ट साथ में लगा दिया है "केन्द्र से प्राप्त सूखा राहत धनराशि के उपभोग की स्थिति" यानि जितना मांगा उतना मिला नहीं है और जितना मिल गया है उसमें खर्चा कहां किया है, यह सरकार का आकड़ा है । मान्यवर, एशुपालन में 2.43 करोड़ केन्द्र से प्राप्त धनराशि 2.43 करोड़ रुपया वित्त विभाग द्वारा रिलीज की गयी, अवमुक्त की गयी और 0.25 करोड़ रुपया खर्चा हुआ यानि कि केवल 10 सैकड़ा खर्च हुआ और युद्धस्तर पर इनका कार्य हो रहा है। मान्यवर, स्वास्थ्य मंत्री जी मौजूद है इनके यहां 50 सैकड़ा काम हुआ है । मान्यवर, पेयजल की बात है कहीं चापाकल की मांग है, कहीं पाइप लाइन बिछाने की बात है इसमें 4.48 करोड़ रुपया केन्द्र से मांगा गया और सूबे की सरकार ने 4.84 करोड़ रुपये अवमुक्त कर दिये और अभी तक जो धनराशि प्रयुक्त हुई, वह है 0.23 करोड़, यानी 5 सैकड़ा खर्च हुआ ।

श्री अफसर यू0 अहमद–

मान्यवर, यह किस माह की रिपोर्ट है ?

श्री शतरुद्र प्रकाश–

यह हाल ही में रिलीज की गयी है । यह राजस्व मंत्री द्वारा प्रचारित तालिका दी गयी है ।

श्री नरेन्द्र देव–

मान्यवर, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है ।

श्री उपाध्यक्ष–

अभी वह बैठ जायं तो आप उठा सकते है ।

श्री नरेन्द्र देव–

मान्यवर, अभी इन्होंने कुछ अंश उद्धृत किये है और कुछ आकड़े दिये है । नियम यह है कि उसकी प्रतिलिपि आपको दे देनी चाहिये थी, यह रिकार्ड रखा जाता

है, अखबारों में छपता है । यदि यही आंकड़े अखबारों में दिये जाएंगे तो लोग कहेंगे कि विधान सभा में कहा गया तो सच होगा । मैं आपसे आग्रह करना चाहूंगा कि सम्मानित सदस्य ने एक तो लोक सभा का बयान पढ़ा, उसकी प्रतिलिपि आपको नहीं मिली है और उस बयान को रिकार्ड करा दिया गया है, मैं चाहता हूं कि उस अंश को नियमों के अनुसार रिकार्ड में से निकलवा दें, क्योंकि प्रतिलिपि नहीं दी गयी है, इसलिये वह रिकार्ड नहीं किया जा सकता ।

श्री फजलुल बारी–

मान्यवर, ये किस नियम के तहत बोल रहे हैं ।

श्री उपाध्यक्ष–

मा0 शतरुद्र जी ने जो कार्यवाही पढ़ी है, वह लोक सभा की कार्यवाही है और यदि लोक सभा की कार्यवाही में और उनके कथन में अन्तर होगा तो निकाल दिया जायगा और उद्धरण दिये हैं, तो वह दे सकते हैं ।

श्री शतरुद्र प्रकाश–

मान्यवर, मेरा आपसे निवेदन है कि जितना समय व्यवस्था के प्रश्न में गया है, उतना मेरे भाषण में जोड़ दिया जाय ।

श्री प्रदीप माथुर–

मान्यवर, रोज जो समय बर्बाद करते हैं, उसका क्या होगा ?

श्री शतरुद्र प्रकाश–

मान्यवर, प्रधान मंत्री जी का जो बयान पढ़ा है, दिल्ली चले जाइये वहां देख सकते हैं । तो मान्यवर, जो पेयजल की व्यवस्था के बारे में ग्रामीण इलाके में जहां पानी नहीं मिल रहा है, वहां के बारे में मैं ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि 8.70 करोड़ रुपया केन्द्र से मांगा गया, रुपया मिला भी, लेकिन इन्होंने खर्च अभी तक किया है 1 करोड़ 20 लाख रुपया, यानी कि मान्यवर, 13 सैकड़ा केवल गांवों में पेयजल के लिये खर्च किया है । पैसा मिला लेकिन खर्च करने का शऊर नहीं आया है । इसके अलावा रिग्स तथा उपकरणों के क्रय के लिये आधा करोड़ रुपया केन्द्र से मांगा गया, केन्द्र से आधा करोड़ रुपया मिला भी, लेकिन अभी तक इन्होंने एक पैसा भी रिग्स को ठीक करने में नहीं लगाया है । मान्यवर, अगर पूरे आंकड़े देखे जायं तो केवल 13 प्रतिशत ही खर्च किया गया है । तो मान्यवर, यह कहा जा रहा है कि प्रदेश में इस समय शताब्दी का सबसे गहरा, सबसे भयंकर सूखा है और अभी तक आधा साल गुजरा है और 2-3 महीने के बाद दूसरा वित्तीय वर्ष आने वाला है । अभी तक जितनी भी धनराशि केन्द्र से मिली है, उसका 13 प्रतिशत ही खर्च हो पाया है । इससे ज्यादा निकम्मापन दूसरा नहीं हो सकता है । यह सूखे का मुकाबला क्या करेंगे ।

मान्यवर, इस समय जो प्रदेश के किसान हैं, उनकी आर्थिक स्थिति जर्जर हो गयी है । हम लोगों ने मांग की थी कि इस समय सूखे को देखते हुए किसानों की लगान माफी की घोषणा सरकार को करनी चाहिये, लेकिन इन्होंने माफी नहीं की है, न स्थगित की है । जो शासनादेश जारी किया गया है, उसमें लिखा है कि उत्पीड़न की कार्यवाही न की जाय, लेकिन रिकवरी का काम अभी भी प्रदेश के गांवों में हो रहा है। अभी भी छोटे-छोटे किसानों से वसूलयाबी की जा रही है, मान्य-

दर, मैं कहना चाहता हूं कि जो सरकार इस सूखे की स्थिति में वसूली को स्थगित नहीं कर सकती है, वह सूखे को दूर क्या कर पायेगी ।

मान्यवर, हमने सरकार से यह मांग की थी कि इस सूखे को देखते हुए छात्रों की फीस माफ की जाय, लेकिन आज तक इस सरकार ने छात्रों की फीस माफ नहीं की । मान्यवर, बिजली देना, पानी देना, यह सरकार का दायित्व है। बिजली के अभाव में, पानी के अभाव में, यदि किसान की फसल बरबाद हो जाय, तो यह जिम्मेदारी सरकार की है। मैं कहना चाहता हूं कि प्रदेश के अन्दर फसलों का बीमा होना चाहिये। बिजली के अभाव में, पानी के अभाव में, अगर फसल चौपट हो जाय, उसकी जिम्मेदारी सरकार की होनी चाहिये और उसका खामियाजा, मुआवजे के तौर पर, सरकार को किसानों को देना चाहिये । मान्यवर, इस सूखे में पैसे का दुरुपयोग जारी रहा, सरकार जो पैसा बरबाद कर रही है, उस पर यदि सरकार नहीं चाहती, तो मैं कहना चाहता हूं कि इससे भी खराब हालात 1988-89 में होने वाले हैं ।

(श्री नरेन्द्र देव के खड़े होने पर)

श्री उपाध्यक्ष–

अभी आप बैठें ।

श्री शतरुद्र प्रकाश–

मान्यवर, अन्त में मैं कहना चाहता हूं, कि बकौल प्रधानमंत्री जी के-प्रदेश में केवल लीपापोती का नाम किया गया है और कुछ नहीं किया गया है ।

श्री उपाध्यक्ष–

आगे के माननीय सदस्य समय का ध्यान रखें, 5 मिनट में अपनी बात समाप्त करेंगे ।

श्री नरेन्द्र देव–

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका बड़ा ही आभारी हूं कि आपने मुझे इस सूखे की चर्चा में बोलने का अवसर प्रदान किया । मान्यवर, विपक्ष के तमाम माननीय साथियों ने इस चर्चा में भाग लेते हुए यह कहा कि कई मदों में यह पैसा नहीं खर्च किया गया है । मान्यवर, मैं एक बात कहना चाहता हूं कि यह पहली उत्तर प्रदेश की सरकार है, जिसने उन योजनाओं पर पैसा कम खर्च किया है, जिनसे कम लाभ हुआ करता है। मान्यवर, इस वर्ष सूखा राहत की जो राशि है, उसका दुरुपयोग हो, उसका सदुपयोग हो, विभिन्न विभागों की धनराशि का आवंटन किया गया है, और ऐसी योजनायें ली गयी हैं, जिससे लम्बे समय तक लोगों को लाभ मिल सके ।

(सत्तापक्ष की ओर से मेजों की थपथपाहट)

मान्यवर, मैं उत्तर प्रदेश शासन को इसके लिये बधाई देना चाहता हूं । अभी हमारे विपक्ष के एक सम्मानित सदस्य बोल रहे थे कि उनके शासन में काम के बदले अनाज योजना की शुरुआत की गयी । मान्यवर, मैं संक्षेप में कहना चाहूंगा कि काम के बदले अनाज के अन्तर्गत, ग्रामीण अंचलों में जो मजदूर दिन भर मजदूरी करते थे, उसको यह दो किलो गेहूं दे देते थे। सिर्फ गेहूं दे देते थे, न उसके पास

नमक रहता था, न सब्जी रहती थी, न दाल रहती थी और न अन्य कोई चीज । मान्यवर, वह मजदूर उस गेहूं को गांव के सेठ-साहूकार के यहां औने-पौने दामों में बेचकर, दूसरा आवश्यक मंहगा सामान लेता था, तब पता चलता था कि अकेले भी उसे पूरी दाल रोटी नहीं मिल पाती । यह था काम के बदले अनाज योजना का रहस्य ।

मान्यवर, मैं कहना चाहूंगा कि विश्व के बड़े-बड़े अर्थ-शास्त्रियों ने, काम के बदले अनाज योजना के संबंध में, जो टिप्पणी की है, वह टिप्पणी मैं समर्थाभाव के कारण नहीं दे पा रहा हूं, उन्होंने कहा कि इससे मूर्खता भरी कोई दूसरी योजना नहीं होगी । यदि आप किसी मजदूर को गेहूं देते हैं, तो उस गेहूं को पिसाने के लिये उसे पैसा दें, नमक के लिये पैसा दें, सब्जी के लिये पैसा दें । यह नहीं हो सकता कि आप गेहूं देकर उसे गांव के सेठ साहूकारों के हाथ सौंप दें और वह वहां उस गेहूं को 8 आने किलो बेचकर नमक खरीदें दाल खरीदें । मान्यवर, इस तरह की योजनायें चलाने वाले यह विपक्ष के सम्मानित साथी कैसे मूल्यांकन कर सकते हैं इस सदन में सूखा राहत का ?

मान्यवर, मैं आपका ध्यान ले जाना चाहूंगा प्रदेश में तीव्र गति से हो रहे विकास कार्यों की ओर । मान्यवर, अभी माननीय रेवती रमण जी ने अपने भाषण में पेयजल की व्यवस्था और हैण्ड पम्प के बारे में कहा । मान्यवर, आज खुशी की बात है कि उत्तर प्रदेश में, इस शासन द्वारा जगह-जगह हैण्ड पम्प लगाने की योजना बनायी गयी । यह कहते हैं कि वह योजना कभी भी बनायी जा सकती है । मुझे ऐसा लगता है कि अब हम हर गांव को पीने का पानी दे सकेंगे और मैं कहना चाहूंगा कि यह जो विपक्ष सदस्य कह रहे हैं कि नवम्बर, दिसम्बर में क्यों शुरू हुआ ।

मान्यवर, उत्तर प्रदेश में जब वाटर लेविल सबसे नीचे पहुंच जाय, तब हैण्डपम्प लगाये जाने चाहिए । लेकिन, इनके अनुसार जुलाई, अगस्त में हैण्ड पम्प लगा दिये जाते और जब वाटर लेविल नीचे चला जाता, तो किसान यही कहता कि इसमें तो पानी ही नहीं आता । मान्यवर, हमनें जो योजनायें बनायी हैं, वह दीर्घ कालीन हैं । हमनें सिंचाई के साधनों को बढ़ाया है और सूखा राहत की राशि का सदुपयोग किया है। हम कच्चे रास्ते बना-बनाकर अगली बरसात में बह जाने के लिये उसे नहीं छोड़ सकते हैं । मैं अन्त में यही कहना चाहूंगा कि उत्तर प्रदेश शासन लाख-लाख बधाई का पात्र है कि पहली बार धन का सदुपयोग किया गया है और सूखा राहत कार्यों को सही ढंग से चलाया गया है ।

श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी–

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया..

(कई सदस्य एक साथ खड़े होकर बोलने के लिये मांग करने लगे)

(घोर व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष–

आप लोग बैठ जाइये, एक-एक के बाद बोल लीजियेगा ।

*श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी–

हां तो मानावर, मैं कह रहा था कि माननीय राजस्व मंत्री जी ने सूखा के संबंध में जो चर्चा प्रारम्भ कराई और जो पक्ष और विपक्ष के लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये, उसके बाद मैं यह कहने के लिये बाध्य हुआ हूं कि शायद सूखा पर जो चर्चा हो रही है, उससे निष्कर्ष निकलता है कि अगर सरकार को बधाई दी जा सकती है कि इन्होंने योजना बनायी। तो शायद बधाई इसलिए भी दी जा सकती है कि इन्होंने आंकड़े तैयार किये और शायद बधाई दी जा सकती है कि इन्होंने रुपये का खर्च दिया, लेकिन वह रुपया काम में आया या नहीं आया । इसलिए माननीय राजस्व मंत्री जी ने बड़े ही शायराना अन्दाज में इस चर्चा का प्रारम्भ किया । मैं केवल 4 पंक्तियों में इसकी समीक्षा करना चाहता हूं ।

"शोर है बहुत, बारात बहुत थोड़ी है, आग है बहुत, बरसात बहुत थोड़ी है, जी चाहता है कहने को, पर कैसे कहूं, बात है बहुत, करामात बहुत थोड़ी है ।" मान्यवर, इतनी चर्चा हो रही है और जो सरकार की तरफ से आंकड़े प्रस्तुत किये जा रहे हैं, उसके बाद यही कहना पड़ता है कि करामात बहुत थोड़ी है और मान्यवर, ऐसा मालूम पड़ता है कि सूखे की चर्चा को हमारे सत्ता पक्ष के लोगों ने गम्भीरता से नहीं लिया । मान्यवर, मुझे लगता है कि यह चाहते हैं कि किसी तरह से इसी प्रकार सूखा पड़ता रहे और यदि इनकी ऐसी भावना न होती, इनकी नीयत साफ होती तो कोई न कोई दीर्घकालीन योजना बनाई गई होती । जयसुखपाल हाथी कमीशन बैठा था, उसमें कहा गया था कि सूखा और बाढ़ हमारे प्रदेशों में रेगुलर चीज है, उसके लिये हमें पर-मानेन्ट निदान करना चाहिये ।

मान्यवर, यह चाहते हैं कि इसी तरह की आपदायें आती रहें । मान्यवर, लोग दम तोड़ रहे हैं, प्यासों मर रहे हैं । पीने के लिये पानी नहीं, खाने के लिये अन्न नहीं, और गांवों की स्थिति खराब हो रही है, लेकिन मान्यवर, यह उसको राजनैतिक हथकन्डे के रूप में उसका प्रयोग कर रहे हैं । मुझे याद आया कि एक जानवर होता है बैशाखनन्दन । यह केवल गर्मियों में ही तन्दुरुस्त होता है। मान्यवर, सूखे के नाम पर सत्तापक्ष में बैठे हुये लोग और उनकी पार्टी के लोग.. सूखे रूपी फसल की चराई कर रहे हैं । सूखे के नाम पर जो राहत दिया गया वह जनता तक नहीं पहुंच पाया किन्तु इनको हरा-हरा इसलिए नजर आ रहा है क्योंकि ये खुद चर रहे हैं । मान्यवर, जब मैंने कहा कि सूखे के नाम पर राजनैतिक हथकन्डे का प्रयोग कर रहे हैं तो एक सदस्य ने कहा कि हमको फाईनेन्सियल क्राइसिस रही है । मैं जानना चाहता हूं कि यह क्राइसिस क्यों रही और इसके कारण क्या थे और क्यों केन्द्र ने आपको पैसा नहीं दिया । मान्यवर, इसलिए केन्द्र ने पैसा नहीं दिया क्योंकि केन्द्र की यह रिपोर्ट है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने संसाधनों का खुला दुरुपयोग किया है । आपने 25 अरब रुपए की योजना भेजी थी, किन्तु केन्द्र ने केवल 15 अरब रुपए दिए, जबकि गतवर्ष 18 अरब रुपए दिये थे ।

मान्यवर, मैं कुछ सुझाव देना चाहता हूं । भ्रष्टाचार के संबंध में इधर-उधर दोनों पक्षों के माननीय सदस्यों ने जो कहा, मैं चाहता हूं कि माननीय नेता सदन इसके लिए एक आयोग का गठन कर दें । यदि वह आयोग नहीं बैठा सकते हैं तो कम से

*वक्ता ने भाषण का पुनरीक्षण नहीं किया ।

कम दोनों पक्षों के माननीय सदस्यों की एक समिति बना दें जो इस बात को देखेगी कि जो पैसा सूखे के नाम पर दिया गया था वह सही जगह पहुंचा कि नहीं, उसका सदुपयोग हुआ कि नहीं । दूसरा सुझाव देना चाहता हूं कि जो आपने कहा कि 31 जनवरी तक कर्जा दे देता है तो ठीक है वरना वसूली हेतु उत्पीड़न की कार्यवाही की जायेगी । इसलिए मेरी आपसे मांग है कि आप विभाग को निर्देश दे दें कि उत्पीड़न की कार्यवाही न की जाय ।

(मेजों की थपथपाहट) (व्यवधान)

*मुख्य मंत्री (श्री वीर बहादुर सिंह)–

मान्यवर, सूखे पर कई दिन से यहां पर चर्चा चल रही है । यह बात सही है कि इस वर्ष काफी सूखा पड़ा है और इससे प्रदेश को बहुत नुकसान हुआ है, लगभग 3500 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है । शायद इतना बड़ा सूखा पहले कभी नहीं पड़ा था । मान्यवर, सूखे से निपटने के लिए मुख्य चीज होती है, हमारी जो फसल है, उसे हम कैसे बचायें। इसलिए पहले जब सूखा पड़ता था, अकाल पड़ता था, तो हमारी जो यह गंगा और यमुना की नहरें बनाई गई हैं, वह इसी सूखे से निपटने के लिए बनायी गयी थीं । लेकिन उस समय का सोचना और आज के सोचने में बहुत अन्तर है । आज हमारे सोचने का तरीका इतना बदल गया है कि हम अपने उन्हीं खेतों में ज्यादा पैदावार करना चाहते हैं, इसलिए उनमें कई बार पानी देने की व्यवस्था हमें करनी पड़ती है । पहले तो फसल बचाने के लिए 1-2 बार पानी देना पड़ता था, अब ऐसा नहीं है । इसलिए इस बात का प्रयास किया गया कि उत्तर प्रदेश की हमारी जितनी नदियां हैं, जहां से हम सिंचाई कर सकते हैं, उनसे नहरें निकाल कर एक-एक बूंद पानी का इस्तेमाल किया जाय । आपको मालूम है कि जितनी नदियां हैं, सब पर नहरें बना दी गई है और खरीफ के लिए नहरें हम बना रहे हैं । रबी के लिए तो इतना पानी हमारी नहरों में नहीं रहा, लेकिन खरीफ के लिए इस बात का प्रयास किया गया है कि नहरें बनाकर खरीफ की फसल को बढ़ाया जाय ।

जब सूखा पड़ा हमारा प्रयास रहा कि जगह-जगह सिंचाई करें, नहरें पूरी क्षमता से चलें, ट्यूबवैल पूरी क्षमता से चलें । जो निजी बोरिंग है, उसका पूरा इस्तेमाल हो। यही प्रयास होते हैं, जो सूखे से बचाने के लिये कर सकते हैं । इसके लिये पूरा प्रयास किया गया, ट्यूबवैल की मरम्मत के लिये, नहरों की सफाई के लिये पैसा दिया गया और यह कहा गया कि जहां आवश्यकता हो, पैसा की कमी के कारण सिंचाई में कठिनाई न हो । खरीफ में नहरों से जो सिंचाई होती थी, 65 हजार हैक्टेयर भूमि पर अतिरिक्त सिंचाई हुई है । इससे जाहिर है कि जो प्रयास किया गया है, उससे जितनी सिंचाई करते थे, उससे ज्यादा सिंचाई की है ताकि और भी ज्यादा फसल बचा सकें । दूसरे, जो निजी बोरिंग थी, निजी साधन थे या नलकूप थे, 4–6 घण्टे चलते थे, पूरी क्षमता से उसका इस्तेमाल नहीं कर सकते थे, इसलिये हमने कहा कि उद्योग में भले ही कटौती हो लेकिन किसान को अधिक से अधिक 10 घण्टे से 18 घण्टे तक बिजली दी गयी और यही कारण है कि किसानों ने अपने साधनों का पूरा इस्तेमाल किया और जो राजकीय नलकूप थे, उनकी क्षमता ड्योढ़ी हो गयी, 50 प्रतिशत

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

बढ़ गयीं । खरीफ में जितनी सिंचाई होती थी, उन्हीं नलकूपों के 50–60 घण्टे बढ़ गये । अगर यह नहीं होता तो घण्टे कैसे बढ़ गये ।

इसी प्रकार यह प्रयास किया गया कि किसानों को क्या सुविधायें दें, इसके लिये जो भी वसूली थी बन्द कर दी गयी ताकि उन्हें दिक्कत न हो । यह कहा गया कि हमें ज्यादा से ज्यादा किसानों को सुविधायें देकर उनकी फसल को बचाने में मदद करें, इसके लिये सरकारी साधनों का और निजी साधनों का पूरा उपयोग किया गया । किसी भी सूखे का सामना करने के लिये यही तरीका होता है । जब सूखा पड़ता है तो पीने के पानी की समस्या पैदा हो जाती है । उसकी समस्या जब पैदा हुई तो जो हमारा लक्ष्य था, उस लक्ष्य से ज्यादा 127 करोड़ रु0 पीने के पानी पर खर्च करने के लिये कहा गया जिससे जल्द से जल्द इस समस्या का निवारण हो सके । इसके लिये 32598 इण्डिया मार्क-2 हैण्डपम्प लगाये गये । यह भी किया गया कि जो पुरानी टंकी लगी हुई हैं, उनकी कमियों को ठीक किया जाय, जहां पर पानी हैण्ड पाइप द्वारा नहीं पहुंच सकता है, वहां पर भी व्यवस्था की गयी ।

पीने के पानी के बारे में कहना चाहता हूं कि हमारे प्रदेश में यह शिकायत नहीं आ रही है कि किसी आदमी के सामने पीने की समस्या हो गयी हो । बुन्देलखण्ड, आगरा, मेरठ, मुरादाबाद, बरेली और एरियाज में भी बहुत जगह सूखे का असर पड़ा है लेकिन एक बात मैं कह सकता हूं कि कोई एरिया नहीं है जहां पीने के पानी के बिना कोई आदमी रह गया है। हमने कहा है कि कोई कमी हो तुरन्त व्यवस्था की जायगी, किसी भी व्यक्ति को पीने के पानी के बगैर नहीं रहने देंगे ।

यह कहा गया है कि पैदावार जो हुई है, आप देखेंगे कि लक्ष्य जो था, उसका करीब 72-73 प्रतिशत पूरा कर पाये हैं । अगर हम चुनौती का सामना नहीं करते तो लक्ष्य की 72-73 प्रतिशत पैदावार नहीं कर पाते और करीब 82 लाख टन पैदावार हुई है । यही कारण है कि जो पैदावार हुई प्रदेश में, अपने प्रदेश के लोगों की जितनी आवश्यकता है, पूरा कर लिया साथ ही साथ 30–35 प्रतिशत ज्यादा हुई है, जो दूसरे प्रदेशों में जा रही है ।

सूखे का सामना बहुत से प्रदेश कर रहे हैं, आप गुजरात और राजस्थान की बात करते हैं । वहां के लोग तो अपने जानवरों के लिये भी पैदावार नहीं कर पाये, हमारे यहां से उनके यहां गल्ला जा रहा है, खाद्यान्न जा रहा है । तो हम राजस्थान और गुजरात की तुलना करें, यह हम नहीं कर सकते हैं । हम चाहते हैं कि हमारे यहां कोई कमी न होने पाये, इसलिये हमने प्रयास किया है जिसका यह परिणाम है । अभी कुछ माननीय सदस्यों ने कहा कि उत्तर प्रदेश ने उतना पैसा नहीं लिया जितना कि राजस्थान और गुजरात ने लिया है । आप देखें कि इतना पैसा लेने के बावजूद भी आज राजस्थान और गुजरात में जानवरों के लिये चारा नहीं है, पीने के लिये पानी नहीं है । वहीं आज हमारे प्रदेश का एक भी व्यक्ति यह नहीं कह सकता है कि हम बेकार हैं, हमारे पास काम नहीं है ।

(व्यवधान)

मान्यवर, इस संबंध में हमारी जो स्कीम है राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना की, एन0 आर0 ई0 पी0 स्कीम के अन्तर्गत हमारा लक्ष्य 155 करोड़ 94 लाख का है । आर0 एल0 जी0 पी0 के अन्तर्गत 154 करोड़ 22 लाख का लक्ष्य है जिसके लिये 310

करोड़ 16 लाख रु0 खर्च हो चुका है । इसमें दस करोड़ लोगों को रोजगार मिलने के के लिये व्यवस्था की गयी है । हमने कहा है कि जहां कहीं भी लोगों को काम न मिले वहां नये काम शुरू कर दिये जायं । जिलाधिकारियों को यह आदेश दे दिये गये हैं कि जहां आवश्यकता हो वहां नये काम शुरू किये जायें । आज भी हमारे पास पैसा है । जहां कहीं भी जिलाधिकारी लिखते हैं वहां पैसा भेजा जा रहा है, पैसे की कमी हम नहीं होने देंगे ।

अब देखना यह है कि काम होना चाहिये इसीलिये ब्लाक स्तर पर ये कमेटी बनायी गयी है जिसमें हमारे सभी माननीय सदस्य होंगे, सांसद होंगे और साथ ही ब्लाक प्रमुख और जिला परिषद् के सदस्य होंगे । अब आपके पास मौका है कि आप लोग अपने-अपने क्षेत्रों में देखें कि काम हो रहा है या नहीं । जहां कहीं भी कमी हो, कार्य के इम्पलीमेन्टेशन में आप देखिये कि कहीं कमी न होने पाये, यदि किसी प्रकार की कोई कमी हो तो आप बतलायेंगे तो हम उसको दण्डित करने की कार्यवाही करेंगे और जो भी गलत कार्य करेगा उसके खिलाफ सख्ती से कार्यवाही की जायेगी ।

मान्यवर, भारत सरकार से हमने मांग की थी 1314 करोड़ रु0 की और वहां से हमको मिला है 148 करोड़ रु0 । केन्द्र ने हमको 148 करोड़ रुपया दिया है और हम उसको खर्च कर रहे हैं इसके अतिरिक्त हम अपने संसाधनों से भी पैसा खर्चा कर रहे हैं । उत्तर प्रदेश में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जिसके पास काम न हो । हम सबको काम देंगे ।

श्री शतरुद्र प्रकाश–

कब तक के लिये काम देंगे ?

श्री वीर बहादुर सिंह–

जब तक के लिये सूखा है तब तक के लिये । जब तक के लिये सूखा रहेगा हमारा यह प्रयास रहेगा कि हर व्यक्ति के पास काम हो, कोई बेकार न हो।

मान्यवर, यहां सूखे की बहस में माननीय सदस्यगण बजट की चर्चा कर रहे थे कि कहां से पैसा आया, कहां की योजना है आदि-आदि । मैं उनसे कहना चाहता हूं कि जब बजट सेशन होगा तब यह बात होगी अभी तो हम सूखे के बारे में ही बात कर रहे हैं । आज सूखे के बारे में हम बात कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश में जो किसी प्रकार की वित्तीय अनियमितता नहीं होनी चाहिए । इसका हर प्रकार से प्रयास किया जायेगा । जो हमारे कर्मचारी हैं, उनका जो भार पड़ा है वह बहुत बड़ा भार है और सूखे का असर तो पड़ा ही है और बहुत सी चीजें जो सरकार के सामने आयी हैं, उनका सामना करने के लिये खर्च काफी बढ़ गया है और हम देख रहे हैं कि इसको किस प्रकार से ठीक किया जाये । हम इस चीज का प्रयास कर रहे हैं कि कोई कमी न आने पाये ।

मैं इस समय आपको यह भी बताना चाहता हूं कि हमने एक स्कीम चलाई है कि जो बेसहारा स्कीम है। पहले शिकायत आती थी कि जो लोग गरीब हैं, अंधे हैं, पंगु हैं, जिनका कोई सहारा नहीं है, उनके खाने की कोई व्यवस्था नहीं है, तो ऐसे लोगों के लिये यह स्कीम चलाई गयी है । ऐसा इन्तजाम किया गया है कि 10 किलो राशन उनको दिया जायेगा और साल भर में एक बार कपड़ा दिया जायेगा ।

मान्यवर, यह बहुत बड़ा काम हुआ है, जो शिकायत आती थी, कि जो गरीब हैं, जो परेशान हैं, उनको सहायता नहीं पहुंचती थी, तो ऐसे लोगों के लिये यह स्कीम चलायी गयी है और उनको इससे फायदा हुआ है । यह जो काम किया गया है, इससे उनको फायदा हुआ है । मैं कहना चाहता हूं कि अभी नेता विरोधी दल बोल रहे थे उन्होंने दो बातें कहीं हैं कि जो स्कीम है उसका पैसा किसी और मद में डाल दिया गया है । मैं कहना चाहता हूं कि जो स्कीम है, उसको ठीक प्रकार से चलाया जा रहा है । जिला प्लान जो है, उसको हम चला रहे हैं । जहां तक संसाधन जुटाने की बात थी, सूखा पड़ने से उतने संसाधन नहीं जुटाये जा सके, जितने कि जुटाने चाहिए थे ।

आप जानते हैं कि सूखा पड़ा है और लोगों में क्षमता नहीं है, तो इसीलिये हमने यह निश्चय किया है कि वसूली नहीं करेंगे । जो अक्षम है, जिसमें क्षमता नहीं है, उससे वसूली नहीं करेंगे । इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि हमारा यह प्रयास होगा कि जो हमारे संसाधन हैं, उनका सही उपयोग हो और जो प्लान परिव्यय है, वह ठीक से हो, हम यही कोशिश करेंगे । मान्यवर, जहां तक सहत के कामों का प्रश्न है वह हम कर रहे हैं । कही पर राशन की कमी नहीं, इसके लिये हमने यह किया है कि 40 हजार सस्ते गल्ले की दुकानें खोली हैं और हर दुकान पर 10 कुन्तल से कम का गल्ला नहीं रहेगा । इतना गल्ला रहेगा, जिसको खरीदना हो खरीदे और जिसे न खरीदना हो न खरीदे, लेकिन व्यवस्था रहेगी ।

मान्यवर, अभी कुछ सदस्य बोल रहे थे कि डीजल नहीं मिल रहा है । डीजल की चर्चा की गयी । मेरे सामने डीजल की कमी तो आयी नहीं, कैसे इसकी चर्चा कर दी गयी । हो सकता है कि थोड़े बहुत समय के लिये हो गयी हो, लेकिन डीजल की कमी नहीं है । पहले किसी समय में थी, तो वह कमी आने वाली नहीं है। 1979 में यह स्थिति थी कि दो-दो दिन तक लाइन लगानी पड़ती थी, वह समय नहीं आने वाला है और किसी तरह की परेशानी नहीं होगी । मैं कह रहा हूं कि हर प्रकार से कोशिश की जायेगी और सूखे से निबटा जायेगा और इसके लिये प्रयास होगा कि लोगों को फायदा पहुंचाने के लिये ज्यादा से ज्यादा काम हो ।

मान्यवर, इससे काफी फायदा होने वाला है. तो मान्यवर, मैं यह कहना चाहता हूं कि सदस्यों ने जो सुझाव दिये हैं. मैं उनको देखूंगा और कोशिश करूंगा कि कहीं पर कोई दिक्कत न हो, जहां पर कोई दिक्कत होगी, उसको दूर किया जायेगा। मान्यवर, हमारी यही कोशिश है कि जो सुझाव आये हैं सूखे और राहत के बारे में और जो कमियां बतायी गयी हैं, उनको देखा जायेगा, जिससे तेजी से काम हो ।

नेता विरोधी दल (श्री सत्यपाल सिंह)–

मान्यवर, हम भरोसा करते थे कि सूखे पर चर्चा समाप्त होने के बाद माननीय मुख्य मंत्री जी जवाब देंगे तब हमें कुछ मौका मिला । लेकिन उन्होंने बीच में ही जवाब दे दिया . . .

श्री वीर बहादुर सिंह–

अभी राजस्व मंत्री जी पूरा जवाब देंगे ।

श्री सत्यपाल सिंह–

वह तो देंगे ही । लेकिन उत्तर प्रदेश के आप राजा हैं । आपके जवाब से ऐसा लगा कि सब जगह हरा ही हरा है । जैसे सावन के अंधे को हरा ही हरा दिखाई देता है । मान्यवर, मुख्य मंत्री जी ने दो अजीबो गरीब बाते कहीं हैं । एक बात तो उन्होंने यह कही है कि भू-राजस्व की वसूलियाबी बन्द कर दी है । मैं कहना चाहता हूं कि आपने बन्द नहीं की है, स्थगित कर दी है . . . (व्यवधान)

श्री बीर बहादुर सिंह–

रोक दी है ।

श्री सत्यपाल सिंह–

उन्होंने कहां कि वसूलियाबी की कार्यवाही स्थगित कर दी है ।

श्री उपाध्यक्ष–

आप बाद में स्पष्टीकरण मांग लीजिये । अभी आपका भाषण होगा ।

श्री वीर बहादुर सिंह–

हमने कहा कि रोकी है ।

श्री सत्यपाल सिंह–

मान्यवर, मैं दो रसीदें दिखा सकता हूं । वह इसी महीने की रसीदें हैं जहां उत्पीड़न की कार्यवाही से वसूली की गई है । दूसरी बात आपने कहा कि उत्तर प्रदेश में ऐसा एक आदमी भी नहीं है जिसके पास काम न हो । उत्तर प्रदेश के अन्दर बेहद बेरोजगारी की समस्या है आप . . .

श्री वीर बहादुर सिंह–

काम करने वालों की कमी नहीं है ।

श्री सत्यपाल सिंह–

मान्यवर, मैं सवाल पूछना चाहता हूं । आपने जो कुछ भी कहा मैं आपके माध्यम से जानना चाहता हूं कि क्या उत्तर प्रदेश की जनता पर जो भू-राजस्व 12 करोड़ रुपया है जिसको आपने स्थगित किया है, उसी प्रकार से सिंचाई और विद्युत बिलों का पैसा है । क्या यह पैसा जिसको अगर आप माफ कर देते तो जनता को प्रत्यक्ष लाभ होता । उसमें कमीशन बाजी अधिकारी नहीं कर पायेंगे । तो क्या आपकी हैसियत है कि जो 141 करोड़ रुपया आपको केन्द्र से मिला है, किसानों को प्रत्यक्ष लाभ देने के लिए इस आवपाशी, भू-राजस्व और विद्यार्थियों की फीस माफ करायेंगे ?

श्री वीर बहादुर सिंह–

मैं एक चीज कहना चाहता हूं । नुकसान के बारे में शायद आपको मालूम भी है । बिजली जो हमने किसानों को गांवों में दी है उसमें कितना बड़ा नुकसान हमें हुआ है। यह हमने डाइरेक्ट फायदा ही किसानों को दिया है। वह बिजली किसानों को 10/12 पैसा पड़ी है। इससे करोड़ों रुपये का नुकसान हो गया । हमारा प्रयास है कि किसानों को जितना ज्यादा हम फायदा पहुंचा सकें, उतना फायदा पहुंचायेंगे ।

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त–

मान्यवर, मैं माननीय मुख्य मंत्री जी को बधाई देना चाहता हूं । . . (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष–

अभी कोई स्पष्टीकरण नहीं हो रहा है ।

(श्री मूलचन्द्र का नाम पुकारे जाने पर)

श्री किरन पाल सिंह–

मान्यवर, एक व्यवस्था का प्रश्न है। मान्यवर, निवेदन यह है कि आज सुबह जो ईश्यू उठा था और जो कल नियम 56 में भी उठाया गया उसके लिए कहा गया था कि 4 बजे उसके सम्बन्ध में घोषणा होगी। मैं माननीय अध्यक्ष के कक्ष में 3 बजे से पौने चार बजे तक बैठा रहा, वहां पर कोई नहीं आया । अब 4 बज गये हैं और सरकार को उस पर जवाब देना चाहिए। मुख्य मंत्री जी बीच में भाषण करने लगे जिससे उनकी थोड़ी बहुत बात अखबारों में पहुंच जाय। चार बज गये हैं। हम सब समझते हैं। अब आप उस विषय पर अपना निर्णय दे दीजिये।

श्री उपाध्यक्ष–

मैं तो यहां बैठा हूं, मुझे पता भी नहीं है।

श्री किरन पाल सिंह–

सारे हाउस के सामने यह बात हुई थी।

श्री उपाध्यक्ष–

नेता सदन, नेता विरोधी दल, संसदीय कार्य मंत्री से बात हुई थी। अध्यक्ष जी भी उस समय यहां पर बैठे थे। अध्यक्ष जी के चैम्बर में होनी थी।

श्री लोकेन्द्र दत्त सकलानी–

उपाध्यक्ष महोदय, सूखे के कारण हमारे पर्वतीय क्षेत्रों में चारे की बहुत बड़ी कमी हो गयी है। तो जैसे वन विभाग लकड़ी के डिपो रखता है उसी तरह से चारे की भी व्यवस्था करे क्योंकि चारे के अभाव से वहां कई पशु मर गये हैं।

श्री शतरुद्र प्रकाश–

मान्यवर, वह व्यवस्था के प्रश्न का क्या हुआ, 4 बजे निर्णय होना था। अध्यक्ष जी के कमरे में यह बात हुई थी।

श्री उपाध्यक्ष–

मैं तो यहां बैठा हूं।

श्री मूल चन्द–

मान्यवर, हम लोगों के समझ में नहीं आ रहा है कि यह सरकार क्या कर रही है। हमारे देश में 4 किस्म के आदमी हैं एक मन बढ़ू दूसरा मन छोटू तीसरा धन बढ़ू और चौथा धन छोटू। तो यह सब मन बढ़ू और धन बढ़ू हैं (व्यवधान)।

मान्यवर, अपने क्षेत्र की तरफ माननीय मुख्य मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। वसूली के संबंध में मान्यवर, परसों के दैनिक जागरण में छपा है कि 31 जनवरी तक जो किसान बकाया जमा कर देंगे तो उनको 10 प्रतिशत कलेक्शन चार्जेज माफ कर दिये जायेंगे और अगर 31 जनवरी तक जमा नहीं किया तो वारंट, कुर्की और हर प्रकार की कार्यवाही की जायेगी।

सूखा के संबंध में मुख्य मंत्री जी जब बनारस गये थे तो मैंने उनसे हरिजनों के बारे में जिक्र किया कि 31 हरिजनों को लोन मिला नहीं लेकिन उनके नाम रिकवरी नोटिस जा रही है। आपके सामने आपके अधिकारियों ने स्पष्ट बताया कि इसी आरोप में वहां के बैंक मैनेजर सस्पेंड हैं और उनके खिलाफ कार्यवाही हो रही है। तो मैंने आपसे पूछा था कि क्या उनसे अब वसूली नहीं होगी तो आपने कहा था कि नहीं होगी। लेकिन मैं बताना चाहता हूं कि उनसे वसूली हो रही है उनको नोटिस आ गयी है।

राजस्व राज्य मंत्री (श्री गौरी शंकर)–

आप लिख कर दे दीजिये।

श्री मूल चन्द–

तो जिनकी सारी फसल नष्ट हो गयी हैं उनसे वसूली हो रही है। मैं एक किसान हूं और किसानी करता हूं मैंने पम्पसेट लिया है तो उसकी वसूली की नोटिस आई है। माननीय मंत्री जी किसान के बेटे होंगे लेकिन वह किसानी नहीं करते हैं, वह तो वही किस्सा है बाप मरे अधियारे में बेटे का नाम पावर हाउस। तो किसान को क्या परेशानी है वह यह नहीं जानेंगे। आपने जो वायदा किया थी, उसके मुताबिक आप वसूली स्थगित करायें कम से कम अप्रैल तक स्थगित रहे जब उसकी खरीफ की फसल हो जाय तब वसूली करें। हमारे यहां डी0 आर0 डी0 ए0 स्कीम के अन्तर्गत 23 लाख रु0 ब्लाक को मिला, आप कहते हैं कि और अधिक धन देंगे लेकिन हमारे यहां कलेक्टर कह रहे हैं कि पैसा खत्म हो गया केवल 17 लाख रु0 राहत कार्य के लिए मिला राहत कार्यों के लिए ठेकेदारी प्रथा आप समाप्त करें। ठेकेदारी प्रथा में होता क्या है कि जहां सड़क बनती है उसमें वह 6 इंच माटी फिंकवाता है जैसे हमारे यहां 6 इंज माटी फेंकी और ड़ेढ़ फिट के भाव से चार्ज कर लिया गया है। इसी तरह से सस्ते गल्ले की दुकानों का हाल है आप दुकानदार को 6 रु0 प्रति बोरी कमीशन देते हैं लेकिन उसे 10 रु0 पास कराई के, 10 रु0 स्टेशन तक ढुलाई के चार्जेज और दो रुपया पल्लेदार के और 50 रु0 एस0 डी0 ओ0 को देने पड़ते हैं तो वह कहां से देगा ? टाउन एरिया और नगरपालिका में सीनियर इंसपेक्टर को दो सौ, ढाई सौ और तीन सौ और इसी तरह से गांवों में डेढ़ सौ दो सौ रु0 देना पड़ता है 50 रुपये दरोगा लेता है तो कोटा होल्डर जिनको 6 रुपये प्रति बोरा दिया जाता है वह सारा सामान ब्लैक में बेच देता है और गरीबों को नहीं मिल पाता है। इसलिए मैं चाहूंगा कि इसकी जांच आप करायें। मान्यवर, अधिकांश राशन कार्ड की गरीबों के लिए कोई व्यवस्था नहीं है इसकी व्यवस्था कराई जाये।

मान्यवर, हमारे यहां कालीन का उद्योग होता है, जो विदेशी करेंसी अर्जित करता है, उससे गरीबों को मजदूरी मिलती है। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष–

आपका समय समाप्त हो गया। आप बैठ जायं।

(व्यवधान)

श्री काशी सिंह ऐरी–

मान्यवर, मेरा व्यवस्था का सवाल है।

(व्यवधान)

श्री मूल चन्द–

मान्यवर, सरकार ने एक आदेश कर दिया है जिसके अनुसार 14 वर्ष के बालक मजदूरी का काम नहीं करेंगे। हमारे यहां कालीन उद्योग में 14 साल के बच्चे भी गरीबों के काम करते हैं लेकिन इस आदेश से उनको मजदूरी नहीं मिलेगी . . .

(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष–

श्री मूल चन्द्र जी आपका समय पहले ही समाप्त हो गया है इसलिए अब आपका कुछ नहीं लिखा जायेगा । (व्यवधान)

श्री काशी सिंह ऐरी जी आप व्यवस्था का प्रश्न बाद में उठा लेंगे, मैंने श्री राजेन्द्र शर्मा को बुला लिया है इसलिए उनको बोल लेने दें। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र शर्मा—

मा0 उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने सूखे जैसे महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा में बोलने का समय दिया ।

मान्यवर, स्वर्गीय राम मनोहर लोहिया ने अपनी किताब में लिखा है कि जिस प्रकार इल्जाम और सफाई के दो पाटों के बीच सच्चाई पिस जाती है। इसी प्रकार असत्य आंकड़े देकर इल्जाम लगाकर विरोध पक्ष के नेता काम कर रहे हैं।

मान्यवर, जब यह भीषण सूखा इस प्रदेश में पड़ा तो प्रदेश और सदन चिंतित था लेकिन जिस प्रकार सरकार ने उसका मुकाबला करने के लिए योजनायें बनाई वह प्रशंसनीय है। हम समझते थे कि प्रतिपक्ष के नेता जब बोल रहे थे तो जो सुझाव देंगे और उसी के साथ सरकार ने जो बड़े काम किये हैं उनकी प्रशंसा भी करेंगे लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया जो दुर्भाग्यपूर्ण बात है।

मान्यवर, उत्तर प्रदेश में आलू के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने आलू उत्पादकों को जो अनुदान और छूट दिया इससे आलू का उत्पादन निश्चित रूप से बढ़ेगा। मान्यवर, इसी के साथ रबी की फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए खाद और प्रमाणित बीज आदि की जो सरकार ने सुविधायें दीं उससे मेरे विचार में आने वाली फसलें जो पैदा होंगी वह इस बात का सबूत होंगी कि सूखे का शासन द्वारा जबरदस्त मुकाबला किया गया है। इस प्रकार से सरकार ने जो काम किये हैं वह बहुत ही प्रशंसनीय है।

मान्यवर, श्री गुप्ता जी ने जो पहले कहा था कि ठेकेदार आजकल तिरंगा झंडा लगाये घूमते फिरते हैं, तो वह उनको भ्रम है। इस प्रदेश का ठेकेदार नहीं बल्कि वह प्रदेश के मजदूर हैं जो कांग्रेस के हिमायती रहे हैं, इसीलिए तिरंगा झंडा साइकिलों और हाथों में सदैव लेकर घुमते रहते हैं और वह झंडा लिये सड़क पर चल रहे होंगे, वह ठेकेदार नहीं होंगे। उन्होंने सदैव इस तिरंगे झंडे को बुलन्द किया है।

मान्यवर, उत्तर प्रदेश सरकार को हम सबको बधाई देनी चाहिए थी । कुंवर रेवती रमण जी बिजली के मंत्री रहे हैं, उन्होंने बिजली उत्पादन और सप्लाई व्यवस्था की शिकायत करके चर्चा की, किन्तु मैं उनसे कहना चाहता हूं कि यह बिजली विभाग के आंकड़े ही हैं जिनके चलते पिछले 10 वर्षों में जितनी अच्छी तरह बिजली

वहां हमारे जनपद में नहीं मिली इस वर्ष मिली है । पिछले 10 वर्षों के बाद वहां पर बिजली अब नियमित रूप से आ रही है और उसके कारण से किसानों को जो फसल बढ़ी है, उसका श्रेय बिजली विभाग को और इस सरकार को है और उसके लिए मैं उसे बधाई देना चाहता हूं । अब मैं अपने जनपद मेरठ की कुछ समस्याओं की ओर भी आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं । मेरठ जनपद में बहुत से स्टेट ट्यूबवेल्स खराब थे, लेकिन 8 को ही पैसा दिया गया है, जबकि 20 स्टेट ट्यूबवेलों के सुधार के लिए पैसा देने की बात कही गई थी और यह सही बात है वहां पर पैसा देने की जरूरत भी थी । वहां पर 3 विकास खण्ड फ्री बोरिंग के लिए घोषित किये गये थे (व्यवधान) किन्तु मेरी जानकारी है कि फ्री बोरिंग रोक दी गई है । इसके अलावा मैं निवेदन करूंगा कि मेरठ जनपद एक ऐसा क्षेत्र है, वहां पर कृषक का मूल धन्धा खेती है (व्यवधान) वहां फ्री पाईप दिये जाएं । वहां पर जो सरकार की ओर से सब्सिडी खाद और बीज पर दी गई है, मेरी राय में वह कम है । अनुदान की राशि बढ़ाई जाये और जो बीज किसानों को दिया जाता है उसकी कीमत बाजार भाव से बहुत ज्यादा होती है । किसान बीज खरीद नहीं पाता है । बीज की कीमत बाजार भाव से केवल 10 प्रतिशत ज्यादा रखी जाय । किसानों के नलकूपों की बिजली के बिलों के भुगतान पर पेनाल्टी न ली जाय तथा नहरों को तीन सप्ताह में एक सप्ताह के लिये अवश्य चलाया जाये । इसके अलावा मान्यवर, काली नदी में मेडिकल कालेज से अतराड़े तक दो-दो कि0मी0 के फासले पर बन्धे बनाए जायं जिससे किसानों को अधिक सिंचाई की सुविधा मिल सके । जो किसान सीधे-सीधे सूखे से प्रभावित हो रहा है, उसको अधिक सहायता देने के लिए मैं निवेदन करता हूं । इतना कहते हुए, किस साहस और चुनौती के साथ हमारी सरकार ने इस सदी के सबसे भयंकर सूखे का सामना किया है और जनता को कोई तकलीफ नहीं होने दी है, उसके लिए वह बधाई के पात्र हैं ।

श्री भोपाल सिंह–

इन्होंने जो कहा है कि काम ठीक चल रहा है और सब ठीक है, इनसे पूछा जाए कि इनके कितने भाई और यह ठेके में काम कर रहे हैं, उनका कमीशन ठीक से चल रहा है या नहीं (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र शर्मा–

चूंकि मेरा नाम लिया गया है, इसलिए मैं स्पष्टीकरण देना चाहता हूं, चुनौती देना चाहता हूं मेरा दूर-दराज का भी कोई रिश्तेदार हो (व्यवधान) मैं इस्तीफा देने को तैयार हूं ।

(घोर व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष–

इससे कुछ फायदा नहीं है । इस तरह बोलने से लिखा कुछ नहीं जाएगा (व्यवधान) एक साथ सब बोल नहीं सकते हैं, नम्बर से आएगा ।

श्री काशी सिंह ऐरी–

अभी कहा गया है कि 72-73 प्रतिशत तक फसल हुई है, उसके संबंध में मैं कहना चाहता हूं और मैं जानकारी में लाना चाहता हूं सूखा क्षेत्र घोषित करने

के लिए आवश्यक है कि वहां पर 60 प्रतिशत (व्यवधान) 50 प्रतिशत से अधिक नुकसान हो । जब यही बात पिथौरागढ़ के लिए पूछी थी तो उसने कहा था कि कि सूखाग्रस्त इसलिए नहीं घोषित किया गया था कि 50 प्रतिशत से कम नुकसान हुआ है । वहां दो तहसीलें–धारचूल्य और मुंशियारी है । मेरी जानकारी है जब तक 50-60 प्रतिशत से ज्यादा नुकसान नहीं होता है सूखाग्रस्त घोषित नहीं होता है, तो आपने जो 72-73 प्रतिशत पैदावार का लक्ष्य पाने की बात कही है, तो उसको देखते हुए सूखे की तो कोई बात है नहीं और इस पर चर्चा कराना भी आवश्यक नहीं है ।

श्री वीर बहादुर सिंह–

यही माननीय सदस्य की भ्रम है । किसी एक क्षेत्र में फसल ज्यादा हो गई, कहीं परसन्टेज ज्यादा हो गया और कहीं 50 परसेन्ट और कहीं 50 परसेन्ट से कम और कहीं बुआई ही नहीं हो पाई है । इसलिए पूरे प्रदेश का एवरेज निकाला गया है और 57 में से 55 जिलों में सूखा पड़ा है और इन 55 जिलों में ही सूखा राहत कार्य किया जा रहा है ।

(व्यवधान)

श्री दवतादीन–

मान्यवर, मैं अपने विधान सभा क्षेत्र के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूं . . .

(व्यवधान)

श्री भोपाल सिंह–

मान्यवर, एक इधर का सदस्य बुलवायें एक उधर का सदस्य बुलवायें ।

श्री उपाध्यक्ष–

मैंने देवतादीन जी को बुल्ला लिया है । आप सब बैठें वह भी विधायक हैं।

श्री देवतादीन–

मान्यवर, मैं अपने विधान सभा क्षेत्र के बारे में बताना चाहता हूं कि मेरे क्षेत्र में सूखा राहत कार्य चल रहा है । पूरा कार्य ठेकेदारी पर चल रहा है ।

(व्यवधान)

मान्यवर, 16 तारीख को यह गये थे, तो मैंने 16 तारीख को जाकर अपने क्षेत्र में देखा और दो तीन सड़कों का निरीक्षण किया और मजदूरों से पूछा कि कैसा काम हो रहा है तो उन्होंने कहा कि ठेकेदार काम करवा रहे हैं. (व्यवधान) जो काम करा रहे थे जब मैंने उनसे इस बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि ठेके पर काम नहीं करा रहे हैं ।

(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष–

आप लोग बैठ जाएं । हर पार्टी के लोग बोलेंगे ।

*श्री देवतादीन–

दूसरी बात मान्यवर, मैं यह कहना चाहता हूं कि मेरे क्षेत्र में जो सूखा राहत का पैसा ट्यूबवेल के लिए कच्ची नालियों के लिए दिया गया है, उस पैसे से मेरे क्षेत्र

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

में कहीं कच्ची नाली नहीं बनी है । तीसरी बात मैं बताना चाहता हूं कि पिछले साल हमारे यहां मार्च में ओला पड़ा । वहां के काश्तकारों ने पैसे की गड़वड़ी के बारे में एक दरख्वास्त दी ।

मान्यवर, जब शिकायत की जांच हुई तो पता चला कि घपला हुआ है । इस बारे में मैंने 4 चिठ्ठी लिखीं हैं कि जिन्होंने गलत बांटा है उनके विरुद्ध कार्यवाही होगी ? लेकिन अधिकारियों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं हुयी है । दूसरे मैं यह बताना चाहता हूं कि वहां लोगों को जो 200 रुपये दिये गये हैं वह वसूल किये जा रहे हैं । यह सूखा राहत की बात है । दूसरे मैं यह बताना चाहता हूं कि हमारे क्षेत्र में जो 12-12 नलकूप दिये गये हैं उनके बारे में यह बताया गया है कि वह वहां पर लगाये जायेंगे जहां नदी के करीब पानी रहता है ।

मान्यवर, जहां पर सूखा है वहां पर नल नहीं लगाये जा रहे हैं और जहां पर सूखा नहीं है वहां पर नल लगाने का कार्य हो रहा है । तो मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यह नल जो पानी पीने के लिये भेजे गये हैं वह नल वहां लगायें जाने चाहिये जहां पर पीने के पानी की असुविधा है । लेकिन उनका कहना है कि नल नदी जहां करीब है वहां पर लगाये जायेंगे जो मान्यवर, उचित नहीं है । मेरा क्षेत्र अधिकतर गांजर का क्षेत्र है । तो यह मैं आपकी जानकारी में लाना चाहता हूं, अगर नल लगाये जायें तो वहां लगाये जायं जहां सूखा है । दूसरी बात मैं आपकी जानकारी में लाना चाहता हूं कि हमारे यहां ट्यूबवेल लगाये गये हैं उनमें अधिकतर खराब हैं । हमारे क्षेत्र में 10 ट्यूबवेल एसे हैं जो बिगड़े हुये हैं । इन शब्दों के साथ मैं आपको धन्यवाद देता हूं ।

*श्री फसीउर्रहमान (उर्फ मुन्नन खां)–

मान्यवर, मैं आपका ध्यान इस उत्तर प्रदेश के सबसे बड़े और सबसे पिछड़े जनपद गोण्डा की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। उत्तर प्रदेश का गोण्डा जिला हमेशा सरकार के मानचित्र से बाहर रखा गया है, उसकी मिसाल आपको देखने को नहीं मिलेगी कि अभी तक गोण्डा जनपद में बुकिंग गैस की कोई व्यवस्था नहीं, है, टी0 वी0 टवर की कोई व्यवस्था नहीं है, डीजल की वहां पर कोई व्यवस्था नहीं है। माननीय मुख्य मंत्री जी चल कर गोण्डा जनपद को देखेंगे, तो उन्हें खुद पता लग जायगा। वहां पर 4-5 साल से किसान पूरे जनपद में डीजल के लिए त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। 8-8 दिन तक पेट्रोल पम्प पर लाइन लगा कर खड़े रहने के बाद भी डीजल नहीं उपलब्ध होता है। जनपद में 25 प्रतिशत खेतों की बोवाई नहीं हो पाई । जिन खेतों की बोवाई हो गयी है, उनको डीजल की वजह से पानी नहीं मिल पा रहा है। जो हमारा क्षेत्र है, वह सदियों से बाढ़ से बहता रहा है । उसमें सरकार ने पिछले वर्ष बांध योजना शुरू की थी, लेकिन वह बीच में ही छोड़ दी गयी । भगड़वा, चिलौली बांध शुरू किया गया था, लेकिन वह अधूरा पड़ा है । सरजू और टेढ़ी नदी से सदियों से पानी बहता रहता है, बाढ़ आती रहती है, इसलिए यह बांध शुरू किया गया था। तीन साल पहले सरकार ने एक योजना बनाकर काम शुरू कर दिया। 20–21 लाख रु0 खर्च भी किया गया और उसके बाद काम को रोक

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

दिया गया। अब स्थिति यह है कि अगर सारा पानी इकट्ठा होकर निकलेगा, तो वह ज्यादा बहाव करेगा। और इस बांध को जब तक सरजू घाट तक नहीं मिलाया जायगा, तब तक इस क्षेत्र में हजारों हजार लोगों की समस्या का समाधान नहीं होगा और उसके साथ-साथ एक नहर का काम शुरू किया गया था, अब 4-5 साल से वह नहर बन रही है और वह नहर जो है सरजू नहर के नाम से उसमें 200 करोड़ का प्रोजेक्ट था, लेकिन वह काम पूरा नहीं किया गया, जिससे अब उसकी लागत 800 करोड़ रु0 की आ गयी। इस सूखे के जमाने में उसका काम नहीं के बराबर हो रहा है।

मान्यवर, नहर के साथ ड्रेनेज भी नहर विभाग को बनानी चाहिए, लेकिन उसका काम बिल्कुल जीरो पर है। मान्यवर, एक साथ ड्रेनेज का काम चूंकि नहीं शुरू किया गया, वह आगे पांच साल ड्रेनेज बनाने में लगा देंगे। मान्यवर, सूखा-राहत में जो थोड़ा-बहुत काम हो रहा है, वह ब्लाकों के माध्यम से हो रहा है। उसमें थोड़ा बहुत सड़कों का काम कराया गया है। जिस विभाग से सड़क निर्माण का काम होता है, किसानों से जमीन लेकर सड़क की पटाई की जाती है, लेकिन किसानों को कोई मुआवजा किसी विभाग द्वारा नहीं दिया जाता है। इससे सबसे ज्यादा किसान परेशान है। उसका खेत आप खोद ले रहे हैं, लेकिन उसका मुआवजा भी नहीं दे रहे हैं। ब्लाक रुदईडीह और कटरा बाजार में मैंने सूखा-राहत कार्य को स्वयं जाकर देखा है, उसमें जो सामाजिक वानिकी का काम दिखाया गया था, वह टोटल जीरो था और उसके साथ-साथ जो सड़कों का काम दिखाया गया, उसमें पुरानी सड़कों पर थोड़ी-थोड़ी मिट्टी डाल कर पूरी सड़क का भुगतान किया गया है और इसके साथ-साथ किसी भी मजदूर को अनाज नहीं दिया गया है। दोनों ब्लाकों से यह पता चला कि पूरे जनपद में इसमें भी खराब काम किये गये हैं। इसमें हमने स्पष्ट आरोप लगाया कि इसमें सरकार की और श्री वीर बहादुर सिंह जी की भागीदारी है। इस तरह से हमारे जनपद के पच्चीसों ब्लाक बी0 डी0 ओ0-अध्यक्ष, श्री कमला प्रसाद सिंह, बी0 डी0 ओ0 रुपईडीह हैं। वर्ष 1987 में ये रिटायर हो गये, लेकिन अपने कार्य-काल का इक्स-टेंशन इन्होंने सरकार से डायरेक्ट लिया और यह भी स्पष्ट आदेश लिया सरकार से कि इन्हें इसी रुपईडीह ब्लाक में ही रखा जाय। अब हमारा कहना है कि पचीसों ब्लाकों के सूखा-राहत को जो पैसा है, उसको यही अकेले कलेक्ट करते हैं। ये श्री कमला प्रसाद सिंह, बी0 डी0 ओ0 लाकर श्री वीर बहादुर सिंह जी को देते हैं, जो कागज पर जाता है और झोले और बोरे में वापस आता है, वरना सरकार में दम हो, तो हमारे लगाये हुए आरोप सामाजिक वानिकी, निर्माण, आई0आर0डी0, कोआपरेटिव, डीजल बांध और जो है मजदूरों को कोई अनाज न देना आदि तमाम आरोपों की जांच करा लें।

(श्री अजीत सिंह सेठी के पुकारे जाने पर)

श्री जयदीप सिंह बरार–

मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। मान्यवर, बरेली मण्डल से पूरे सदन में किसी भी सदस्य को बोलने का मौका नहीं दिया गया। उसकी उपेक्षा तो शासन कर ही रहा है आप भी उपेक्षा कर रहे हैं दूसरी बात मान्यवर, माननीय नरेन्द्रपाल सिंह बरेली के विधेयक हैं। सदन की यह परम्परा है कि पहली बार जो माननीय सदस्य चुनकर आता है और वह सदन में कभी न बोला हो तो उसको सबसे पहले बोलने का मौका दिया जाता है।

श्री अजीत सिंह सेठी–

माननीय उपाध्यक्ष जी, मैं आपका आभारी हूं कि..

श्री पूरन सिंह माहरा–

मान्यवर, अगर यह इस सदन में बैठकर 3 साल नहीं बोले हैं तो व्यवस्था का प्रश्न उठाया यह तो अव्यवस्था करनी है इसके लिए आप और सदन थोड़े ही जिम्मेदार हैं कि कोई 3 साल तक नहीं बोला।

(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष–

आप बैठें।

(व्यवधान)

श्री राम शरण दास–

मान्यवर, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। मान्यवर, सरदार जी ने कहा था कि मैं सन्तुष्ट हूं मेरे यहां कोई सूखा नहीं है, वह उस दिन कहा था। जब सूखा ही इनके यहां नहीं है तो बोलने से क्या फायदा किसी और सदस्य को बुलवा दीजिए।

श्री उपाध्यक्ष–

अब कुछ पता लग गया होगा।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

मान्यवर, व्यवस्था का प्रश्न है। मान्यवर, यह आज सूखे पर चर्चा हो रही है कि गांव की फसल चौपट हुई है गांव की फसल क्यों चौपट हुई है इसका कारण सिंचाई के साधनों की कमी है तो मैं इस पर आपकी व्यवस्था चाहता हूं, कि जो

(इस समय 4 बजकर 26 मिनट पर अधिष्ठाता, श्री खान गुफरान जाहिदी पीठासीन हुए।)

लोग नगर से चुने हुए हैं, शहर से आते हैं, जिनके चुनाव क्षेत्र में खेती नहीं होती है, ऐसे लोगों को सूखे पर बुलवाने से क्या फायदा जब लिपस्टिक और पाउडर की बात आयेगी तो ये लोग बोल लेंगे अभी तो सूखे की बात हो रही है। (व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

इसमें कई व्यवस्था नहीं है, लेकिन हर ऐसे माननीय सदस्य को प्राथमिकता दी है। (व्यवधान) वैसे हर व्यक्ति को अपने भाव प्रकट करने का मौका मिलाना चाहिए। (व्यवधान)

[*श्री अजीत सिंह सेठी–

माननीय उपाध्यक्ष जी, आपने, मुझे सूखाग्रस्त विषय पर बोलने का अवसर दिया है, मैं आपका आभारी हूं । इस सदन में जहां हाथी की आवाज को सुना जाता है तो वहां इसकी गरिमा यह भी है कि वह चीटी की फरियाद को ज्यादा सुनता है । मैं अल्पसंख्यक व्यक्ति हूं और वह भी सिख समुदाय का जो बहुत छोटा है परन्तु सूखाग्रस्त की पीड़ा हर व्यक्ति की है, हर क्षेत्र में है। उस पीड़ा को यदि मैं उठाना चाहता हूं तो हमारे माननीय सदस्यों को उसको सुनना ही चाहिए।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

मान्यवर, यह कहा जाता है कि सत्तारूढ़ दल भोग के अन्दर लिप्त है और उसके ऊपर यह इल्जाम लगाया ही जाता है तो जब कोई चीज इंसान के सामने आती है तो उसका वह उपयोग करता है । उसका समय बढ़ाने के लिए विरोधी दल का कार्य है कि वह अपनी आवाज से इसको संयम करने का आग्रह करे परन्तु मान्यवर, विरोधी दल अपने एक सूत्री वर्यक्रम में यह हुकूमत को बदले ला हटवाने में लगे हुए हैं जो सेवा का कार्य इस देश की व्यक्तियों ने विधायक लोगों को दिया उससे वह दूर जा रहे हैं इस कारण इस प्रदेश को दुख ज्यादा उत्पन्न होता है। यदि सूखाग्रस्त जैसी समस्या पर सत्तादल तथा विरोधी दल मिलकर कार्य करें तो देश प्रदेश की जनता को राहत प्राप्त हो सकती है।

मैं प्रदेश की सरकार तथा प्रशासन की सराहना करता हूं जिन्होंने इस सूखाग्रस्त के समय में सजग होकर कार्य किया, पेयजल की समस्या का निवारण करने के साथ ही इन्हीं दिनों के लिए सिंचाई के लिए बिजली 10 घंटे तक उपलब्ध कराना, खाद आदि का वितरण तथा कार्य के बदले अनाज की स्कीम में मजदूरी का कार्य देना यह ज्यादा अच्छा कार्य किया गया। जिससे सही मानों में जनपद स्तर पर लोगों को राहत मिली है मेरे क्षेत्र में पेयजल की समस्या के लिए हैण्डपम्प लगाये तथा तालाब खुदाई किया इसके अतिरिक्त निजी नलकूपों को चलाने में सहायता दी गयी और सही समय पर चलाये गये।

मैं इस शासन की प्रशंसा करता हूं कि इन्होंने इन दिनों में बिजली की अच्छी व्यवस्था की। मैं अपने एरिया के मानपाल सिंह जी जो मण्डलीय इंचार्ज हैं, उन्होंने जिस क्षमता से, एक मंत्री अपने स्थान पर न बैठे और तहसील वाइज काम करने के लिये जायं, तो ऐसे सूखे में यह बहुत ही महत्व की बात है। मैं सोचता हूं कि सूखे का जो प्रकोप था, उसमें हम विधान सभा के सब लोग मिलकर काम करते, इसकी जिम्मेदारी हम विधान सभा के लोगों की थी, लेकिन सूखाग्रस्त के आधार पर सोचा कि कुमुक निकाल दी जाय तो हमेशा यह जान लीजिये कि विचार ठीक नहीं होंगे तो परिणाम भी अच्छा नहीं होगा। आपके मन में कल्पना रहती है कि यह बात उठावें, अगर अपोजीशन का भी सहयोग होता तो शासन को कामयाबी मिलती । हुकूमत भी सेवा करते हुए मिलनी चाहिये। जो सेवा हम लोगों ने की, उसके आधार पर हम हुकूमत में हैं। यहां लोग शहरों में घूम आएंगे, आपका कोई विधायक बताए कि कितने विधायक अपने-अपने क्षेत्रों में घूमे हैं। हमारे यहां मुख्य मंत्री जी ने आदेश दिया तो सब लोग गांव-गांव में घूम रहे हैं। मैं इन शब्दों के साथ प्रशासन और शासन के कार्यों की प्रशंसा करता हूं और कहना चाहता हूं कि आज भी समय है कि हम सब लोग इकट्ठे होकर काम करें।

श्री बाबूराम यादव–

मान्यवर. क्या जो ज्यादा शोर मचाएगा, उसको समय देंगे ?

श्री अधिष्ठाता–

नहीं, ऐसी बात नहीं है।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

श्रीमन्, मैं आपका आभारी हूं कि आपने ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर मुझे भी अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया। श्रीमन्, सभी लोग एक बात को स्वीकार कर चुके हैं कि 100 वर्ष में इतना बड़ा सूखा कभी नहीं पड़ा। हालांकि हम लोगों के मानने के अनुसार उत्तर प्रदेश में सूखा नहीं पड़ना चाहिए था क्योंकि मानसून बंगाल की खाड़ी से

चलता है और वहां से उत्तर प्रदेश बहुत नजदीक है। लेकिन सूखा पड़ा क्यों, आपको ज्ञात होगा कि एक बार चाणक्य ने कहा कि जिस देश का राजा अनाचारी, दुराचारी अत्याचारी और व्यभिचारी हो जाता है, उस देश एवं प्रदेश की ऋतुएं और मौसम भी बदल जाते हैं ।

कांग्रेस पार्टी की सरकार जबसे सत्ता में आयी है, श्रीमन् और उत्तर प्रदेश की यह सरकार तो जबसे बनी है यह सरकार लाठी चार्ज, दमन पुलिस बल और गोली-काण्ड करने का अत्याचार प्रदेश पर इसने बराबर किया है और कई ऐसे सत्तारूढ़ दल के सदस्य हैं, मंत्री भी हैं जिन पर बलात्कार और व्यभिचार का आरोप भी लगा। श्रीमन्, इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि चाणक्य की यह बात सही हो गयी है कि यह लोग अत्याचारी, दुराचारी, व्यभिचारी हैं, इसलिए प्रदेश में भयंकर सूखा पड़ा हुआ है और ये सूखा इनकी देन है।

श्री अधिष्ठाता–

आपका दो मिनट का समय शेष रह गया है।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

श्रीमन्, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि यह जो सूखा पड़ा तो सूखे से राहत दिलाने का काम राज्य सरकार का है। हमारे मा0 मुख्य मंत्रीजी बोल रहे थे, बड़ा ढिंढोरा पीट रहे थे कि जिलों में बड़ा पैसा दिया गया है । हम लोग जिन जिले से आते हैं, उस जिले में कोई भी काम नहीं हो पा रहा है। हमारे बलिया के जिलाधिकारी सूखा राहत में कोई काम न कराकर केवल दो कामकिये हैं, एन0एस0सी0 जमा कराने का और नसबन्दी कराने का । अगर राहत का काम है तो एन0 एस0 सी0 जमा कराओं और दूसरा काम है तो नसबन्दी कराओं । इन्होंने उत्तर प्रदेश में धन का जो वितरण किया है, उनमें बलिया को केवल 43 लाख 81 हजार मिले हैं और बगल के जनपद गाजीपुर को इन्होंने दिया है 64 लाख 35 हजार और बलिया में एन0 एस0 सी0 जमा करने के लिये 18 करोड़ रुपया मंत्री जी ने लगाया है ।

श्री वीर बहादुर सिंह–

मैं एक चीज कहना चाहता हूं, कई मदों में पैसा गया है ।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

मान्यवर, कई मदों में पैसा आया है। एक तरफ सूखा है और दूसरी तरफ बाढ़ है। यह बाढ़ से प्रभावित गाजीपुर जिला है, जहां काफी नुकसान हुआ है, उसे दें परन्तु इससे अधिक नुकसान बलिया में हुआ है ।

श्री वीर बहादुर सिंह–

वहां वाटर लागिंग हुई थी, जो पैसा राहत कार्य के लिये है, वह उसी काम में लगेगा ।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

श्रीमन्, एन0 एस0 सी0 के जरिये वहां यह कहा गया कि 18 करोड़ रुपया इसके माध्यम से जमा करो। श्रीमन् राहत कार्य में इन्होंने केवल 45 लाख रुपया दिया। लेकिन जिलाधिकारी ने कहा कि हमको केवल 25 लाख रुपया ही दिया गया है। या तो यह मुख्यमंत्री जी गलत कहते हैं, या फिर वहां का जिलाधिकारी असत्य बोलता है कि हमको

केवल 25 लाख रुपया दिया गया है । मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि गोरखपुर में सूखा नहीं है फिर भी गोरखपुर में सूखा राहत के लिये सहायता दी जा रही है...

श्री वीर बहादुर सिंह–

मैं बताना चाहता हूं कि गोरखपुर में सूखा राहत काम नहीं हो रहा है।

श्री अधिष्ठाता–

श्री राम गोविन्द चौधरी अपनी बात जल्द पूरी करें।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

मान्यवर, इसी प्रकार इन्होंने बलिया जनपद को पीने के पानी के लिये केवल 9 लाख रुपया दिया है जबकि गोरखपुर को पेयजल के लिए 10 लाख रुपया दिया गया है । मैं कहना चाहता हूं कि जब गोरखपुर में सूखा नहीं है तो पैयजल की व्यवस्था गोरखपुर में क्यों हो रही है? मान्यवर, ट्यूबवेल जो लग रहे हैं, वह सबसे अधिक गोरखपुर में लग रहे हैं....

श्री वीर बहादुर सिंह–

मान्यवर, माननीय सदस्य जिन नलकूपों की बात कर रहे हैं यह तो सामान्य प्रक्रिया के तहत जो समस्या ग्रस्त इलाके हैं, उनको दिया गया है । वैसे भी आप जानते हैं कि गोरखपुर प्रदेश का सबसे बड़ा जिला है, जहां से 15 एम0 एल0 ए0 आते हैं, यदि इसी हिसाब से जोड़ लिया जाय । आबादी के हिसाब से इसका निर्धारण होता है ।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

श्रीमन्, गोरखपुर सबसे बड़ा जिला है और अगर गोरखपुर में 25–30–50 ट्यूबवेल लग रहे हैं तो कम से कम 10 ट्यूबवेल यहां बलिया में भी लगने चाहिये....

श्री अधिष्ठाता–

श्री संतोष चतुर्वेदी, मैंने आपको बुला लिया है इसलिए आप अपनी बात करें ।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

मान्यवर, आप मेरी बात सुन लें ।

श्री अधिष्ठाता–

चौधरी जी, आप बैठें, आप तो बहुत वरिष्ठ सदस्य हैं।

(घोर व्यवधान)

*श्री संतोष चतुर्वेदी एडवोकेट–

मान्यवर, मुझे बोलने का आपने मौका दिया, इसके लिये मैं आपका आभारी हूं और सरकार के कार्यों का मैं हृदय से आभार प्रकट करते हुए कहना चाहूंगा ...

(व्यवधान)

(श्री राम गोविन्द चौधरी जी अधिष्ठाता के बार-बार कहने पर भी अपनी बात कहते रहे ।)

(घोर व्यवधान)

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री अधिष्ठाता–

श्री राम गोविन्द चौधरी, आप बैठें ।

श्री संतोष चतुर्वेदी एडवोकेट–

सरकार ने जो कार्यक्रम और मानदंड स्थापित किये हैं, इसके लिये हमारी सरकार बहुत ही अधिक प्रशंसा की पात्र है। जहां तक सूखा के समय में पेयजल की समस्या का समाधान करने के लिए आपके स्तर से बहुत हैण्डपम्प लगाये गये हैं प्रदेश में इस सूखे पर पेयजल की समस्या का जो समाधान किया गया, वह एक बहुत ही उपयोगी कदम रहा है। मान्यवर, मैं दो बिन्दुओं की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । हमारे क्षेत्र में विश्व बैंक द्वारा जो नलकूप लगाये जा रहे हैं, उनका इनरजाइजेसन (ऊर्जीकरण) करना बहुत ही आवश्यक है, इसलिए मैं चाहूंगा कि इन नलकूपों का ऊर्जीकरण कर दिया जाय । दूसरा मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारी सरकार ने जो दीर्घकालीन योजनायें बनायी हैं, उसके तहत हमारे यहां ब्लाक छिबरामऊ, तालक राम व सौंरिक में एक-एक कलस्टर और दिया जाय । एक बात और सरकार के संज्ञान में लाना चाहता हूं कि वाटर लेवल इतना गिर गया है कि फ्री बोरिंग हेतु जो 5 हार्स पावर की क्षमता के इंजन दिये गये थे, अब उनकी जगह पर साढ़े सात हार्स पावर तक के इंजन दिये जायं ताकि पानी की समस्या का समाधान हो सके ।

एक बात मान्यवर, मैं और कहना चाहता हूं कि इस सूखे के कारण किसानों की रीढ़ टूट गई है। छिबरामऊ तहसील में आलू का उत्पादन काफी होता है, यह आपके संज्ञान में भी है। गत कई वर्षों से झुलसा रोग से किसान काफी पीड़ित था किन्तु माननीय कृषि मंत्री जी के कुशल नेतृत्व में झुलसा रोग पर काफी नियंत्रण पा लिया गया है और इस बार यह रोग कम है, फिर भी किसान की रीढ़ टूट गई है। हमारे छिबरामऊ के दीवानी के वादकारी तहसील कन्नौज में स्थित मुन्सिफ न्यायालय में न्याय के लिए जाते हैं। आज जनता के दबाव में हमारे तहसील के सारे अधिवक्ताओं ने निश्चय किया है कि वह 16 दिसम्बर से न्यायालय का बहिष्कार करेंगे । इसलिए मेरी मांग है कि वर्ष 1981 से जो दीवानी न्यायालय का भवन बनकर पूर्ण हो चुका है, उसमें इसे तुरन्त स्थानान्तरित कर दिया जाय । इसमें केवल विद्युतीकरण हेतु डेढ़ लाख रुपये खर्च होंगे ।

श्री राजित प्रसाद यादव–

मान्यवर, आपने मुझे सूखे की चर्चा पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मान्यवर, विशेषरूप से यह सदन सूखे पर चर्चा के लिए बुलाया गया था, परन्तु कुछ परिस्थितियां ऐसी हो गईं जिसकी वजह से सूखे की चर्चा में कुछ व्यवधान हो गया । मान्यवर, पूरे प्रदेश में भयंकर सूखे की स्थिति है और सूखे पर यहां चर्चा चल रही है, लेकिन एक बात मैं कहना चाहता हूं कि कहीं भयंकर सूखा रहा तो कहीं बाढ़ रही और वर्षा के साथ तेज हवा से भी फसल को बहुत नुकसान हुआ है । इस प्रकार किसानों पर तिहरी मार पड़ी । आज सूखा, बाढ़ व तेज हवा की वजह से किसान तबाही के कगार पर पहुंच गया है। जहां तक सरकार की ओर से सूखा राहत के कार्य किये जा रहे हैं, वह सिर्फ अखबार, रेडियो व टेलीविजन पर दिखाई दे रहा है। गांवों में सूखा राहत के

नाम पर सरकार की ओर से कोई कार्य नहीं किया गया है और प्रदेश में कोहराम मचा हुआ है। सरकार की ओर से जो आश्वासन दिया गया, जो बातें बतायी गयी हैं, वह सच्चाई पर आधारित नहीं है।

मान्यवर, मैं जब गांवों में जाता हूं, क्षेत्र में घूमता हूं, तो यह देखता हूं कि बिल्कुल सूखे की स्थिति में सरकार की ओर से कोई काम नहीं किया गया है। सिर्फ एक काम किया गया है वह यह कि सरकार के साथ लगे हुए कार्यकर्ता, ठेकेदार के रूप में काम करके, जनता की गाढ़ी कमाई को सिर्फ लूटने का काम कर रहे हैं और कोई कार्य जनता की राहत के लिए नहीं हो रहा है। मान्यवर, मैं आपका ध्यान अपने विधान सभा क्षेत्र की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं। वहां लिफ्ट कैनाल और ट्यूबवेल नहीं चल रहे हैं।

(श्री दीप नारायण एवं अन्य कई सदस्यों के खड़े होने पर)

श्री अधिष्ठाता–

अभी आप लोग बैठें, अवसर दिया जायेगा। माननीय सदस्य अपनी बात समाप्त करें।

श्री राजित प्रसाद यादव–

मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि इस सूखे की स्थिति में वहां ट्यूबवेल चलाये जायं, लिफ्ट कैनाल चलायी जायं, जिससे सूखे की स्थिति का मुकाबला किया जा सके, जनता को कुछ राहत मिल सके। मान्यवर, मेरा विधान सभा क्षेत्र सैदपुर दो जिलों में पड़ता है – गाजीपुर और बनारस में। वहां चार लिफ्ट कैनाल पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं दे रही हैं।

श्री अधिष्ठाता–

माननीय सदस्य अब अपनी बात समाप्त करें। मैं माननीय श्री दीप नारायण, जो जनपद आजमगढ़ के माननीय सदस्य हैं, उनको बुला रहा हूं।

श्री दीप नारायण–

माननीय अधिष्ठाता महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे इस सूखे की चर्चा में बोलने का मौका दिया।

(व्यवधान)

श्री राजित प्रसाद यादव–

मान्यवर, मुझे एक मिनट और दें।

श्री अधिष्ठाता–

अब आप बैठें, दूसरे माननीय सदस्य खड़े हो गये हैं।

श्री राजित प्रसाद यादव–

माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा कि इतना पानी उपलब्ध कराया जा रहा है, जिससे कोई भी कृषि योग्य भूमि असिंचित नहीं है।

श्री दीप नारायण–

मान्यवर, मैं जनपद आजमगढ़ से चुनकर आया हूं।

(व्यवधान)

श्री जयदीप सिंह बरार–

मान्यवर, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है । आप बरेली मण्डल के किसी सदस्य को नहीं सुन रहे हैं। क्या वह प्रदेश का हिस्सा नहीं है।

श्री अधिष्ठाता–

आप बैठें, यह कोई बात नहीं है। माननीय राजित प्रसाद जी आप भी बैठ जायं, मैंने आपको पूरा-पूरा अवसर दे दिया । अब आजमगढ़ के माननीय सदस्य को बुला लिया है।

श्री राजित प्रसाद यादव–

मान्यवर, मैं विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में स्थित लिफ्ट कनाल तेंतारपुर प्रथम, द्वितीय तथा नेवादा पर्याप्त पानी नहीं दे रही है। लिफ्ट कनाल को चलवाया जाय, पूरी-पूरी बिजली वहां दी जाय, ताकि किसान सिंचाई कर सकें और उन्हें राहत मिल सके ।

श्री अधिष्ठाता–

माननीय राजित जी, अब आप बैठ जायं ।

श्री जयदीप सिंह बरार–

माननीय अधिष्ठाता जी, आप बरेली मण्डल के किसी सदस्य को नहीं सुन रहे हैं, क्या वह प्रदेश का हिस्सा नहीं है ?

श्री अधिष्ठाता–

आजमगढ़ के माननीय सदस्य को मैंने बुला लिया है, वह अपनी बात कह रहे हैं, आप सब लोग बैठें ।

(व्यवधान)

श्री जयदीप सिंह बरार–

मान्यवर, यह कोई बात नहीं है, आप बरेली मण्डल के किसी सदस्य की नहीं सुनें ।

श्री अधिष्ठाता–

आप किस नियम के तहत व्यवस्था उठा रहे हैं, बरार साहब ।

श्री जयदीप सिंह बरार–

मान्यवर, आप बरेली मण्डल के या बरेली जनपद के किसी माननीय सदस्य को सुनें । क्या वह इस प्रदेश का हिस्सा नहीं है ?

श्री अधिष्ठाता–

यह कोई व्यवस्था का सवाल नहीं है । यह मेरे बिल्कुल विवेक की बात है मेरी आंख जहां-जहां जायेगी, मैं उसको बुला लूंगा । आप बैठें ।

श्री जयदीप सिंह बरार–

मान्यवर, बरेली मण्डल के इतने विधायक बराबर खड़े हो रहे हैं आप किसी

श्री अधिष्ठाता–

मैंने माननीय सदस्य आजमगढ़ को बुला लिया है, वही बोलेंगे । कोई निवेदन की बात नहीं है। यह नहीं है कि आप को नहीं बुलाना है, आपको भी बुला सकता हूं । मैं आपकी व्यवस्था को अस्वीकार कर रहा हूं, बरार साहब बैठें ।

श्री जयदीप सिंह बरार–

आप बरेली मण्डल के किसी सदस्य को सुन लें।

(व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

ठीक है आगे कोई खड़ा होगा, तो उसे भी अवसर दिया जायेगा ।

श्री दीप नारायण–

मान्यवर, आपने सूखे पर चर्चा करने का अवसर दिया ।

श्री मैनेजर सिंह–

मान्यवर, यह आपका विवेक है कि आप जिसे चाहें बुलायें । आपने एक माननीय सदस्य को बुला लिया है, उसे आप सुन लें, उनका भाषण होने दें, उसके बाद बरेली मण्डल के किसी माननीय सदस्य को बुला लें ।

श्री अधिष्ठाता–

ठीक है ।

(श्री जयदीप सिंह बरार द्वारा बिना अनुमति खड़े होकर बोलने का प्रयत्न करने से घोर व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

माननीय बरार जी, अब आप बैठें ।

श्री दीप नारायण–

मान्यवर, मैं आपका आभारी हूं कि सूखे पर चर्चा में मुझे बोलने का अवसर दिया। हमारे यहां आजमगढ़ में 29 ब्लाक और 7 तहसीलें हैं। अभी तक आपने सूखे पर चर्चा सुनी है, लेकिन आजमगढ़ एसा जिला है, जहां सूखे के साथ-साथ बाढ़ का भी प्रभाव पड़ा है। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि सम्पूर्ण आजमगढ़ में खरीफ की फसल, 15 से 20 प्रतिशत बोई गयी, वह हो भी नहीं पायी कि तब तक बाढ़ का प्रकोप हो गया और सारी की सारी फसल बरबाद हो गयी । सूखे में मात्र 15-20 प्रतिशत धान की रोपाई का काम हुआ है और वह भी तुरन्त बाढ़ आ जाने के कारण बरबाद हो गया इसलिये किसान सूखे और बाढ़ दोनों से परेशान है। लालगंज तहसील की 60 प्रतिशत जमीन ऊसर है, जिसमें मेहनगर में 50 प्रतिशत से ज्यादा ऊसर है, फूलपुर तहसील में भी काफी ऊसर है। सूखे के समय सरकारी ट्यूबवैल खराब थे, नहरों में न तो पानी था, और बिजली भी उस समय बहुत कम मिलती थी, जिससे किसानों को कोई राहत मिलना सम्भव नहीं था । सारी फसल सूखकर बरबाद हो गयी । जो बची थी वह बाढ़ से डूब गयी, नतीजा यह हुआ कि सौ प्रतिशत किसान भुखमरी का शिकार हो गये यही नहीं बाढ़ के आने से हजारों मकान गिर गये हैं उसमें से मात्र 10 से 12 प्रतिशत को मकान बनाने की सुविधा मिल सकी है, शेष सबको अभी तक यह सुविधा नहीं दी जा सकी

इसके साथ ही साथ माननीय मुख्य मंत्री जी को मैं बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने आजमगढ़ जिले को विभिन्न मदों में काफी पैसा दिया है इसमें दो राय नहीं है, लेकिन इतनी बड़ी आबादी के लिये वह पैसा कम है। इसलिये मेरा निवेदन है कि आजमगढ़ को सूखे और बाढ़ दोनों को देखते हुए और भी पैसा देने की कृपा करें तथा किसानों का सम्पूर्ण लगान माफ किया जाय, सारे ट्यूबवैल्स को फिर से ठीक कराया जाय, प्रत्येक हरिजन बस्ती में कम से कम 10 घरों के बीच में एक हैण्डपम्प पानी पीने के लिये लगाया जाय। पढ़ने वाले बच्चों की फीस माफ कर दी जाय तथा गरीबों को काम देने के दृष्टिकोण से प्रत्येक गांव को सड़क से जोड़ा जाय ताकि उनको रोजी-रोटी का मौका मिल सके। ठेकमा बाजार में एक जल निगम की तरफ से ट्यूबवैल और पानी की टंकी लगवायी जाय ताकि उस बाजार के लोगों को पीने का पानी मिल सके तथा वृद्धा विधवा और विकलांग को पेन्शन दी जाय और लालगंज तहसील को बाढ़ से बचाने के लिये मंगई, बेसो और गांगी इन तीनों नदियों में पानी जल्द भर जाता है और बाढ़ जल्दी हटती नहीं है। इसके लिये इसका मुहाना 20-20 कि0मी0 पूर्व की तरफ से खुदवाया जाय ताकि पानी जल्द निकाल सके और बाढ़ का आना सदैव के लिये खत्म हो जाय।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपका आभारी हूं कि आपने बोलने का अवसर दिया और साथ ही साथ माननीय मुख्यमंत्री जी को सूखे के इस अवसर पर प्रदेश में किये गये कार्यों के लिये बधाई देता हूं।

(श्री अधिष्ठाता द्वारा श्री गोपाल दास यादव का नाम पुकारा गया।)

(घोर व्यवधान के मध्य)

स्व0 चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा लगाये जाने के सम्बन्ध में लिये गये निर्णय की जानकारी की मांग विषयक व्यवस्था का प्रश्न

श्री किरन पाल सिंह–

मान्यवर, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। कि जो बुलन्दशहर में चौधरी साहब की प्रतिमा को लगाने पर विवाद खड़ा कर दिया गया है हमारे भाइयों ने तो उस पर सदन में 4 बजे सरकार की ओर से निर्णय लिये जाने की बात कही गयी थी। अब पांच बज रहे हैं लेकिन अभी तक सरकार की तरफ से चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा चौराहे पर लगाये जाने के संबंध में कोई निर्णय नहीं सुनाया गया है।

श्री अधिष्ठाता–

अभी इसका विषय नहीं है।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री अम्मार रिजवी)–

इसमें यह तय हुआ है कि यह सारा मामला अध्यक्ष जी वहां के अधिकारियों को बुला करके निर्णय करेंगे कि क्या स्थिति है, कहां पर लगाने के लिये फैसला होना चाहिये। यह इस संबंध में निर्णय लिया गया है।

श्री अधिष्ठाता–

जो सूचना माननीय संसदीय कार्य मंत्री ने दी है .....

(व्यवधान)

श्री किरन पाल सिंह–

या तो सरकार जबाब दे यदि उसमें साहस हो कि चौधरी साहब की प्रतिमा को नहीं लगाने देंगे या यह कहे सदन में कि हमने निर्णय ले लिया है, प्रतिमा लगायी जायेगी। यह विषय सदन में उठाया गया है और इसका निर्णय भी सदन में आना चाहिये क्योंकि चार बजे तक के लिये निर्णय सुरक्षित किया गया था, अब चार क्या पांच भी बज रहे हैं।

(व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

मा0 किरनपाल जी, उधर के भी मा0 सदस्य खड़े हुए हैं मा सोलंकी जी भी खड़े हुए हैं। अभी मा0 संसदीय कार्य मंत्री जी ने बताया कि ऐसा-ऐसा निर्णय लिया गया है कि माननीय अध्यक्ष जी अधिकारियों को बुला करके निर्णय करेंगे।

(व्यवधान)

आप अपनी ही बात कहेंगे या मेरी बात को भी सुनेंगे ? माननीय बारी साहेब आप बैठिये।

(घोर व्यवधान)

श्री राजेन्द्र सिंह सोलंकी–

[x x x]

(घोर व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

जो कोई हमारी अनुमति के बगैर बोलेगा, वह लिखा नहीं जायेगा। जो हमारी अनुमति के बगैर बोल रहे हैं, वह लिखा नहीं जायेगा।

(व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

यहां से निर्णय किसी चीज के बारे में जब तक कि दोनों पक्ष को सुन न लिया जाय तब तक इस सीट से कोई निर्णय नहीं होगा, यही परम्परा रही है।

(व्यवधान)

श्री किरन पाल सिंह–

चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा लगेगी या नहीं, इस बात की घोषणा सरकार आज ही करे।

(व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता–

आप लोग बैठें। एक-एक आदमी बोले। तो बात समझ में आये।

(व्यवधान)

श्री फजलुल बारी–

मान्यवर, मैं एक सुझाव देना चाहता हूं.....

(व्यवधान)

(श्री विजय सिंह राना, श्री अनुग्रह नारायण सिंह, श्री किरन पाल सिंह आदि विपक्षी सदस्य अध्यक्ष पीठ की ओर बढ़ने का प्रयास करने लगे जिससे सदन में घोर व्यवधान उत्पन्न हो गया।)

नोटः–[xx] यह अंश श्री अधिष्ठाता के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया।

श्री अधिष्ठाता–

माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, ...

(घोर व्यवधान)

सदन को अनिश्चित काल के लिये स्थगित किये जाने का प्रस्ताव

संसदीय कार्य मंत्री (श्री अम्मार रिजवी)–

मान्यवर, मैं प्रस्ताव करता हूं कि यह सदन अनिश्चित काल के लिये स्थगित किया जाये ।

श्री अधिष्ठाता–

प्रश्न यह है कि यह सदन अनिश्चित काल के लिये स्थगित किया जाये। जो माननीय सदस्य पक्ष में हो वे हां कहें और जो विरोध में हो वे न कहें।

(प्रश्न उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ)

श्री अधिष्ठाता–

अब हम अनिश्चित काल के लिये उठते हैं।

(इसके बाद सदन सायंकाल 5 बजकर 2 मिनट पर अनिश्चित काल तक के लिये स्थगित हो गया।)

भाल चन्द्र शुक्ल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

लखनऊः
5 जनवरी, 1988

उत्तर प्रदेश विधान सभा

फो० एस० यू० फो०–एल० 317 विधान सभा (579) 1988–813 ।